राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

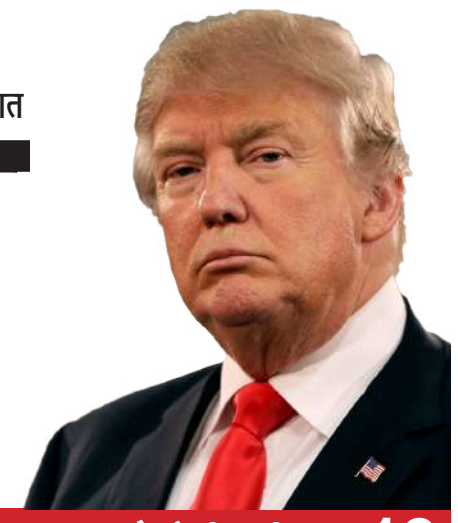

11 इस साल देश भर में 1,000 खेलो इंडिया केंद्र खोले जाएंगे ...

भारतीय मूल की जज के सामने पेश हुए डोनाल्ड ट्रंप, कहा- मैं दोषी नहीं हूं... 12

वर्ष : 11 | अंक : 86 | पटना, शनिवार, 05 अगस्त, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 34°C

न्यूनतम तापमान 28.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

मुंबई में 31 अगस्त और 1 सितंबर को हो सकती है विपक्षी गठबंधन इंडिया की अगली बैठक

प्रात : किरण

नई दिल्ली। विपक्ष के 26 दलों के गठबंधन इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) की अगली बैठक मुंबई में 31 अगस्त और एक सितंबर को हो सकती है। सूत्रों ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। पहले यह बैठक अगस्त के आखिरी सप्ताह में होनी थी, लेकिन कुछ नेताओं ने अपने व्यस्त कार्यक्रमों का हवाला देते हुए उपलब्ध होने में असमर्थता जताई। विपक्षी गठबंधन के एक वरिष्ठ नेता ने बताया, हमारे गठबंधन की अगली बैठक मुंबई में 31 अगस्त और एक सितंबर को होगी। 31 अगस्त को विपक्षी नेताओं के लिए रात्रिभोज रखा गया है। एक सितंबर को दिन में औपचारिक बैठक होगी और फिर शाम के समय संयुक्त संवाददाता सम्मेलन होगा। सूत्रों ने बताया कि यह बैठक पवई इलाके के एक होटल में होनी है। ऐसा पहली बार होगा कि इंडिया के घटक दलों की बैठक ऐसे किसी राज्य में होने वाली है, जहां इनमें से कोई भी पार्टी सत्ता में नहीं है।

विपक्षी दलों की पहली बैठक 23 जून को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उनकी पार्टी जनता दल (यूनाइटेड) द्वारा पटना में आयोजित की गई थी। दूसरी बैठक 17-18 जुलाई को बेंगलुरु में आयोजित की गई थी और इसकी मेजबानी कर्नाटक

में सत्तारूढ़ कांग्रेस ने की थी। मुंबई की बैठक इस मायने में भी महत्वपूर्ण होगी कि उसमें इस गठबंधन के किसी संयोजक के नाम पर फैसला हो सकता है और समन्वय समिति का भी गठन हो सकता है। इसके साथ ही इसी बैठक में 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए सीट के तालमेल के संदर्भ में भी कोई रूपरेखा तैयार की जा सकती है। विपक्ष के 26 दलों ने अगले लोकसभा चुनाव के लिए अपनी चुनावी बिसात बिछाने का आगाज करते हुए गत 18 जुलाई को इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसिव अलायंस (इंडिया) नाम से नए गठबंधन की घोषणा की थी। उन्होंने कहा था कि यह इंडिया 2024 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पराजित करेगा। इस बैठक में कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, राकांपा प्रमुख शरद पवार, तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख एवं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, बिहार के मुख्यमंत्री एवं जनता दल (यू) के शीर्ष नेता नीतीश कुमार, द्रमुक नेता एवं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन, राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव, शिवसेना (यूबीटी) के प्रमुख उद्धव ठाकरे, झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता एवं झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, आम आदमी पार्टी के नेता एवं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव और कुछ अन्य नेता शामिल हुए थे।

मानहानि केस में राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से राहत, सजा पर रोक; बहाल हो सकती है सांसदी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को मोदी सरनेम टिप्पणी पर आपराधिक मानहानि मामले में सुप्रीम कोर्ट से फौरी राहत मिल गई है। कोर्ट ने शुक्रवार को एक अंतरिम आदेश में कांग्रेस नेता की सजा पर फिलहाल रोक लगा दी। इससे पहले गुजरात हाईकोर्ट ने मोदी उपनाम टिप्पणी पर मानहानि मामले में उनकी सजा पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। ऐसे में बड़ी बात यह भी यह भी है कि सुप्रीम कोर्ट से राहत मिलने के बाद राहुल लोकसभा सदस्यता बहाल हो सकती है।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के मुताबिक, कोर्ट की टिप्पणी के अलावा ट्रायल जज द्वारा अधिकतम सजा देने का कोई विशेष कारण नहीं बताया गया। यदि सजा एक दिन भी कम होती तो अयोग्यता से संबंधित प्रावधान लागू नहीं होता। ट्रायल जज से कम से कम यह अपेक्षा की जाती है कि वह गैर संज्ञेय अपराध के लिए अधिकतम सजा देने के कारण बताएं। हालांकि, अपीलीय अदालत और हाईकोर्ट ने दोषसिद्धि पर रोक लगाने से इनकार करने में काफी पन्ने खर्च किए हैं, लेकिन इन पहलुओं पर ध्यान नहीं दिया गया है। ऐसे मामलों में सार्वजनिक व्यक्ति से कुछ हद तक सावधानी बरतने की अपेक्षा की जाती है। आदेश के मुताबिक, ट्रायल कोर्ट के आदेश के प्रभाव व्यापक हैं। इससे न केवल राहुल गांधी का सार्वजनिक जीवन में बने रहने का अधिकार प्रभावित हुआ, बल्कि उन्हें चुनने वाले मतदाताओं का अधिकार भी प्रभावित

हुआ। इन बातों को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से यह कि ट्रायल जज द्वारा अधिकतम सजा के लिए कोई कारण नहीं दिया गया है जिससे अयोग्यता हुई है, कार्यवाही के लंबित रहने तक दोषसिद्धि के आदेश पर रोक लगाने की जरूरत है। अपील के लंबित रहने से अपीलीय अदालत को कानून के अनुसार निर्णय लेने में कोई दिक्कत नहीं होगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि बयान अच्छे मूड में नहीं होते हैं। सार्वजनिक जीवन में व्यक्ति से सार्वजनिक भाषण देते समय सावधानी बरतने की उम्मीद की जाती है। कोर्ट ने अवमानना याचिका में राहुल के हलफनामे को स्वीकार करते हुए कहा कि उन्हें अधिक सावधान रहना चाहिए था।

राहुल के वकील की दलील : इससे पहले राहुल गांधी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने बहस शुरू की। सुप्रीम कोर्ट ने सिंघवी से कहा कि उन्हें सजा पर रोक के लिए आज एक असाधारण मामला बनाना होगा। राहुल गांधी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि शिकायतकर्ता पूर्णेश मोदी का मूल उपनाम मोदी नहीं है और उन्होंने बाद में यह उपनाम अपनाया। राहुल ने अपने भाषण के दौरान जिन लोगों का नाम लिया था, उनमें से एक ने भी मुकदमा नहीं किया। यह 13 करोड़ लोगों का एक छोटा सा समुदाय है और इसमें कोई एकरूपता या समानता नहीं है। सिंघवी ने कहा कि इस समुदाय में केवल वही लोग पद्दीड़ित हैं जो भाजपा के पदाधिकारी हैं और मुकदमा कर रहे हैं वरिष्ठ वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि जज इसे नैतिक अधमता से जुड़ा गंभीर अपराध मानते हैं। यह गैर-संज्ञेय और जमानती अपराध है। मामले में कोई अपहरण, बलात्कार या हत्या नहीं की गई है। यह नैतिक अधमता से जुड़ा अपराध कैसे बन सकता है? उन्होंने आगे कहा कि लोकतंत्र में हम असहमति रखते हैं। राहुल गांधी कोई कट्टर अपराधी नहीं हैं। राहुल गांधी पहले ही संसद के दो सत्रों से दूर रह चुके हैं।

पूर्णेश मोदी के वकील की दलील: मोदी सरनेम टिप्पणी मामले में शिकायतकर्ता पूर्णेश मोदी की ओर से पेश वरिष्ठ वकील महेश जेठमलानी ने तर्क दिया कि पूरा भाषण 50 मिनट से अधिक समय का था और भारत के चुनाव आयोग के रिकॉर्ड में भाषण के ढेर सारे सबूत और क्लिपिंग संलग्न हैं। जेठमलानी का कहना है कि राहुल गांधी ने द्वेषवश एक पूरे वर्ग को बदनाम किया है। सुप्रीम कोर्ट ने पहले राहुल गांधी को आगाह किया था, जब उन्होंने कहा था कि राफेल मामले में शीर्ष अदालत ने प्रधानमंत्री को दोषी ठहराया है। उन्होंने कहा कि उनके आचरण में कोई बदलाव नहीं आया है।

सुप्रीम कोर्ट ने पूछा- अधिकतम सजा क्यों दी गई?

सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गुजरात हाईकोर्ट का फैसला काफी दिलचस्प है। राहुल गांधी की सजा कम भी हो सकती थी। वह जानना चाहता है कि अधिकतम सजा क्यों दी गई? कोर्ट का मानना है कि अगर जज ने एक साल 11 महीने की सजा दी होती तो राहुल गांधी अयोग्य नहीं ठहराए जाते।

लोकसभा ने भारतीय प्रबंधन संस्थान (संशोधन) विधेयक-2023 पारित किया

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। लोकसभा ने शुक्रवार को भारतीय प्रबंधन संस्थान (संशोधन) विधेयक- 2023 विपक्ष की नारेबाजी के बीच ध्वनिमत से पारित कर दिया। यह विधेयक आईआईएम संस्थानों की प्रबंधन जवाबदेही भारत के राष्ट्रपति को सौंपता है। शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने विधेयक पर बहस का जवाब देते हुए कहा कि सरकार का आईआईएम की स्वायत्तता में हस्तक्षेप करने का कोई इरादा नहीं है। संस्थानों की प्रबंधन जवाबदेही अब राष्ट्रपति को सौंपी गई है और अकादमिक जवाबदेही संस्थानों के पास रहेगी। विधेयक में भारत के राष्ट्रपति को सभी आईआईएम के लिए ह्यविजिटरह्न नियुक्त करने के प्रस्ताव है। राष्ट्रपति के पास उनके कामकाज का ऑडिट करने, जांच का आदेश देने और निदेशकों को नियुक्त करने के साथ-साथ हटाने की शक्तियां होंगी। प्रधान ने 28 जुलाई को यह विधेयक लोकसभा में पेश किया था। विधेयक में आईआईएम अधिनियम 2017 में संशोधन का प्रस्ताव है, जिसमें आईआईएम में राष्ट्रपति की शक्तियों में वृद्धि शामिल है। संशोधन देशभर के 20 आईआईएम को राष्ट्रीय महत्व के संस्थान घोषित करता है।

चंद्रयान-3 ने चंद्रमा की दो तिहाई दूरी तय की, आज किया जाएगा कक्षा में स्थापित

नई दिल्ली/एजेंसी। चंद्रयान-3 को चंद्रमा की परिधि में पहुंचने में अब केवल 24 घंटे का ही वक्त लगेगा। अंतरिक्ष यान ने चंद्रमा की लगभग दो-तिहाई दूरी तय कर ली है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने शुक्रवार को ट्वीट करके कहा कि चंद्रयान-3 ने दो तिहाई दूरी पूरी कर ली है। इस मिशन की शुरूआत में ही चंद्रमा की परिधि में पहुंचने का समय 5 अगस्त के लिए निर्धारित किया गया है। कल परिधि के पास पहुंचने पर (एलओआई) अर्थात लूनर ऑफरेशन इंजेक्शन शुरू किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने चंद्रयान-3 मिशन को 14 जुलाई को दोपहर 2 बजकर 35 मिनट पर लांच किया था। चंद्रयान-3 कल चंद्रमा की कक्षा में पहुंचने के लगभग 40 दिन बाद 24 अगस्त को चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग कर सकता है। मौजूदा समय में चंद्रयान चंद्रमा की कक्षा में स्थापित किए जाने से कुछ ही दूरी पर है।

संसद भले ही उन्हें राहत दे दे, लेकिन राहुल पर खतरा बना हुआ है: भाजपा

नई दिल्ली। मानहानि के एक मामले में राहुल गांधी की दोषसिद्धि पर उच्चतम न्यायालय द्वारा रोक लगाए जाने के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने शुक्रवार को कहा कि संसद ह्यअभी कुछ हद तक कुछ कर सकती है। लेकिन कांग्रेस नेता पर अब भी खतरा बना हुआ है, क्योंकि उनके खिलाफ कई अन्य आपराधिक मानहानि के मामले लंबित हैं। राहुल गांधी को बड़ी राहत देते हुए शीर्ष अदालत ने 2019 के मानहानि मामले में उनकी दोषसिद्धि पर रोक लगा दी। इस फैसले ने उनकी लोकसभा सदस्यता बहाल करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। लोकसभा अध्यक्ष अब राहुल की सदस्यता को बहाल कर सकते हैं या फिर गांधी सांसद के रूप में अपनी सदस्यता बहाल करने की मांग कर सकते हैं। इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया देते हुए भाजपा के सूचना और प्रौद्योगिकी विभाग के प्रमुख अमित मालवीय ने एक ट्वीट में कहा, बकरे की अम्मा कब तक खैर मनाएगी? मालवीय ने कहा कि गांधी के खिलाफ कई अन्य आपराधिक मानहानि के मामले लंबित हैं, जिनमें स्वतंत्रता सेनानी के परिवार द्वारा दायर ह्यआदरणीय वीर सावरकर पर कीचड़ उछालने का हाई प्रोफाइल मामला भी शामिल है।

संक्षिप्त खबरें

गृह सचिव अजय कुमार भल्ला को एक साल का सेवा विस्तार मिला

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह सचिव अजय कुमार भल्ला को शुक्रवार को 22 अगस्त, 2024 तक एक साल का सेवा विस्तार दिया गया। कार्मिक मंत्रालय के एक आदेश से यह जानकारी मिली। यह इस पद पर उनका चौथा सेवा विस्तार है। असम-मेघालय कैडर के 1984 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारी भल्ला को अगस्त 2019 में गृह सचिव नियुक्त किया गया था। भल्ला को 60 वर्ष की उम्र पूरी होने पर नवंबर 2020 में सेवानिवृत्त होना था। उनका कार्यकाल पहली बार 17 अक्टूबर, 2020 को 22 अगस्त, 2021 तक बढ़ाया गया था। भल्ला का कार्यकाल 2021 और 2022 में एक-एक साल के लिए बढ़ाया गया था। आदेश में कहा गया है कि कैबिनेट की नियुक्ति समिति ने भल्ला की सेवा को 22 अगस्त, 2023 से आगे एक साल की अवधि के लिए यानी 22 अगस्त, 2024 तक बढ़ाने को मंजूरी दे दी है।

श्रीनगर में बड़े हमले की साजिश नाकाम

श्रीनगर। श्रीनगर पुलिस की एक टीम ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा और टीआरएफ के तीन आतंकियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इन तीनों को श्रीनगर के नाटिपोरा इलाके से गिरफ्तार किया है। दरअसल पुलिस को खुफिया जानकारी मिली थी। इस बाबत पुलिस ने एक्शन लेते हुए एक छोटी टीम को हरनबल नाटिपोर में तैनात किया। एक चेकप्वाइट पर पुलिस ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन से जुड़े तीन आतंकवादियों का घेराव करते हुए उन्हें गिरफ्तार कर लिया। इन आतंकियों की पहचान इमरान अहमद नजर, वसीम अहमद मुट्टा, वकील अहमद भट्ट के रूप में हुई है। जांच में पता चला है कि तीनों आतंकवादी श्रीनगर शहर में आतंकवादी गतिविधियों को अंजाम देने के लिए टीआरएफ से जुड़े और टीआरएफ के सक्रिय आतंकवादियों से विस्फोटक पदार्थ और गोला बारूद ले रहे थे। पुलिस को मिली सूचना के बाद जिस तरह पुलिस ने इन आतंकियों के खिलाफ एक्शन लिया है उससे एक बड़ा आतंकी खतरा टल गया है। आतंकवादियों को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस ने चानापोरा थाने में धारा 3/4 विस्फोटक अधिनियम, 7/25 शस्त्र अधिनियम, 18, 23, 39 यूएपीए अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया है और पुलिस इस बाबत जांच में जुट चुकी है।

विदेशों से पार्थिव शरीर के लिए ऑनलाइन सुविधा

नई दिल्ली। विदेशों में प्राण त्यागने वाले भारतीय नागरिकों के पार्थिव शरीर को स्वदेश लाने की प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए सरकार ने ई. केयर पोर्टल की शुरूआत की है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री मनसुख मांडविया शुक्रवार को इस पोर्टल की शुरूआत की। इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री प्रोफेसर एसपी सिंह बघेल और डॉ. प्रवीण भारती पवार तथा तमिलनाडु के स्वास्थ्य मंत्री श्री एम सुब्रमण्यम मौजूद रहे। श्री मांडविया ने कहा कि इससे मानव अवशेषों के परिवहन की प्रक्रिया सुव्यवस्थित और तेज होगी। प्रो. बघेल ने कहा कि जब किसी व्यक्ति की दूसरे देश में मृत्यु हो जाती है, तो मृतक के अवशेषों को भारत वापस लाने के लिए बहुत सारी कागजी कार्रवाई और प्रक्रियाओं का सामना करना पड़ता है, जिससे परिवार और दोस्त निराश हो जाते हैं।

बिजली उत्पादन क्षमता में 1.90 लाख मेगावाट से अधिक का हुआ इजाफा : आर के सिंह

बोलें- भारत बुनियादी ढांचे को आधुनिक रूप देने के साथ विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्रीय बिजली मंत्री आर के सिंह ने शुक्रवार को कहा कि भारत अपने बुनियादी ढांचे को तेजी से आधुनिक रूप देने के साथ विकसित राष्ट्र बनने की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने यहां बुनियादी ढांचा क्षेत्र में भविष्य के लिए हो रहे बदलाव की जानकारी देने के लिए आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा, अब हम खुद को एक विकसित देश में बदल रहे हैं। हमारी अर्थव्यवस्था दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी और हम एक विकसित देश बनेंगे। नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय की भी जिम्मेदारी संभाल रहे सिंह ने कहा कि भारत तेजी से बुनियादी ढांचे को आधुनिक रूप दे रहा है। यह इस बात से पता चलता है कि बजट में पूंजीगत व्यय के लिये आवंटन 2023-24 में 10 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया है, जो 2014 के मुकाबले पांच गुना है। बिजली क्षेत्र का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा

कि वर्ष 2014 से बिजली उत्पादन क्षमता में 1.90 लाख मेगावाट से अधिक का इजाफा हुआ और वर्तमान में कुल क्षमता 4.21 लाख मेगावाट से अधिक हो गयी है। मंत्री ने कहा कि आज बिजली की स्थापित क्षमता इसकी अधिकतम मांग के मुकाबले लगभग दोगुनी है और इसका निर्यात पड़ोसी देशों को किया जा रहा है।

नवीकरणीय ऊर्जा के बारे में उन्होंने कहा कि हमने हर साल कुल क्षमता में 50,000 मेगावाट का इजाफा करने का लक्ष्य रखा है और 2030 तक देश कुल क्षमता में हरित ऊर्जा स्रोतों से 500 गीगावाट (पांच लाख मेगावाट) बिजली हासिल करने के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि नौ साल (2014-23) के दौरान सौर क्षमता में 64,000 मेगावाट से अधिक की वृद्धि हुई है, जो 31 मार्च, 2014 में स्थापित क्षमता का 23 गुना है। सड़क क्षेत्र का जिक्र करते हुए सिंह ने कहा कि वित्त वर्ष 2013-14 में कुल राष्ट्रीय राजमार्ग 91,287 किलोमीटर था, जो मार्च, 2023 में 59 प्रतिशत बढ़कर 1,45,240 किलोमीटर हो गया है। इसी प्रकार एक्सप्रेसवे 2014 में केवल 353 किलोमीटर था जो अब 3,106 किलोमीटर हो गया और 9,000 किलोमीटर एक्सप्रेसवे क्रियान्वयन के विभिन्न चरण में हैं। वित्त वर्ष 2013-14 में प्रतिदिन 11.6 किलोमीटर राष्ट्रीय राजमार्ग बन रहे थे, जो 2022-23 में बढ़कर 28.3 किलोमीटर प्रतिदिन हो गया है। रेलवे का जिक्र करते हुए सिंह ने कहा कि मध्यम उच्च गति वाली वंदे भारत ट्रेन का तेजी से विस्तार किया जा रहा है। अबतक 25 वंदे भारत ट्रेन विभिन्न राज्यों में शुरू की गई हैं और 2030 तक ऐसी 800 से अधिक ट्रेन चलाने की योजना है।

ज्ञानवापी सर्वेक्षण पर रोक से सुप्रीम कोर्ट का इंकार, मस्जिद प्रबंधन की याचिका खारिज

प्रात : किरण

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को वाराणसी के विवादित ज्ञानवापी मस्जिद परिसर का वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने के जिला अदालत के आदेश पर रोक लगाने से शुक्रवार को इनकार कर दिया। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ सर्वेक्षण करने के जिला अदालत के 20 जुलाई के आदेश के फैसले पर मुहर लगाने वाले इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती देने वाली अंजुमन इंतजामिया मस्जिद समिति वाराणसी की याचिका खारिज करते हुए सर्वेक्षण पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। शीर्ष अदालत की पीठ ने कहा कि इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले में हस्तक्षेप करने का उन्हें कोई कारण नजर नहीं आता। शीर्ष अदालत के समक्ष दायर अपनी विशेष अनुमति याचिका में अंजुमन इंतजामिया मस्जिद समिति वाराणसी ने उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश प्रीतिंकर दिवाकर की अध्यक्षता वाली पीठ द्वारा तीन अगस्त को पारित आदेश पर रोक लगाने की गुहार लगाई थी। पीठ ने उच्च न्यायालय के फैसले के कुछ घंटे बाद दायर की गई विशेष अनुमति याचिका पर सुनवाई के लिए सहमति व्यक्त की थी। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता एम निजामुद्दीन पाशा ने पीठ के समक्ष मामले का उल्लेख करते हुए तत्काल सुनवाई की गुहार लगाई थी। शीर्ष अदालत के समक्ष श्री पाशा ने सर्वेक्षण पर तत्काल रोक लगाने की गुहार लगाते हुए कहा था, मैंने विशेष अनुमति याचिका ईमेल कर दी है...उन्हें (सर्वेक्षण) जारी न रखने दें। न्यायमूर्ति चंद्रचूड़ ने जवाब दिया था, हम इस पर तुरंत विचार करेंगे। मस्जिद का प्रबंधन करने वाली इस समिति ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश के कुछ घंटों के भीतर ही शीर्ष न्यायालय का रुख किया था। उच्च न्यायालय ने निचली अदालत के उस फैसले पर मुहर लगा दी थी, जिसमें भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण को ज्ञानवापी परिसर का वैज्ञानिक सर्वेक्षण करने की अनुमति दी गई थी।

जश्न उच्चतम न्यायालय से राहत मिलने के बाद राहुल पार्टी मुख्यालय पहुंचे, कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न

मोदी सरनेम प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर सियासी प्रतिक्रिया, कई दलों ने किया स्वागत

सदस्यता को उसी तेजी से बहाल किया जाना चाहिए जिस तेजी उसे खत्म किया गया था : कांग्रेस

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी मोदी उपनाम वाली टिप्पणी से जुड़े मानहानि के मामले में उच्चतम न्यायालय से राहत मिलने के बाद शुक्रवार को पार्टी मुख्यालय पहुंचे, जहां कार्यकताओं ने उनके समर्थन में जमकर नारेबाजी की और जश्न मनाया। राहुल गांधी के कांग्रेस मुख्यालय 24 अकबर रोड पहुंचने पर उनके साथ उनकी बहन और पार्टी महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा और कांग्रेस के संगठन महासचिव के. सी. वेणुगोपाल भी मौजूद थे। कार्यकताओं ने ढोल बजाकर और झंडे लहराकर जश्न मनाया। उच्चतम न्यायालय के फैसले से उत्साहित कांग्रेस ने कहा कि पार्टी नेता राहुल गांधी की लोकसभा की सदस्यता को उसी तेजी से बहाल किया जाना चाहिए जिस तेजी उसे खत्म किया गया था और उनके नेता को सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पर सदन में बोलने का मौका मिलना चाहिए। राहुल गांधी ने शुक्रवार को कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में मानहानि मामले में अपनी सजा पर रोक लगाने के उच्चतम न्यायालय के फैसले को सच्चाई की जीत बताया है। उन्होंने कहा आज नहीं तो कल सच्चाई की जीत होती है। मुझे अपना लक्ष्य पता है, मैं जानता हूं मुझे क्या करना है। मेरी सोच स्पष्ट है, मेरा क्या काम है उसको लेकर मेरे दिमाग में सब कुछ क्लीयर है। जिन्होंने हमारी मदद की और जनता ने जो प्यार और समर्थन दिया, उसके लिए सभी का धन्यवाद। श्री खडगे ने संवाददाता सम्मेलन में कहा आज बहुत ही खुशी का दिन है। लोकतंत्र की जीत हुई है, संविधान की जीत हुई है। मैं सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करता हूं। यह कांग्रेस पार्टी की नहीं पूरे भारत की और लोकतंत्र की जीत है। ये भारत की जनता की जीत है। राहुल गांधी जी सच्चाई और देशहित के लिए कन्याकुमारी से कश्मीर तक चार हजार किमी से ज्यादा चलकर सभी वर्ग के लोगों से मिले हैं, उन सबकी दुआएं हमारे साथ हैं। न्होंने कहा यह लोगों की जीत है, वोटरों की जीत है। वायनाड की जनता की जीत है। अब देखना यह है कि जिन राहुल गांधी की तत्काल संसद की सदस्यता खत्म की गई थी अब देखना है कि उच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद उन्हें बहाल करने में कितना समय लेते हैं। इतना इंतजार किया है, थोड़ा और कर लेंगे। शायद मोदी सरकार को एहसास हो गया होगा कि उन्होंने जो किया है वह गलत था और उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। लोकसभा में कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी ने कहा जिस वक्त हमने सुना कि राहुल गांधी को सुप्रीम कोर्ट से राहत मिल गई है, हमारे बीच खुशी की लहर दौड़ गई। उन्होंने कहा कि फैसले के बाद वह लोकसभा अध्यक्ष से मिले हैं और श्री गांधी की सदस्यता को तत्काल बहाल करने का अनुरोध किया गया है। उन्होंने कहा हमने अध्यक्ष से मिलकर आग्रह किया है कि श्री गांधी को जिस तत्परता के साथ निलम्बित किया गया उसी तत्परता के साथ उन्हें बहाल किया जाना चाहिए। गांधी को संसद में आना चाहिए और इसको लेकर लोकसभा अध्यक्ष से आग्रह किया जा रहा है।श्री सिंघवी ने कहा फिर से चलेगी सवालों की आंधी , जब संसद में लौटेंगे राहुल गांधी । अब हम संसद में बड़ी उत्सुकता के साथ जनता से जुड़े मुद्दों पर राहुल गांधी जी की बुलंद आवाज सुनने को तैयार हैं। सिद्धांतों पर लड़ रहे हैं, उनका ऐसा कोई इरादा नहीं था।

तेजस्वी ने फैसले का किया स्वागत: उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने मानहानि केस में उच्चतम न्यायालय के फैसले का स्वागत किया है। उन्होंने ट्वीट कर कहा है कि सर्वोच्च न्यायालय का राहुल गांधी जी के संदर्भ में लिया गया फैसला स्वागत योग्य है। अगर भाजपा के दुष्प्रचारी एवं कॉम्प्रोमाइज्ड तंत्र को ये झटका नही लगता तो कई और विपक्षी नेताओं को ये साजिशों व षड्यंत्रों के तहत विधायिका से बाहर रखने की जालसाजी जारी रखते। सत्यमेव जयते!

सर्वोच्च न्यायालय का आदेश न्याय की जीत का प्रतीक ललन : जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह सांसद राजीव रंजन सिंह ललन ने शुक्रवार को सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी को बधाई देते हुए कहा कि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश ने आज फिर साबित कर दिया कि अंततोगत्वा न्याय की ही जीत होती है। न्याय स्थापित करने के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय को हम सलाम करते हैं।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश को ममता बनर्जी ने सराहा

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट के उस आदेश की सराहना की, जिसमें कांग्रेस नेता राहुल गांधी की मोदी उपनाम वाली टिप्पणी पर 2019 के मानहानि मामले में उनकी सजा पर रोक लगा दी गई है। ममता ने शुक्रवार को ट्विटर पर लिखा कि मैं राहुल गांधी की संसद सदस्यता के बारे में खबर से खुश हूं। इससे हमारी मातृभूमि के लिए एकजुट होकर लड़ने और जीतने के इंडिया गठबंधन के संकल्प को और मजबूती मिलेगी। यह न्यायपालिका की जीत है।

सुप्रीम कोर्ट से राहत के बाद लालू यादव से मिलने पहुंचे राहुल: कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद से मुलाकात की और विपक्षी गठबंधन इंडिया के लिए आगे की राह समेत कई अहम मुद्दों पर चर्चा की। सूत्रों के मुताबिक राहुल गांधी लालू से मिलने उनकी बेटी व राजद सांसद मीसा भारती के घर पहुंचे। गांधी ने लालू प्रसाद के स्वास्थ्य के बारे में भी जानकारी ली। बैठक को महत्वपूर्ण माना जा रहा है क्योंकि यह 31 अगस्त-1 सितंबर को मुंबई में होने वाली विपक्ष की बैठक से ठीक पहले हो रही है।

संक्षिप्त खबरें

ऋषि पांडेय के मृत्यु पर शोकसभा का आयोजन

फतुहा। प्रखंड के जेठुली में शुक्रवार को लोजपा (रा) के बिहार संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष पूर्व सदस्य बिहार विधान परिषद हुलास पांडे के पुत्र ऋषि पांडेय के असामयिक निधन की खबर को सुनकर शोक सभा आयोजन किया गया। सभी कार्यकताओं ने दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित किया और मृत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना किया। शोक सभा का नेतृत्व लोजपा (रा) जिला पटना पूर्वी के जिलाध्यक्ष रंजीत यादव ने किया। शोक सभा में प्रदेश महासचिव विभीषण शर्मा, शशि चौरसिया, ज्योति कुमार, कुन्दन कुमार, राजकिशोर दास, कमलेश, हरे राम, पासवान, अंकित, संजीव, बब्लु, दीपक, आदि मौजूद रहे।

श्राद्धकर्म में शामिल हुए सत्येन्द्र सिंह

फतुहा। शुक्रवार को फतुहा विधानसभा क्षेत्र के निवर्तमान भाजपा प्रत्याशी ई. सत्येन्द्र कुमार सिंह, पटना साहिब लोकसभा विस्तारक भैया लाल माथुरी, भाजपा के जिला उपाध्यक्ष भास्कर लाल पटवा के माता जी के श्राद्धकर्म पहुंचे। साथ में जिला महामंत्री अरविंद यादव, फतुहा नगर मंडल अध्यक्ष श्याम सुंदर केशरी, नगर महामंत्री अरूण कुमार झा, नगर उपाध्यक्ष रंजना पटवा, भाजयुमो नगर अध्यक्ष सुजीत कुमार, भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष अभिषेक झा मौजूद रहे।

चोरी व शराब में गिरफ्तार

पटना सिटी (प्राकि)। आलमगंज थाना की पुलिस ने पाइप चोरी करते हुए सूरज कुमार को गिरफ्तार किया है। इसके पूर्व भी चोरी के मामले में वह दो बार जेल जा चुका है। वह निमार्णाधीन पॉलिटेक्निक के चल रहे भवन निर्माण के दौरान अल्युमिनियम पाइप की चोरी करते पकड़ा गया। वहीं शराब के मामले में दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने बताया कि तुलसी मंडी से विकास को चार लीटर देसी शराब के साथ और पीतांबरा मंदिर कॉलोनी से धर्मेंद्र बिंद और विकास कुमार को 22 लीटर देसी शराब के साथ गिरफ्तार किया गया है। तीनों को पूछताछ के बाद जेल भेज दिया गया है।

फ्लैट बचाने को दिया धरना, संघर्ष का लिया संकल्प

पटना सिटी। बिहार राज्य आवास बोर्ड की ओर से अगमकुआं थाना क्षेत्र के बहादुरपुर हाउसिंग कॉलोनी स्थित एलआईजी सेक्टर 6, ब्लॉक नंबर 1 और 2 में स्थित एक दर्जन फ्लैट को खाली कराने के विरोध में शुक्रवार को भी बहादुरपुर हाउसिंग कालोनी संघर्ष मोर्चा समिति के बैनर तले लोगों ने धरना दिया। इसकी अध्यक्षता अध्यक्ष शशिकांत शर्मा और संचालन सचिव हीरा सिंह ने किया। बांस-बल्ला का बेरिकेडिंग लगा कर फ्लैट की ओर जाने वाले रास्ते को घेर सभी धरना दे रहे हैं। उन लोगों का कहना है कि सरकार इस मामले में सार्थक पहल कर उचित मूल्य पर हम सबों को फ्लैट उपलब्ध कराए। इसी मांग को लेकर धरना अनिश्चितकालीन रहेगा, जब तक सरकार फैसला नहीं ले लेती है। धरना का आज दूसरा दिन था। इससे पहले बीते बुधवार को प्रशासन की टीम वहां पर फ्लैट को खाली कराने के लिए पहुंची थी, मगर लोगों के विरोध और आक्रोश को देखते हुए बैरंग वापस लौट गई थी।

जिंदगी प्यार का गीत है, इसे हर दिल को गाना...

पटना सिटी। स्वर सम्राट, अभिनेता, हास्य व संगीतकार किशोर दा के गाने इंसान को थिरकने पर आज भी विवश कर देता है। उनके गाने में चुलबुलेपन के साथ नटखट और शरारत, जो सीधे दिलों पर दस्तक देती है, उनकी गायकी का यही अंदाज, सबके दिलों पर आज भी वह राज कर रहे हैं। ऐसा गायक सदियों में एक बार जन्म लेता है। यह बातें शुक्रवार को जंगली प्रसाद लेन स्थित स्वरांजलि सभागार में किशोर दा के जन्मदिन पर आयोजित कार्यक्रम में दूरदर्शन व आकाशवाणी के निदेशक (का.) डॉ राजकुमार नाहर ने कही। मुख्य अतिथि डॉ ध्रुव कुमार ने कहा कि किशोर दा के गाने आज भी बूढ़े दिलों को जवां करने का दम रखती है। उनके गानों में संजीदगी का अहसास खुद व खुद हो जाता है। हाल क्या है दिलों का न पूछो सनम... पूरे मन को रोमांचित कर देता है। गीत संगीत का आगाज संजीव प्रियदर्शी के गाना से हुआ। इसके बाद अनिल अकेला, अनिल रश्मि, हर्ष राज आदि ने उनके गाए गीत को पेश कर महफिल को रंगीन बना दिया।

तख्तश्री कमेटी की मीटिंग में फाइनल वोटरलिस्ट को स्वीकृति

पटना सिटी, प्रात : किरण संवाददाता

दो धड़ों में बनटे तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी की बैठक अंततः शुक्रवार को हुई। इसमें कमेटी के होने वाले चुनाव को लेकर बनाए गए फाइनल मतदाता सूची को स्वीकृति प्रदान की गई। बैठक महज एक एजेंडे को लेकर ही आहूत की गई थी। बैठक में अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही के नहीं आने के कारण इसकी अध्यक्षता वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह ने की। महासचिव इंद्रजीत सिंह ने एजेडा को मौजूद सदस्यों के समक्ष रखा। इसके बाद सवार्नुमति से चुनाव को लेकर तैयार किए गए फाइनल मतदाता सूची को स्वीकृति प्रदान कर दी गई। बैठक में वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह, महासचिव इंद्रजीत सिंह, सचिव हरबंश सिंह, सदस्य चरणजीत सिंह के अलावा जिला जज के द्वारा नामित तीन में से दो सदस्य आरएस जीत, रणजीत सिंह और एसोसिएट सदस्य महाराजा सिंह सोनू शामिल हुए। सदस्य गोविंद सिंह लोंगोवाल ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के द्वारा बैठक के एजेंडे पर अपनी सहमति प्रदान की। बैठक के संबंध में जानकारी देते हुए महासचिव इंद्रजीत सिंह ने कहा कि यह बैठक पूरी तरह से वैध है। दरअसल एक धड़ा नहीं चाह रहा कि चुनाव समय से हो पाए। इसके लिए वे सब पटना उच्च न्यायालय में याचिका दाखिल किए हैं, जिस पर कोर्ट का फैसला आना है। दूसरी ओर वह सब चाहते थे कि चुनाव जितना टल सकता है, टाला जाए, ताकि कुर्सी बची रहे, सत्ता सुख मिलता रहे और लाभ-हानि का खेल चलता रहे। जब महासचिव से पूछा गया कि दूसरे धड़े यानी अध्यक्ष के द्वारा छह अगस्त को बैठक बुलाई गई है। इस पर उनका कहना था कि पूर्व में भी उन्होंने रिक्विजिशन मीटिंग के लिए नोटिस दिया था, मगर वह पूर्णतः गलत है। उसमें दो हस्ताक्षर गलत है, जो सदस्य नहीं हैं। इसमें पांच लोगों के हस्ताक्षर होने चाहिए। जहां तक जगजोत सिंह सोही ने अध्यक्ष के रूप में चार अगस्त की बैठक को रद्द करने की सूचना जारी की गई है। दरअसल वे अब सदस्य हैं ही नहीं, तो अध्यक्ष के रूप में वह कोई आदेश कैसे पारित कर सकते हैं। यही कारण रहा कि शुक्रवार को ही बैठक की प्रधानगी वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह ने की और अब वह बतौर कार्यकारी अध्यक्ष कार्य का निबटारा करेंगे। वैसे भी वर्तमान कमेटी का कार्यकाल 14 जुलाई को समाप्त हो चुका है ऐसे में अब महज चुनाव संचालन और श्री कमेटी के रूटीन वर्क को ही निबटाया जा सकेगा।

जगजोत सिंह व एमपी ढिल्लन कमेटी के सदस्य नहीं : चरणजीत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब का कार्यकाल 14 जुलाई, 23 को पूरा हो चुका है। बिहार राज्य चुनाव प्राधिकार ने चुनावी प्रक्रिया शुरू कर दी है। कमेटी के अध्यक्ष (अब नहीं) दूसरे धड़े के साथ मिलकर चुनाव को जितना टाल सकते हैं, उसकी कोशिश में लगे हैं। कमेटी का कार्यकाल पूरा होने और प्राधिकार के द्वारा चुनावी प्रक्रिया शुरू किए जाने के बाद पटना के जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने तख्तश्री पटना साहिब के संरक्षक के द्वारा संविधान में मिली शक्ति का प्रयोग करते हुए उन्होंने तीन सदस्यों को नामित किया।

इसमें आरएस जीत, रणजीत सिंह और गुरुविंदर सिंह शामिल हैं। जब जिला जज सह संरक्षक के द्वारा तीन सदस्यों का मनोनयन के संबंध में अधिसूचना जारी कर दी गई, तो पूर्व में उनके द्वारा नामित सदस्यों का कार्यकाल समाप्त हो जाता है। यही कारण रहा कि बैठक में भाग लेने के लिए जगजोत सिंह सोही और महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन को महासचिव के द्वारा पत्र नहीं भेजा गया। मनोनीत हुए आरएस जीत, रणजीत सिंह और गुरुविंदर सिंह को बैठक में भाग लेने के बाबत पत्र भेजा गया। वह सब आज भी गुरुविंदर सिंह को कमेटी का सदस्य और कनीय उपाध्यक्ष मानते हैं। मगर शुक्रवार को होने वाली बैठक में उन्होंने भाग नहीं लिया। हालांकि वे कमेटी के प्रधान के कार्यालय में देखे गए। वहीं जिला जज के द्वारा मनोनीत दो सदस्य आरएस जीत और रणजीत सिंह ने बैठक में भाग लिया और एजेंडे पर अपनी सहमति दर्ज कराते हुए बैठक की उपस्थिति पुस्तिका पर भी अपना हस्ताक्षर बनाया। अब जबकि जगजोत सिंह कमेटी के सदस्य नहीं रहे, तो अध्यक्ष कैसे रहेंगे। इस कारण से बैठक की प्रधानगी वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह ने की और अब वे बतौर कार्यकारी अध्यक्ष कमेटी के कार्यों का निष्पादन नई कमेटी के गठन होने तक करेंगे। श्री चरणजीत सिंह ने कहा कि बैठक में मतदाता सूची को स्वीकृत करते हुए पास किया गया है। उसे चुनाव प्राधिकार के सचिव पुरुषोत्तम पासवान और सिटी एसडीओ सह निर्वाचन पदाधिकारी को सौंपा जाएगा। संभवतः शनिवार और रविवार को कार्यालय बंद है। ऐसे में सोमवार को कार्यालय में जाकर उन्हें मतदाता सूची सौंप दिया जाएगा। बैठक में लिए गए निर्णय की जानकारी भी पटना के जिला एवं सत्र न्यायाधीश सह संरक्षक, चुनाव प्राधिकार के सचिव और सिटी एसडीओ सह निर्वाचन पदाधिकारी को दिया जाएगा।

रिक्विजिशन मीटिंग बुलाने का नोटिस गलत, किया रद्द

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी (प्राकि)। तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी के कुछ सिख संगत और सदस्यों के द्वारा चार एजेंडे को लेकर रिक्विजिशन मीटिंग बुलाने के बाबत नोटिस दी गई थी। इस तरह की बैठक बुलाने के लिए पांच सदस्यों का हस्ताक्षर होना जरूरी है, मगर उस पर पांच की जगह महज तीन सदस्य डॉ गुरमीत सिंह, राजा सिंह और गुरुविंदर सिंह के ही हस्ताक्षर हैं। हरपाल सिंह जौहल को बहुत पहले ही बोर्ड की हुई बैठक में सदस्यता से निलंबित कर दिया गया है। उस बैठक में जगजोत सिंह और राजा सिंह ने भी हरपाल सिंह जौहल के खिलाफ काफी कुछ कहा था।

उक्त बैठक में सवार्नुमति से उनकी सदस्यता समाप्त की गई थी। इसके बाद कमेटी की हुई बैठक में रिक्त पड़े कॉप्ट सदस्य के निर्वाचन के संबंध में एजेंडा रखते हुए बैठक हुई। उस समय अध्यक्ष अवतार सिंह हित ने बैठक की प्रधानगी की थी। तब सरदार चरणजीत सिंह के नाम का प्रस्ताव आया था और बिना किसी विरोध के नाम पर सहमति जताई गई थी। यह बात कार्यकारी अध्यक्ष लखविंदर सिंह, महासचिव इंद्रजीत सिंह और सचिव हरबंश सिंह ने शुक्रवार को पत्रकारों से बात के दौरान कही। सदस्य चरणजीत सिंह ने कहा कि जनवरी, 23 तक वह कमेटी के सदस्य थे। 31 दिसंबर, 22 को कार्यकारी अध्यक्ष जगजोत सिंह सोही की सहमति से महासचिव इंद्रजीत के द्वारा बुलाई गई बैठक में उन्होंने जगजोत सिंह को अध्यक्ष बनाने में अहम भूमिका निभाई। इसके बाद 10 जनवरी, 23 को उन्हें एक पत्र जारी किया गया, जिसमें उन्हें सदस्य के रूप में संबोधित करते हुए स्कूल कमेटी के चेयरमैन पद से उनका इस्तीफा नामंजूर करने की बात कही गई। उस जारी पत्र में बतौर अध्यक्ष जगजोत सिंह और महासचिव इंद्रजीत सिंह के हस्ताक्षर थे। इसके बाद वे कमेटी के चुनाव शुरू करने की प्रक्रिया को लेकर अध्यक्ष और महासचिव को पत्र लिखा। बाद में उन्होंने बिहार राज्य चुनाव प्राधिकार को भी पत्र लिखा। प्राधिकार के सचिव पुरुषोत्तम पासवान से मिलकर उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत कराया। फरवरी, 23 से चुनाव प्राधिकार के सचिव के द्वारा तख्तश्री कमेटी के चुनाव कराने को लेकर पत्राचार शुरू किया गया। यही श्री सोही को नागवार गुजरा और बिना बैठक में उन्हें हटाए जाने का एजेंडा लाए, सहमति बनाए, उन्हें सदस्य मानने से इनकार किया। कहा गया कि आपके बैठक में कॉप्ट किए जाने के संबंध में जिला जज के यहां से अब तक संपुष्टि नहीं आई है। अब वह बता दें कि 31 दिसंबर को उनका अध्यक्ष पद पर चुने जाने की संपुष्टि जिला जज के द्वारा कर दी गई है, तो वह इस संबंध में पत्र सार्वजनिक करें। कानून सम्मत, तख्तश्री पटना साहिब के संविधान के अनुसार और लोकतांत्रिक तरीके से कमेटी को नहीं चला कर अपनी कुर्सी बचाने, फूट डालो और राज करो, सदस्यों के द्वारा गलत किए जाने को आंख मूंद कर नजरअंदाज करते रहो, को लेकर ही चुनाव को लंबे समय तक टालने के लिए ही जगजोत सिंह और उनकी टीम के द्वारा प्रयास किया जाता रहा है। अचानक से उन्हें अपना बहुमत और कोरम पूरा करने के लिए उन्होंने हरपाल सिंह जौहल को सदस्य घोषित कर दिया गया। आखिर क्या कारण है कि जब श्री जौहल को बोर्ड की बैठक में सदस्यता समाप्त कर दी गई, तब से लेकर अब तक उन्हें किसी भी बैठक में कानूनी तौर पर क्यों नहीं भाग लेने दिया गया। चरणजीत सिंह ने कहा कि उनकी गलती सिर्फ इतनी है कि उन्होंने समय से चुनावी प्रक्रिया शुरू कराए जाने को लेकर पहल किया, जो बतौर अध्यक्ष जगजोत सिंह को नागवार गुजरा। अब बतौर सिख संगत जगजोत सिंह सोही किसी भी बैठक को न रद्द कर सकते हैं और न ही कोई आदेश जारी कर सकते हैं। जब जगजोत सिंह सदस्य ही नहीं रहे, तो अध्यक्ष भी नहीं रहेंगे। उनके साथ महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन भी सदस्य नहीं रहे। अब जो पांच लोगों के द्वारा रिक्विजिशन मीटिंग बुलाई गई है, उसमें दो संगत के हस्ताक्षर हैं। यह हरपाल सिंह जौहल और महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन हैं। तीन सदस्यों के हस्ताक्षर से रिक्विजिशन मीटिंग नहीं बुलाई जा सकती है। वैसे भी रिक्विजिशन मीटिंग तभी बुलाई जा सकती है, जब कमेटी की बैठक लंबे समय से नहीं आहूत की गई हो और उस पर भी खास एकमात्र एजेंडे पर तख्तश्री कमेटी की बैठक पांच सदस्यों के हस्ताक्षर से नोटिस देकर की जा सकती है। यही कारण रहा कि बतौर महासचिव इंद्रजीत सिंह ने 26 जुलाई को और अब होने वाली 6 अगस्त की बैठक को भी रद्द करने के बाबत नोटिस जारी कर दिया है।

वार्डों में घूम-घूमकर नाली-गली और सड़क का जायजा ले रहे टुनटुन यादव

प्रात : किरण संवाददाता

फतुहा। नगर परिषद के समस्त वार्डों के निरीक्षण कार्यक्रम के क्रम में शुक्रवार को मुख्य पार्षद प्रतिनिधि टुनटुन यादव ने वार्ड संख्या 20, 21 और 22 में सड़क, नाली एवं साफ-सफाई का निरीक्षण किया। इस दौरान लोगों ने जनसमस्याओं को भी रखा।

इस संबंध में टुनटुन यादव ने बताया कि जनता की समस्या को लेकर हम लगातार वार्डों में घूम रहे हैं हमने वार्ड नं 20, 21 और 22 में कई नाली और सड़क निर्माण का डाटा तैयार किया गया है जिसका जल्द निर्माण कार्य होगा। वहीं क्षतिग्रस्त सड़क की समस्या पर उन्होंने स्थानीय लोगों को आश्वस्त करते हुए कहा कि गली में जल्द ही सड़क एवं नाली का निर्माण कराया जाएगा। उन्होंने सड़क निरीक्षण के दौरान चैम्बर के टूटे हुए कवर का संज्ञान लेते हुए तत्काल उसे दुरूस्त कराने का भरोसा दिलाया और लोगों से आह्वान किया कि शहर की सफाई व्यवस्था में नगर परिषद का साथ दें। कूड़े-कचरे को निश्चित स्थान पर डाले व कूड़ा कलेक्शन करने वालों को सहयोग करें। इस दौरान उपमुख्य पार्षद प्रतिनिधि बब्बन यादव, सूरज यादव, समाजसेवी सुधीर यादव, अवधेश प्रसाद, संजीव कुमार, मनोज यदुवंशी, संजीत यादव, ठाकुर प्रसाद तांती, बबलू प्रसाद, अभिषेक झा, भुर्री गोप, छोटू यादव, नीतीश कुमार, अनिल कुमार उर्फ कारू आदि मौजूद रहे।

हाईकोर्ट के निरीक्षी जज ने सिटी सिविल कोर्ट का किया निरीक्षण

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सह निरीक्षी जज राजीव रंजन प्रसाद शुक्रवार को पटना सिटी व्यवहार न्यायालय पहुंचे। यहां उन्होंने कोर्ट का निरीक्षण किया। साथ ही, न्यायालय के प्रथम तल पर स्थित न्यू फाइलिंग रूम का उद्घाटन फीता काट और शिलापट से पर्दा हटा कर किया। इस दौरान निरीक्षी जज राजीव रंजन प्रसाद के द्वारा कोर्ट परिसर में मोहगनी और फोसहेल पांप पौधा का रोपण भी किया। इनका स्वागत पटना के जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजीव रंजन एवं पटना सिटी व्यवहार न्यायालय के अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश-1 उज्जवल प्रकाश सिन्हा ने संयुक्त रूप से किया।

इसके बाद निरीक्षी जज को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कार्यक्रम के दौरान एडीजे विद्या प्रसाद, विशेष न्यायालय (उत्पाद) के न्यायाधीश बृजेंद्र कुमार राय, एसीजेएम राकेश यादव, सब-जज-2 विवेक कुमार मिश्रा, मनीष कुमार जायसवाल, एसडीजेएम सपना रानी, जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड के प्रधान न्यायिक दंडाधिकारी शोभना त्रिपाठी, न्यायिक पदाधिकारीगण सहित न्यायालयकर्मी सक्रिय थे। इस दौरान पटना सिटी अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संजय कुमार सिन्हा, महासचिव अशोक कुमार, पूर्व अध्यक्ष नवीन कुमार सिन्हा आदि ने निरीक्षी जज से मिलकर पटना सिटी व्यवहार न्यायालय में परिवार न्यायालय, एससी-एसटी कोर्ट, एनडीपी एक्ट, पास्को, बिजली से संबंधित आदि कोर्ट देने के साथ ही न्यायालय में कर्मचारी और स्टेनो दोनों की कमी की ओर ध्यान दिलाया। संघ की ओर से कहा गया कि यहां अधिवक्ताओं की संख्या अधिक है और नया भवन बनने के बाद भी हर किसी को जगह नहीं मिल पाई है।

इस कारण से जमीन उपलब्ध कराने की बात कही गई। इस पर निरीक्षी न्यायाधीश ने कहा कि वह एक्साइज का एक और कोर्ट के साथ ही कुछ और कोर्ट भी देंगे। कर्मियों की कमी को भी पूरी की जाएगी। अन्य मुद्दे को लेकर वे मुख्य न्यायाधीश से भी बात करेंगे। उन्होंने संघ के शिष्टमंडल को आकर मिलने की बात कही। इस दौरान अधिवक्ताओं में मधु कुमारी, नीलम कुमारी, अनुज प्रसाद, मनोज कुमार सिन्हा, नीरज कुमार, अविनाश कुमार, राम कृष्णा प्रसाद यादव, उमेश कुमार, रत्नेश कुमार आदि मौजूद थे। आयोजन को लेकर कोर्ट परिसर के बाहर एवं अंदर सुरक्षा की खासी व्यवस्था की गई थी।

आज एसडीओ ने तख्तश्री कमेटी की बैठक बुलाई

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब के चुनाव को लेकर कमेटी के सदस्यगण और पदाधिकारी दो धड़ों में बंटे हैं। एक धड़े ने महासचिव इंद्रजीत सिंह के द्वारा बुलाई गई बैठक में चुनाव के बाबत फाइनल मतदाता सूची को शुक्रवार को स्वीकृति प्रदान की है। अध्यक्ष जगजोत सिंह के खेमे के द्वारा बैठक को असंवैधानिक और गलत ढंग से पास किए जाने की सूचना संबंधित अधिकारी व पदाधिकारियों को देने का काम किया। सिटी एसडीओ सह निवार्ची पदाधिकारी गुंजन सिंह ने दो अगस्त को पत्रांक 232 जारी किया है। इसमें तख्तश्री कमेटी के अध्यक्ष और महासचिव को संबोधित करते हुए कहा गया है कि अंतिम मतदाता सूची के प्रकाशन के लिए पांच अगस्त को दोपहर 12.30 बजे उनके कार्यालय कक्ष में बैठक आहूत की गई है। इसमें सभी पदाधिकारी और सदस्य भाग लेना सुनिश्चित करेंगे। पत्र में कहा गया है कि बिहार राज्य निर्वाचन प्राधिकार के परामर्शी के एक अगस्त को पत्रांक 1488 के द्वारा तख्तश्री हरिमंदिर जी प्रबंधक कमेटी से अनुमोदित अंतिम मतदाता सूची छह अगस्त तक उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है।

दानापुर मंडल मे अभी कुल 13 विभिन्न स्टेशनों का अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत विकास करने का निर्णय लिया गया है

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर। खगौल नगर के पूर्व मध्य रेलवे दानापुर मंडल मे अभी कुल 13 विभिन्न स्टेशनों का विकास करने का निर्णय लिया गया रेल मंत्रालय द्वारा अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत स्टेशनों के आधुनिकीकरण के लिए एक नई नीति तैयार की गई है इसके लिए लगभग 300 करोड़ रुपया खर्च किए जाएंगे। शिलान्यास होते हैं कार्य शुरू कर दिया जाएगा। वही यह सारे काम 28 फरवरी 2024 तक पूरा कर लेने का भी लक्ष्य रखा गया है। 6 अगस्त को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत दानापुर मंडल के 13 स्टेशनों के पुनर्विकास कार्यों का शिलान्यास किया जाएगा। इस बात की जानकारी देते हुए दानापुर मंडल रेल प्रबंधक जयंत कुमार चौधरी ने बताया कि पहले चरण में 13 चयनित स्टेशनो मे आरा, बिहिया, रघुनाथपुर, डुमरांव, दिलदारनगर, जमुई, जहानाबाद, राजगीर, बिहारशरीफ, फतुहा, बाढ़, बख्तियारपुर और तारेगना स्टेशनों पर अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकास कार्य किया जाएगा।

अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत भविष्य में इन स्टेशनों पर यात्रियों की सुविधा, सहजता और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए स्टेशन भवन, प्रवेश और निकास द्वार, 12 मीटर चौड़ा फुट ओवर ब्रिज, लिफ्ट और एक्सीलेटर, कॉनकोर्स, प्लेटफॉर्म, सकुर्लेटिंग एरिया बनाया जाएगा। आवश्यकतानुसार पार्किंग उपलब्ध करायी जायेगी। दिव्यांगजन सुविधाएं, बिजली व्यवस्था, बैठने की व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था, स्वच्छता व्यवस्था, पहुंच मार्ग, साइन एवं इंस्ट्रक्शन बोर्ड, ट्रेन डिस्प्ले एवं उद्घोषणा प्रणाली, सौंदर्यीकरण आदि से संबंधित आवश्यक विकास कार्य कराए जाएंगे। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत दानापुर मंडल का आरा स्टेशन लगभग 27.89 करोड़, बिहिया स्टेशन के लिए 23.13 करोड, रघुनाथपुर स्टेशन के लिए 20.50 करोड़, डुमराव के लिए 17.13 करोड़, दिलदारनगर स्टेशन के लिए 21.16 करोड़, जमुई स्टेशन की लागत लगभग 23.36 करोड़, जहानाबाद स्टेशन के लिए 22.93 करोड़, राजगीर के लिए 21.20 करोड़, बिहार शरीफ के लिए 18.84 करोड़ रुपये, फतुहा स्टेशन के लिए 32.73 करोड़, बाढ़ स्टेशन के लिए 23.38 करोड़, बख्तियारपुर स्टेशन पर 23.20 करोड़ रुपये, और तारेगना स्टेशन पर 19.23 करोड़ रुपये की संबंधित अनुबंध को मंजूरी मिल गयी है। इन स्टेशनों पर शिलान्यास होते ही काम शुरू हो जायेगा।

एनडीए सरकार के शासन-काल में देश में हर ओर अराजकता का है दौर : आप

प्रात :किरण संवाददाता

पूर्णिया । केंद्र की सत्ता में बैठी मोदी-शाह की जोड़ी ने देश को बर्बाद कर रख दिया है। अहिंसा, उत्पीड़न, असमानता जैसी स्थिति भारत की वर्तमान पहचान बन गयी है। देश में हर ओर अराजकता का दौर है। उक्त बातें आम आदमी पार्टी के युवा जिला अध्यक्ष इरशाद पूर्णवी ने एक प्रेस बयान जारी कर कही है। उन्होंने कहा कि गरीबों, पिछड़ों, अति पिछड़ों, दलितों, शोषितों, वंचितों, अल्पसंख्यकों को स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार बाबा साहेब के संविधान के कारण मिला है।

आज महिलाओं को जीने का, पढ़ने का अधिकार समेत सभी अधिकार बाबा साहेब की वजह से मिला है लेकिन केंद्र की भाजपा सरकार संविधान को ही समाप्त करना चाह रही है। भाजपा अपने नौ साल में सत्ता रहकर अपने सबका साथ सबका विकास के वादों को भूलकर हिन्दू मुस्लिम, मंदिर मस्जिद के मुद्दों को उठाकर देश में जहर फैलाने का काम कर रही है। आज देश के सभी संस्थाओं को कौड़ी के भाव में दो गुजराती बेच रहा है और दो गुजरती अडानी और अम्बानी खरीद रहा है जिसके कारण आज बेरोजगारी चरम पर है। लगातार लिए गये एक से बढकर एक गलत नीति की वजह से अप्रत्याशित महंगाई से देश की जनता में हाहाकार मचा हुआ है। लोगों के अंदर धर्म और विद्वेष की जहर का संचार किया जा रहा है ताकि इनकी राजनीतिक रोटी चलती रहे। देश की एकता और अखंडता पूरी तरह से खतरे में दिख रही है। कहा 2024 इस फूट डालो राज करो वाली एनडीए सरकार की विदाई का काल होगा, जिसके लिए पूरा विपक्षी पार्टी एकजुट व मजबूत हो रही है। उन्होंने कहा कि अब जबकि पटना उच्च न्यायालय ने जातिगत जनगणना पर लगी रोक को हटा दिया है ऐसे में भाजपा जनता के समर्थन हेतु झूठा प्रचार कर रही है कि वे हमेशा जाति आधारित गणना के पक्ष में थी जबकि हकीकत इससे पूरा अलग है।

बैंक ऑफ इंडिया द्वारा ग्राम मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर नगर के अंतर्गत शुक्रवार को आशियाना के राम नगरी शाखा में बैंक ऑफ इंडिया द्वारा ग्राम मिलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन बैंक ऑफ इंडिया के महाप्रबंधक आंचलिक प्रबंधक राजेश कुमार व खुदरा व्यापार केंद्र के सहायक प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी खुदरा व्यापार केंद्र के मुख्य प्रबंधक अतुल चंद्र आशियाना राम नगरी ब्रांच के मुख्य शाखा प्रबंधक प्रशांत कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।

गया इस कार्यक्रम में लगभग 100 ग्राहकों ने भाग लिया जहां बैंक ऑफ इंडिया के सर्वोच्च प्रबंधक से सीधा संवाद कर अपनी आवश्यकताओं तथा सुझाव से उन्हें अवगत कराया। वही ग्राहकों को संबोधित करते हुए खुदरा व्यापार केंद्र के सहायक महाप्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने बैंक के विभिन्न उत्पादों से ग्राहकों को अवगत कराया तथा लाभान्वित होने का तरीका बताया। अपने संबोधन में उप महाप्रबंधक आंचलिक महाप्रबंधक राजेश कुमार ने बैंक के उत्पादों से ग्राहकों की आवश्यकता तथा आने वाली बदलाव के बारे में लोगों को अवगत कराया। वही इस कार्यक्रम के दौरान 10 से अधिक ग्राहकों को लगभग 5 करोड़ रुपए का ऋण पत्र प्रदान किया गया। इस मौके पर अनुप्रिया घनश्याम मिश्रा सतनारायण कुमार रवी शंकर ज्योत्सना ज्योत्सना करुणा कुमारी राकेश रंजन एवं बैंक के बहुत सारे स्टाफ मौजूद थे।

किसानों को सुविधा पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही सरकार : संजय झा

बोलें- इंडिया गठबंधन के प्रभाव का नतीजा है एनडीए की बैठक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जल संसाधन मंत्री संजय झा ने बताया कि जुलाई माह में अनुमान के मुताबिक 48 फीसदी कम बारिश हुई है जो कि चिंता का विषय है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार स्वंय इन पूरे विषयों पर नजर बनाए हुए हैं। सोन, गंडक और कोशी में अत्यधिक पानी पहुंचाने का कार्य भी प्रगति पर है। ज्यादातर जगहों पर सरकार नहर के द्वारा पानी पहुंचा रही है। पिछले साल से अधिक क्षेत्र में इस बार सिंचाई का पानी पहुंचाया जा रहा है। मंत्री शुक्रवार को जदयू मुख्यालय में आयोजित जनसुनवाई कार्यक्रम में उक्त बातें कही। इस दौरान उन्होंने प्रदेश भर के सभी जिलों से पहुंचे जनता की समस्याओं को सुनकर उसके निराकरण हेतु संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। पत्रकार के सवालों के जवाब में श्री झा ने कहा कि अभी तक केंद्र की ओर से किसी भी तरह का कोई सहयोग होगा प्राप्त नहीं हुआ है। बिहार सरकार अपने क्षमतानुसार किसानों को सुविधा पहुंचाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। श्री झा ने आगे कहा कि इतने वर्षों में कभी भी एनडीए गठबंधन की बैठक नहीं बुलाई गई थी मगर इंडियन गठबंधन की ताकत से घबराई हुई भाजपा ने एनडीए गठबंधन का बैठक बुलाने का निर्णय लिया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सभी विपक्षी दलों को एक मंच पर जुटाने का जो मुहिम शुरू किया था अब हुआ रंग ला रही है। भाजपा के लोग कहते थे कि विपक्षी दलों को एकजुट करना मुश्किल काम है मगर आज विपक्षी पार्टियों की एकजुटता का ही प्रभाव है कि भाजपा अपने घटक दलों के साथ बैठक करने पर मजबूर हो रही है। उन्होंने आगे कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी ने बिहार में कानून का शासन स्थापित करें पूरे देश में संदेश दिया। हमारे यहां पुलिस वालों को फर्जी एनकाउंटर करने की छूट नहीं दी जाती है, मुख्यमंत्री के सुशासन का ही प्रमाण है बिहार में कर्फ्यू लगाए एक जमाना हो गया। मुख्यमंत्री जी ने बिहार में कभी जातीय और संप्रदायिक दंगा नहीं होने दिया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लोकसभा चुनाव लड़ने के संबंध में पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवाल पर श्री झा ने बताया कि अभी ऐसी कोई बात नहीं हुई है। मुख्यमंत्री जी बिहार की जनता की सेवा में तत्पर है और साथ भाजपा के खिलाफ देशभक्ति विपक्षी दलों को एकजुट कर रहे हैं। इस कार्यक्रम में मुख्य सचेतक, बिहार विधान परिषद संजय कुमार सिंह उर्फ गाँधी जी एवं प्रदेश महासचिव अरुण कुमार सिंह मौजूद थे।

न्यायालय के फैसले से भाजपा को करारा झटका लगा है : उमेश

- बोलें-सर्वोच्च न्यायालय का फैसला लोकतंत्र और संविधान की जीत का जीवंत उदारहण

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी के मामलें में सर्वोच्च न्यायालय का फैसला लोकतंत्र और संविधान की जीत का जीवंत उदारहण है। सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले से देश में नकारात्मक राजनीति कर रही भाजपा को करारा झटका लगा है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मोदी सरकार द्वारा लोकतंत्र को कुचलने का षड्यंत्र आज माननीय सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष भी बेनकाब हो गया। न्यायालय के इस फैसले से भाजपा को सबक लेने की आवश्यकता है, असत्य चाहे कितना भी हावी हो जाए मगर सत्य को कभी दबाया नहीं जा सकता है। यह देश गांधी और अंबेडकर का देश है, यहां छल-कपट की राजनीति कभी भी किसी भी दौर में सफल नहीं हो सकती है। श्री कुशवाहा ने कहा कि भाजपा लाख कोशिशें कर ले मगर देश का विपक्ष डरने वाला नहीं है। हम मिलकर पुरी ताकत से भाजपा का मुकाबला करेंगे और हिटलर के मार्ग पर चल रही तानाशाही सरकार को 2024 में देश की सत्ता से उखाड़ फेकेंगे। देश की जनता को भी एहसास हो चुका है कि जनसमस्याओं का समाधान करने के बजाए विपक्ष की आवाज को दबाने के लिए भाजपा अपने सत्ता का दुरुपयोग कर रही है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि सिर्फ.सत्ता भोगने की नीयत से देश के संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग करना भाजपा को महँगा पड़ेगा। जनता इनकी विदाई सुनिश्चित करने का मन अब बना चुकी है। भाजपा की तानाशाही अब अंतिम समय में है। भाजपा के राजनीतिक पतन की शुरूआत हो चुकी है, कोई भी साजिश या षड्यन्त्र अब मोदी सरकार को नहीं बचा सकती है।

सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं : अखिलेश

बोलें- गाँधी बनाम गोडसे की लड़ाई में गाँधी की जीत

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

यह मामला भले ही मोदी सरनेम का दिखायी देता है, लेकिन वास्तव में यह गाँधी बनाम गोडसे की विचारधारा की लड़ाई थी जिसमें गाँधी की जीत हुई। यह नफरत पर मोहब्बत की जीत है। सुप्रीम कोर्ट द्वारा कांग्रेस के सर्वमान्य नेता राहुल गाँधी की सजा पर रोक लगाना इस बात का सबूत है कि सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं। उक्त बातें बिहार प्रदेश कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डा अखिलेश प्रसाद सिंह ने शुक्रवार को मोदी सरनेम मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर खुशी जाहिर करते हुए कही। वे प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में जश्न मनाने के लिए एकत्रित हुए सैंकड़ों कांग्रेस नेताओं एवं कार्यकत्राओं को अपने वरचुअल सम्बोधन में बोल रहे थे। डा सिंह ने आगे कहा कि यह न्याय की जीत है और कांग्रेसियों के लिए बहुत बड़ी राहत है कि राहुल जी की आवाज संसद में फिर से गूंजेगी और वह 2024 का चुनाव लड़ सकेंगे। उन्होंने कहा कि साजिश से सच्चाई नहीं छुपती। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक राजनीतिक चुष्चक्र के तहत राहुल जी को झूठे मुकदमों में फँसाकर उनकी आवाज को दबाने की नाकाम कोशिश की थी। मगर सत्य की हमेशा जीत होती है और हम जीत गये।

आज जैसे ही राहुल गाँधी के मामले में सुप्रीम कोर्ट का आदेश आया प्रदेश के कांग्रेसजनों में खुशी की लहर दौड़ गयी और सबके सब कांग्रेस मुख्यालय की तरफ निकल पड़े। पार्टी मुख्यालय सदाकत आश्रम वहाँ एकत्रित कांग्रेसियों के ह्यराहुल गाँधी जिन्दावादह्ल और ह्यराहुल तुमसंघर्ष करो हम तुम्हारे साथ हैंह्ल के नारों से घंटों गूंजता रहा और मिठाइयों का दौर चलता रहा। इस जश्न में शामिल लोगों में पूर्व मंत्री कृपा नाथ पाठक, विधान पार्षद प्रेम चन्द्र मिश्र, विधायक विजेंद्र चौधरी, निर्मल वर्मा, ब्रजेश पाण्डेय, राज कुमार राजन, पूर्व विधायक प्रमोद कुमार सिंह, आलोक हर्ष, लाल बाबू लाल, असित नाथ तिवारी, ज्ञान रंजन, कुमार आशीष, चन्द्र प्रकाश सिंह, शशि रंजन, डॉ. संजय यादव, शशि कान्त तिवारी, मंजीत आनंद साहू, प्रदुमन यादव, अखिलेश्वर सिंह, दुर्गा गुप्ता, आदित्य कुमार पासवान, मिर्नाल अनामय, वसी अख्तर, नीतू सिंह निषाद, धनञ्जय शर्मा, गुरुदयाल सिंह, निधि पाण्डेय, रंजित यादव, संतोष श्रीवास्तव, यशवंत कुमार चवन, विमलेश तिवारी, सत्येन्द्र पासवान, राजीव कुमार मेहता, धीरेन्द्र कुमार सिंह, अजय प्रकाश सिंह, सुदीय शर्मा प्रमुख हैं।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत का सपना साकार कर रहें पीएम मोदी : नित्यानंद

- बोलें - कांग्रेस बो रही उत्तर व दक्षिण भारत के बीच नफरत के बीज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने कांग्रेस पर जोरदार हमला बोला है। श्री राय ने कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे प्रियांक खड़गे का उत्तर व दक्षिण भारत के बीच नफरत व दरार पैदा करने वाला बयान घोर आपत्तिजनक है। इसकी जितनी निंदा की जाए कम है। एकतरफ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक भारत-श्रेष्ठ भारत के संकल्प को साकार कर रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के बेटे जो प्रियांक खरगे उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के बीच दरार पैदा करने वाली बातें कर रहे हैं। प्रियांक खरगे का बयान देश की एकता और एकजुटता में दरार पैदा करने के मंसूबे से दिया गया है। कांग्रेस को समझना होगा कि देश सबका है। देश के नागरिक देश के लोग हर राज्य में जाते और रहते भी हैं। देश के लोगों को देश के किसी भी राज्य में जाने का अधिकार है। लेकिन कांग्रेस की सोच हमेशा नफरत को बढ़ावा देने की रही है। कांग्रेस ने अतीत में भी देश के साथ यही किया है। आज भी उत्तर और दक्षिण भारत के बीच नफरत के बीज बो रही है। देश की जनता कांग्रेस की साजिश को कभी भी सफल नहीं होने देगी।

गरीब बच्चों का भविष्य कुचलने पर आमदा है केन्द्र सरकार : राजीव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जदयू के राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि आम जनता को मंहगाई तले दबाने के बाद अब केंद्र सरकार गरीब छात्रों का जीवन रौंदने पर आमदा है। युवाओं को 2 करोड़ सालाना रोजगार देने के अपने जुमले से ठगने के बाद केंद्र सरकार अब उनकी जेब और पेट दोनों काटने पर आमदा है। यह लोग किस तरह गरीब बच्चों का भविष्य कुचलने पर आमदा है यह हॉस्टल/पीजी के किराये पर 12 प्रतिशत जीएसटी लगाने के इनके फैसले से पता चलता है। इस नादिरशाही फैसले से पिछड़े-अतिपिछड़े, दलित व सभी जातियों के कमजोर तबके के लोग प्रभावित होने वाले हैं। उन्होंने कहा कि सत्ता के घमंड में भाजपा इस कदर अंधी हो चुकी है कि उन्हें यह तक ध्यान नहीं है कि हॉस्टल/पीजी में वैसे ही परिवारों के बच्चे पढ़ते है जिनकी जेब फ्लैट या किराये के मकानों के खर्च का भार सहन नहीं कर सकते। गरीब माँ-बाप अपना पेट काट-काट कर अपने बच्चों को इस उम्मीद में भेजते हैं कि एक दिन पढ़-लिख कर वह अपना भविष्य संवार सके। बाहर रहने वाले उनके बच्चे पहले ही बढ़ी मंहगाई को लेकर खाने-पीने में तंगी झेल रहे थे और अब सरकार का इस फैसले से उनपर दोहरी मार पड़ने वाली है।

राष्ट्रीय महासचिव ने कहा कि दिल्ली-कोटा में रहने वाले बच्चों का कई मकान मालिकों द्वारा आर्थिक दोहन किये जाने की शिकायतें लगातार आती रहती हैं। अब इस फैसले से सरकार ने आम गरीबों के बच्चों के शोषण का एक और रास्ता खोल दिया है। जो मकान मालिक गरीब बच्चों की मजबूरी का फायदा उठाने के आदि हैं वह इस निर्णय की आड़ में निश्चय ही किराये में मनमानी वृद्धि करेंगे, जिसके कारण कई छात्रों का भविष्य अधर में लटक जाएगा।

उन्होंने कहा कि बिहार के बच्चे केंद्र सरकार के इस फैसले से सबसे ज्यादा प्रभावित होने वाले हैं। हर कोई जानते हैं कि बड़े शहरों में रहकर सिविल सर्विसेज, इंजीनियरिंग, मेडिकल और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं करने वाले विद्यार्थियों में बिहार के छात्र-छात्राओं की संख्या सर्वाधिक रहती है। केंद्र सरकार इस फैसले से उन पर कहर टूट पड़ेगा। जदयू नेता ने कहा कि सरकार को सोचना चाहिए कि कोरोना काल के असर से देश अभी भी नहीं उबर पाया है। लोगों की आमदनी घटी है वहीं बेरोजगारी में भी वृद्धि हुई है। हालिया आये पीडब्ल्यूसी ग्लोबल कंज्यूमर इनसाइट्स पल्स सर्वे के मुताबिक आज तकरीबन 74 प्रतिशत भारतीय अपनी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति को लेकर चिंतित हैं। इनमें से 63 प्रतिशत लोगों ने तो गैर-जरूरी खर्च में कटौती करना भी प्रांरभ कर दिया है। वहीं 50ः लोगों का कहना है कि दुकान में खरीदारी करते समय उन्हें बढ़ती कीमतों का अनुभव होता है। यह दिखाता है कि शहरों से लेकर गांवों तक लोग मंहगाई से किस प्रकार त्रस्त हैं। ऐसे में इस तरह का निर्णय लोगों की हिम्मत को और तोड़ देगा। भाजपा यह जान ले कि युवाओं के हितों से खिलवाड़ किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जा सकती। इसीलिए अविलंब इस निर्णय को वापस ले।

राजद ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का किया स्वागत

पटना। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने राहुल गांधी के खिलाफ अवमानना मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा आज दिए गए फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि यह जीत सिर्फ राहुल गांधी की हीं नहीं बल्कि पूरे देश की जनता की जीत है।

ये सत्य और न्याय के साथ हीं देश के संवैधानिक व्यवस्था और लोकतांत्रिक मयार्दाओं की जीत है। जो लोग अहंकार वश सत्ता का बेजा इस्तेमाल करते हुए संसदीय लोकतंत्र को रौंदने और अधिनायकवादी व्यवस्था स्थापित करने का सोच पाल रहे हैं, सुप्रीम कोर्ट का यह ऐतिहासिक फैसला उनके गाल पर एक करारा तमाचा है।

पारस ने हुलास पाण्डेय के पुत्र के असमायिक निधन पर जताया दुख

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व विधान पार्षद हुलास पाण्डे के 15 वर्षीय पुत्र आयुष कुमार के असमायिक निधन पर राष्ट्रीय लोक जनशक्ति पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केन्द्रीय खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री पशुपति कुमार पारस तथा पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व समस्तीपुर सांसद प्रिंस राज ने गहरा शोक व्यक्त करते हुए श्री पारस ने आयुष के आत्मा की शांति तथा दुख की घड़ी में परिवार को सहनशक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की। प्रदेश प्रवक्ता ललन कुमार चन्द्रवंशी ने बताया कि पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व सांसद सूरजभान सिंह ने भी इस दुख की घड़ी में हुलास पाण्डेय के आवास जाकर शोक संतप्त परिवारजनों से मिलकर सांत्वना दी, आगे चन्द्रवंशी ने बताया कि इस दुख की घड़ी में पार्टी के पूर्व विधायक सुनील पाण्डेय, राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रवण कुमार अग्रवाल, डॉ मनीष आनन्द, राजेन्द्र विश्वकर्मा के अलावे पार्टी के अनेकों नेता हुलास पाण्डेय के परिवार के दुख की घड़ी में शामिल होकर शोक संतप्त परिवार को संत्वाना दी। शोक की इस घड़ी में पार्टी के अनुसूचित जाति/जनजाति के राष्ट्रीय अध्यक्ष कृष्ण राज पासवान, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विरेश्वर सिंह, दलित सेना के प्रदेश अध्यक्ष घनश्याम कुमार दाहा, प्रदेश उपाध्यक्ष अम्बिका प्रसाद बिनू, पारसनाथ गुप्ता, उपेन्द्र यादव सहित पार्टी के सभी नेताओं ने दुख व्यक्त की और मृत आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना की।

स्वच्छ घर जितना ही जरूरी है नगर का स्वच्छ होना : कौशल

ब्रांड एंबेसडर नीतू नवगीत ने की स्वच्छ सर्वेक्षण में भाग लेने की अपील

पटना। स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से पटना नगर निगम स्वच्छता जागरूकता टीम द्वारा अंबेडकर इंस्टीट्यूट ऑफ हायर एजुकेशन में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसका संस्थान के निदेशक डॉ कौशल कुमार, कोऑर्डिनेटर जितेंद्र कुमार तथा पटना नगर निगम स्वच्छता जागरूकता अभियान की ब्रांड एंबेसडर डॉ नीतू कुमारी नवगीत ने किया। कार्यक्रम में संस्थान के प्रबंध निदेशक डॉ कौशल कुमार ने कहा कि स्वच्छता का हमारे जीवन में विशेष महत्व है। स्वच्छता के बिना हर उपलब्धि अधूरी है। भारत विश्व की आर्थिक महाशक्ति के रूप में तभी सम्मान पाएगा जब हम स्वच्छ आदतें विकसित करेंगे। स्वच्छ घर जितना जरूरी है स्वच्छ नगर भी उतना ही जरूरी है। घर की सफाई हम रोज करते हैं। नगर की सफाई के लिए कम से कम सप्ताह में 2 घंटे का श्रमदान करें। पटना नगर निगम की ब्रांड एंबेसडर डॉ नीतू कुमारी नवगीत ने स्वच्छता के कई गीतों की प्रस्तुति करके सबको स्वच्छ सर्वेक्षण 2023 में भाग लेने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने घर घर अलख जगायेंगे स्वच्छ भारत बनेगा,साफ-सफाई अपनाएंगे स्वच्छ भारत बनेगा तथा सबसे बड़ा है गहना साफ रहना उत्तम दवा है सफाई बापू का कहना जैसे गीत गाकर सफाई के महत्व को समझाया। संस्थान के विद्यार्थियों ने नीतू नवगीत के सुर में सुर मिला कर गीत गाए और स्वच्छता का संकल्प लिया। इस अवसर पर आयोजित क्विज प्रतियोगिता में विवेक कुमार वर्मा,अंकित कुमार गुप्ता,साक्षी कुमारी, पुष्पा रानी,शुभम कुमार,अनुपम कुमारी,सुधांशु रंजन,विक्की सिंह,विशाल कुमार,मृत्युंजय कुमार, आंचल,स्नेहा शर्मा,सालवी मिश्रा, शाहनवाज आलम,निशु कुमारी, रूपेश कुमार,अपेक्षा प्रकाश,सेंगर विशाल ने प्रश्नों का सही उत्तर देकर इनाम प्राप्त किया। मेरा शहर मेरी जवाबदेही विषय पर आयोजित वाद विवाद प्रतियोगिता में अपेक्षा ने पहला स्थान, पूजा कुमारी ने दूसरा स्थान तथा साक्षी कुमारी ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। आदित्य जीत, मनजीत, सौम्या, लक्ष्मी कुमारी, राहुल कुमार, अनीशा, राजा बाबू, प्रकाश कुमार, दिव्या जयसवाल एवं शिव हरी को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

2024 में प्रदेश के सभी सीटों पर भाजपा की होगी जीत : सम्राट

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पाटी के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने कहा कि जदयू के अध्यक्ष लोकतंत्र के मंदिर लोकसभा में जिस तरह की बोली बोल रहे, उसे देश और दुनिया देख रही है। लोकसभा में जदयू अध्यक्ष का एक सीनियर सदस्य के साथ व्यवहार जगजाहिर हो गया है, जिसका भाजपा विरोध करती है। श्री चौधरी ने कहा कि उनकी भाषा से उनकी अहंकार झलकती है। नरेंद्र मोदी के फिर से पीएम बनने के एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि इसमें कोई शक नहीं है । उन्होंने कहा कि पूरा देश नरेंद्र मोदी जी के साथ है। फिर से मोदी के नेतृत्व में केंद्र की सरकार बनेगी। इधर, भागलपुर में धरना और अनशन पर बैठे भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष रोहित पांडेय सहित अन्य कार्यकताओं पर रात में लाठीचार्ज किए जाने पर आक्रोश व्यक्त करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि बिहार में लोकतंत्र समाप्त हो गया है । नीतीश कुमार की सरकार गुंडों की तरह व्यवहार कर रही हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के लोग शांतिपूर्ण तरीके से धरना, अनशन पर बैठे थे, इन्हे पुलिस द्वारा पीटा गया। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ मीडिया को भी बख्शा नहीं गया। ऐसी घटनाओं से बिहार शर्मसार हो रहा है। उन्होंने कहा कि अगर नीतीश कुमार में थोड़ी भी नैतिकता बची हो तो उन्हे इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि लोकसभा चुनाव को लेकर भाजपा कार्य को आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि महागठबंधन के नेता समझते हैं कि दो नेता के मिल जाने से बिहार जीत लेंगे, लेकिन जिस तरह विधानसभा उपचुनाव में तीन सीटों में से दो सीट पर हराने का काम किया गया। उसी तरह 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने तय किया किया है कि बिहार में 40 में से 40 सीट जीतेंगे।

दिव्यांगता निवारण की हस्तक्षेप-प्रक्रिया में माता-पिता की समान भागीदारी जरूरी

हेल्थ इंस्टिट्यूट में तीन दिवसीय राष्ट्रीय सतत पुनर्वास प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ उद्घाटन

पटना। शारीरिक-मानसिक चुनौतियों का सामना कर रहे बच्चों में बाधा-निवारण की हस्तक्षेप-प्रक्रिया में माता-पिता की समान भागीदारी होनी चाहिए। यह जरूरी है कि ऐसे बच्चों के माता-पिता वीयज्ञानिक और मनो-वैज्ञानिक रूप से अपने बच्चे की समस्याओं को ठीक से समझें तथा चिकित्सकों, विशेष-शिक्षाकों और पुनर्वास-कर्मियों को उनके कार्य में निपुणता से सहयोग करें । इसलिए आवश्यक है कि ऐसे माता-पिता भी इन विषयों में आधारभूत ज्ञान अर्जित करें। यह बातें शुक्रवार को भारतीय पुनर्वास परिषद भारत सरकार के सौजन्य से बेउर स्थित इंडियन इंस्टिच्युट औफ हेल्थ एडुकेशन ऐंड रिसर्च में विकलांगों के पुनर्वास के कार्य में अपनी सेवाएँ दे रहे विशेषज्ञों एवं विशेष शिक्षकों को आधुनिक तकनीक से अवगत कराने हेतु आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय सतत पुनर्वास प्रशिक्षण कार्यशाला के उद्घाटन-समारोह की अध्यक्षता करते हुए, संस्थान के निदेशक-प्रमुख डा अनिल सुलभ ने कही। समारोह के मुख्य अतिथि एवं विश्वविद्यालय सेवा आयोग, बिहार के अध्यक्ष डा राजवर्द्धन आजाद ने कहा कि दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग आदरणीय होते हैं। वे चाहे विशेष-शिक्षक हों, पुनर्वास-कर्मी हों अथवा विशेष चिकित्सक, सभी समर्पण की भावना से कार्य करते हैं। यदि उनमे समर्पण नहीं होगा, तो वे दिव्यांगों की कोई सेवा नहीं कर पाएँगे। उन्होंने कहा कि बाच्चों के सर्वांगीण विकास में माता-पिता की सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वे अपने बच्चों को जन्म से लेकर बड़ा होता हुआ देखते हैं। इसलिए वे उनके व्यवहार और समस्याओं को अन्य किसी की तुलना में अधिक समझ सकते हैं। यदि माता-पिता, विकलांगता के संबंध में बुनियादी प्रशिक्षण प्राप्त करें तो उनकी समस्याओं के निवारण में बहुत उपयोगी हो सकते हैं। विशिष्ट अतिथि और आर्मी आशा स्कूल की प्रधानाचार्य कल्पना झा ने कहा कि दिव्यांगजनों की जो समस्याएँ होती हैं, उन्हें ठीक से समझना आवश्यक है। छोटे बच्चों की समस्याओं को माताएँ भली भाँति समझ पाती हैं। इसलिए पुनर्वास के कार्यों में माता-पिता को सम्मिलित करना जरूरी है। संसाधन शिक्षक डा नीरज कुमार वेदपुरिया और प्रो प्रेम लाल राय तथा स्वाति दारुका ने भी अपने वैज्ञानिक-पत्र प्रस्तुत किए। अतिथियों का स्वागत संस्थान के विशेष शिक्षा विभाग के अध्यक्ष तथा कार्यशाला के समन्वयक प्रो कपिलमुनि दूबे ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन संतोष कुमार सिंह ने किया। प्रशिक्षण-कार्यशाला में, देश के विभिन्न राज्यों से दो सौ से अधिक विशेष शिक्षक एवं पुनर्वासकर्मी भाग ले रहे हैं। उद्घाटन-समारोह में, प्रो संजीत कुमार, डा संजीता रंजना, डा नवनीत कुमार, प्रो जया कुमारी, प्रो चंद्रा आभा, प्रो मधुबाला कुमारी, प्रो प्रिया कुमारी, डा आदित्य ओझा, देवराज कुमार, राणु कुमार, शुभ लक्ष्मी कुमारी, रजनीकांत तथा संस्थान के प्रशासी पदाधिकारी सूबेदार संजय कुमार समेत बड़ी संख्या में संस्थान के शिक्षक और छात्रगण उपस्थित थे।

आई फ्लू ने बढ़ाई परेशानी, नहीं थम रहा प्रकोप

पटना। राजधानी पटना में कंजंक्टिवाइटिस यानी आई फ्लू का प्रकोप थमने का नाम नहीं ले रहा है। लोगों की परेशानी बढ़ी है। मेडिकल दुकानों में दवा के लिए तांता लगा हुआ है। शहर से लेकर गांव तक के लोग इसकी चपेट में आ रहे हैं। ज्यादतर बच्चे इससे ग्रसित हो रहे हैं। कंजंक्टिवाइटिस को सामान्य शब्दों में आई फ्लू या आंख आना कहा जाता है। यह एक संक्रमण है जो कंजंक्टिवा में सूजन आने के कारण होता है। बरसात के मौसम में आई फ्लू का रिस्क ज्यादा बढ़ जाता है क्योंकि मौसम में नमी के कारण वायरस, बैक्टीरिया और एलर्जी बढ़ने लगती है।

कंजंक्टिवाइटिस में आंखों का सफेद हिस्सा गुलाबी या लाल दिखने लगता है, इसलिए इसको पिंक या सामान्य लोगों की भाषा में कहें तो आंख आना के नाम से भी जाना जाता है। आंखों में खुजली, सूजन और जलन, आंखों का लाल होना,रौशनी से दिक्कत, आंख से सफेद चिपचिपा पदार्थ निकलना आई फ्लू के लक्षण हैं। कंजंक्टिवाइटिस यानी ईई फ्लू किसी ऐसी चीज के संपर्क में आने से जिससे आपको एलर्जी है जैसे धूल के कण, पालतू जानवरों के फर, या कुछ दवाओं से हो सकता है.यह ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आने से भी फैलता है जो पहले से इसका शिकार हो।

चिकित्सक का कहना है कि आई फ्लू होने पर स्वयं चिकित्सा से बचना चाहिए और चिकित्सक से परामर्श के बाद हीं कोई दवा लेनी चाहिए.दूसरों के रूमाल और तौलिया का प्रयोग बिलकुल नहीं करना चाहिए। आई फ्लू होने पर चश्मा का प्रयोग करना चाहिए। बताया कि अपने हाथों की साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें और साफ तौलिया का प्रयोग करें. किसी दूसरे की तौलिया या रुमाल के इस्तेमाल से बचें। उन्हों कहा कि आई फ्लू संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से हो सकता है। इसलिए आई फ्लू से संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से बचना चाहिए।

सत्ता के लिए पलटी मारने वाले लोकलाज की बात न करें : मोदी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार के पूर्व डिप्टी सीएम और बीजेपी सांसद सुशील कुमार मोदी ने कहा है कि जिन लोगों ने नौकरी के बदले जमीन मामले में लालू परिवार के खिलाफ पुख्ता सबूत जांच एजेंसियों को दिये और बाद में लालू प्रसाद से ही डील कर सत्ता बचा ली, उनके मुंह से लोकलाज की बात अच्छी नहीं लगती। सुशील मोदी ने कहा कि यदि हिम्मत हो, तो ललन सिंह माफी मांगते हुए एलान करें कि लालू परिवार दूध का धुला है और उस पर भ्रष्टाचार के सबूत उपलब्ध करा कर उन्होंने गलती की। उन्होंने कहा कि यदि भ्रष्टाचार के मुद्दे पर लोकलाज का ख्याल होता तो चारा घोटाला में सजायाफ्ता लालू प्रसाद से हाथ नहीं मिलाया होता। उन्होंने कहा कि जमीन के बदले नौकरी और आईआरसीटीसी मामले में आरोपी तेजस्वी यादव से हाथ मिलकर राज करना क्या लोकलाज है? नीतीश कुमार ने कई मामलों में तेजस्वी यादव को 2025 के लिए अपना उत्तराधिकारी क्यों घोषित कर दिया, क्या यह लोकराज का सम्मान है?

प्रधानमंत्री 6 अगस्त को 508 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए आधारशिला रखेंगे

पटना । प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एक ऐतिहासिक पहल के तहत 6 अगस्त को सुबह 11 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से देश के कोने-कोने में 508 रेलवे स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य की आधारशिला रखेंगे। पूर्व मध्य रेल द्वारा जारी बयान में बताया गया है कि प्रधानमंत्री अक्सर अत्याधुनिक सार्वजनिक परिवहन के प्रावधान पर जोर देते रहे हैं। रेलवे को देश भर में लोगों के परिवहन का पसंदीदा साधन बताते हुए उन्होंने रेलवे स्टेशनों पर विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराने के महत्व पर जोर दिया। इस विजन से प्रेरित, देश भर में 1309 स्टेशनों के पुनर्विकास कार्य के लिए अमृत भारत स्टेशन योजना शुरू की गई थी। इस योजना के हिस्से के रूप में, प्रधानमंत्री द्वारा 508 स्टेशनों के पुनर्विकास के लिए आधारशिला रखी जा रही है। इन स्टेशनों का पुनर्विकास 24,470 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से किया जाएगा। शहर के दोनों किनारों को समुचित रूप से जोड़ते हुए इन स्टेशनों को सिटी सेंटर के रूप में विकसित करने के लिए मास्टर प्लान तैयार किए जा रहे हैं। यह एकीकृत दृष्टिकोण रेलवे स्टेशन के आसपास के क्षेत्र पर केंद्रित शहर के समग्र शहरी विकास के विजन से प्रेरित है। ये 508 स्टेशन देश के 27 राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में स्थित हैं, जिनमें उत्तर प्रदेश में 55, राजस्थान में 55, बिहार में 49, महाराष्ट्र में 44, पश्चिम बंगाल में 37, मध्य प्रदेश में 34, असम में 32, ओडिशा में 25, पंजाब में 22, गुजरात में 21, तेलंगाना में 21, झारखंड में 20, आंध्र प्रदेश में 18, तमिलनाडु में 18, हरियाणा में 15, कर्नाटक में 13 स्टेशन शामिल हैं। पुनर्विकास कार्य से अच्छी तरह से सुव्यवस्थित यातायात सुविधा, इंटर-मोडल एकीकरण और यात्रियों के मार्गदर्शन के लिए अच्छी तरह से डिजाइन किए गए चिन्हों को सुनिश्चित करने के साथ-साथ यात्रियों के लिए आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध होंगी। स्टेशन भवनों का डिजाइन स्थानीय संस्कृति, विरासत और वास्तुकला से प्रेरित होगा।

फुलवारीशरीफ के अंचल अधिकारी पर 5 हजार का डीएम ने लगाया दंड

डीएम द्वारा की गयी लोक शिकायत एवं सेवा शिकायत के 12 मामलों की सुनवाई तथा समाधान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जिलाधिकारी डॉ. चंद्रशेखर सिंह द्वारा अपने कार्यालय-कक्ष में बिहार लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम, 2015 के तहत द्वितीय अपील में तथा बिहार सरकारी सेवक शिकायत निवारण नियमावली, 2019 के तहत प्रथम अपील में शिकायतों की सुनवाई की गयी और उसका निवारण किया गया। लोक शिकायत निवारण में लापरवाही बरतने के आरोप में लोक प्राधिकार फुलवारीशरीफ के अंचल अधिक

संक्षिप्त खबरें

गैस एजेंसी के भेन्डर से बाइक सवार अपराधियों ने लूटी 44 हजार रुपए

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के राघोपुर में शुक्रवार को बाइक सवार अपराधियों ने गैस एजेंसी के भेन्डर से हथियार का भय दिखाकर लगभग 44 हजार रुपए लूट लिया। घटना के संबंध में बताया जाता है कि एक गैस एजेंसी का भेन्डर घर-घर सिलेंडर पहुंचा कर वसूली गई रकम लेकर लौट रहा था। इसी क्रम में पूर्व से घात लगाए दो बाइक सवार अपराधियों ने जैसे ही गैस एजेंसी की गाड़ी राघोपुर सुनसान स्थान पर पहुंचा तो गाड़ी रोक दिया और कहा कि दिन भर का वसूली का पैसा लाओ। इस पर भेन्डर पैसा देने से आनाकानी करते हुए जैसे ही मोबाइल निकाला तभी बदमाशों ने हथियार का भय दिखाकर मोबाइल छीन लिया और दिन भर के कलेक्शन की राशि करीब 44 हजार रुपए छिनकर बाइक से फरार हो गया। थानाध्यक्ष संदीप कुमार पाल ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि छानबीन की जा रही है।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर कांग्रेस कार्यकताओं में हर्ष

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत कांग्रेस कार्यालय कल्याणपुर में कांग्रेस कार्यकताओं की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रखंड अध्यक्ष कपिलेश्वर कुंवर कर रहे थे। बैठक में कांग्रेस पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी की मानहानि केस में सुप्रीम कोर्ट के द्वारा दोषसिद्धि पर रोक लगाने व सांसदी बहाल करने पर कांग्रेस कार्यकर्ता सहित आई एन डी आई ए गठबंधन के कार्यकर्ता हर्ष व्यक्त करते हुए सर्वोच्च न्यायालय के प्रति सम्मान व्यक्त किया। बैठक में रामाधार चौधरी, संजीव कुमार ठाकुर, ओम प्रकाश पासवान, लक्ष्मी पासवान, अजीत कुमार सिंह, कमल किशोर, रणधीर कुमार, रमाकांत चौधरी, अशोक कुमार सिंह, चंद्र भूषण सिंह, शंकर यादव, भोला प्रसाद अरुण, मणि शंकर चौधरी आदि उपस्थित हुए।

पुलिस ने 31 कार्टन विदेशी शराब किया बरामद

कल्याणपुर, समस्तीपुर। चकमेहसी थाना क्षेत्र के मालीनगर ध्रुवगामा गांव से पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर 31 कार्टन विदेशी शराब बरामद किया है। वहीं पुलिस को देखते ही शराब कारोबारी भागने में सफल रहा। पुलिस ने बताया कि सभी शराब कारोबारी को चिन्हित कर लिया गया। उसे जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा। वहीं थानाध्यक्ष चन्द्र किशोर टूडू ने बताया कि शराब कारोबारी को चिन्हित करते हुए प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

पुत्र की हत्या मामले में पिता ने 5 लोगों पर नामजद कराई प्राथमिकी दर्ज

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के अकबरपुर गांव में रामबाबू राय के 15 वर्षीय पुत्र पिंटू कुमार की गोली मारकर हत्या मामले में मृतक के पिता रामबाबू राय 5 लोगों को नामजद करते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है। मृतक पिंटू कुमार गुरुवार को अपने खेत पटवन कर घर लौट रहा था। इसी दौरान एक गाछी में लेकर जाकर गोली मारकर हत्या कर दिया गया था। वहीं थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि दिए गए आवेदन के आधार पर पुलिस जांच में जुटी गई है।

गाली-गलौज एवं धमकी देने की प्राथमिकी दर्ज

बेगूसराय जिला के बरौनी बिहट वार्ड 23 निवासी शंकर दास के पुत्र आशीष कुमार ने गाली गलौज एवं धमकी देने की प्राथमिक विभूतिपुर थाना में दर्ज करवाया है। जिसमें विभूतिपुर वार्ड 05 निवासी लालधारी महतो के पुत्र संतोष कुमार को नामजद किया है। दर्ज प्राथमिकी के माध्यम से पीड़ित ने बताया कि डेढ़ वर्ष पूर्व मैं अपना 6 चक्का टीपर वाहन जिसका पंजीयन संख्या बीआर 09 आर 4319 भाड़ा पर संतोष कुमार को दिया। संतोष कुमार पूर्व में चालक का काम करता था तथा खोकसाहा से पूरब जय महाकाल ट्रांसपोर्ट के नाम से बालू गिट्टी बेचता है। बराबर हर माह भाड़ा की राशि दे दिया करता था इधर कुछ दिनों से भाड़ा नही दिया तो 25 मार्च को उनके डीपो पर पूछने गया तो देखा गाड़ी नही थी। पूछने पर बताया बालू लाने गया है। शाम तक गाड़ी नहीं आने पर पुनः पूछा तो गाली गलौज कर के भगा दिया एवं धमकी दिया की जहां जाना है जाओ तुमको गाड़ी नहीं मिलेगा।

निमार्णाधीन मकान में शौचालय की टंकी की सेंटरिंग खोलने के दौरान दम घुटने से दो की मौत

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर नगर थाना क्षेत्र के मगरदही वार्ड नंबर 36 डॉन बॉस्को स्कूल के पास एक निमार्णाधीन मकान में शौचालय की टंकी की सेंटरिंग खोलने के दौरान दम घुटने से दो लोगों की मौत हो गई। मृतकों में एक मिस्त्री और एक मजदूर बताया गया है। जिनकी पहचान वैनी ओपी के चंदौली के डोरापार वार्ड 8 निवासी जटहु दास के पुत्र अमरजीत कुमार दास (35 वर्ष) और मनोज महतो के पुत्र सन्नी कुमार (22 वर्ष) के रूप में हुई है। वहीं, घटना के बाद ठेकेदार मौके से फरार हो गया। वहीं घटना की सूचना उपरांत पहुंची पुलिस के द्वारा लोगों के सहयोग से शव को टंकी से किसी तरह से बाहर निकाला गया। पहुंची पुलिस के द्वारा शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा गया। जहां मृतक के गांव के मुखिया, पैक्स अध्यक्ष सहित अन्य ग्रामीणों की भारी भीड़ जमा हो गई थी। घटना के संबंध में बताया गया कि मगरदही स्थित रेलकर्मी के निमार्णाधीन मकान में ठेकेदार अमरजीत के द्वारा मिस्त्री और मजदूरों को काम के लिए घर से बुलाकर ले जाया गया था। ठेकेदार के निर्देश पर मिस्त्री और मजदूर सेंटरिंग खोलने का काम कर रहे थे। एक मजदूर छत का सेंटरिंग खोलने गया। वहीं मिस्त्री और एक मजदूर शौचालय की टंकी का स्लैब हटाकर टंकी का सेंटरिंग खोलने के लिए अंदर घुसे थे। जहां उनकी दम घुटने से मौत हो गई। इस घटना के बाद शव को टंकी में छोड़कर ठेकेदार वहां से फरार हो गया। अमरजीत अपने घर का अकेला कमाऊ था। उसके माता-पिता की मृत्यु पहले ही हो चुकी है। वहीं अमरजीत के परिवार में अब उसकी पत्नी और चार छोटे-छोटे बच्चे हैं। जिनके भरण-पोषण और परवरिश को लेकर संकट खड़ा हो गया। वहीं, सन्नी की शादी अभी नहीं हुई थी। घर में उसकी मां और पिता बाहर मजदूरी करते हैं। इस घटना के बाद से मृतक के गांव में कोहराम मचा हुआ है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो रहा था। वहीं घटना की सूचना पार सदर अस्पताल पहुंचे मृतक के गांव के मुखिया विजय महतो और व्यापार मंडल पूसा के अध्यक्ष प्रेम कुमार झा व अन्य ग्रामीणों के द्वारा मृतकों के आश्रितों को मुआवजा देने की मांग की जा रही थी। वहीं नगर थानाध्यक्ष विक्रम आचार्य ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस को घटनास्थल पर भेजा गया था। शव को जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। मृतक के परिजनों के द्वारा आवेदन किए जाने के बाद विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी।

24 घंटे बाद भी पिंटू हत्याकांड का पुलिस नहीं कर सकी खुलासा

कल्याणपुर, प्रात : किरण संवाददाता

कल्याणपुर थाना क्षेत्र के वीर सिंह पुर पंचायत के अकबरपुर टारी में रामबाबू राय के 15 वर्ष किशोरी पुत्र को गोली मारकर हत्या मामले में शुक्रवार तक 24 घंटे बीत गए। इसके बाद भी पुलिस हत्या मामले का खुलासा नहीं कर पाई है। हालांकि पुलिस अपराधियों के संभावित ठिकाने पर छापेमारी में जुटी गई। लेकिन पुलिस को कुछ हाथ ही नहीं लगा है अभी तक। जिसकी चर्चा स्थानीय स्तर पर पुलिस की कार्यशैली पर जितनी मुंह उतनी बातें हों रहीं थीं। किशोर के पिता रामबाबू राय ने अपराधी के विरुद्ध पांच पर नामजद प्राथमिकी दर्ज कराई है। लेकिन पुलिस इस हत्याकांड का अब तक खुलासा कर सकती है। जिसकी भी चर्चा जोरों पर हो रही है। जो पुलिस इस मामले कब तक खुलासा कर पाएगी। वहीं लोगों के बीच यह भी चर्चा हो रही है कि अपराधी पुलिस को खुल्लमखुल्ला खुली चुनौती जब जहां होता है घटना को अंजाम देकर फरार हो जाते हैं और पुलिस मुंह देखते ही रह जाती है। हालांकि लोगों ने यह बात कहा है कि पूर्व में भी कई घटनाओं को अपराधियों अंजाम द्वारा दिया गया है। लेकिन पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले को ठंडे बस्ते में डाल देती है। वैसे मामला जो भी हो वह पुलिस की जांच का विषय है। वहीं थानाध्यक्ष गौतम कुमार ने बताया कि किशोर के पिता के द्वारा प्राथमिक दर्ज कराई गई है। पुलिस ने उसे जल्द ही खुलासा कर ली जाएगी।

मानव तस्करी रोधी इकाई ने एक और नाबालिग को मजदूर बनने से बचाया

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। एंटी ह्युमन ट्रेफिकिंग यूनिट (क्षे.मु.) बेतिया आफिस 47 वी वाहिनी सशस्त्र सीमा बल रक्सौल की टीम ने 10 वर्षीय एक नाबालिग को मानव तस्करों के चंगुल से मुक्त कराया। शुक्रवार को इंस्पेक्टर मनोज कुमार शर्मा के नेतृत्व में एंटी ह्युमन ट्रेफिककिंग टीम ने रक्सौल कस्टम के पास से एक 10 वर्षीय बालक को मानव तस्करों के शिकंजे में जाने से रोक लिया, तत्पश्चात आगे की करवाई हेतु प्रयास संस्थान को सौंपा दिया गया। बालकों को तस्करों द्वारा झांसा दे कर नेपाल के मनोकामना में बुलाया जा रहा था। नबालिक को 10 बजे के करीब कस्टम के पास से बरामद किया गया, जबकि मानव तस्कर उसके पीछे से लैनिग कर रहा था। नाबालिग एक दिन पहले घर वालों को बिना बताये घर से निकल गया था। ए.एच.टी.यू टीम के इंस्पैक्टर मनोज कुमार शर्मा के साथ अन्य सहयोगी रहे हवलदार अरविंद द्विवेदी, आरक्षी निक्की कुमारी, स्वप्ना श्रृंगावरपु , शायरा बेगम, प्रयास से आरती कुमारी, जिला समन्वयक राज गुप्ता का भी सहयोग रहा।

तीन डिब्बे को छोड़ आगे निकली कोयला लदी मालगाड़ी

कपलिंग टूटने से हुए अलग मालगाड़ी के डिब्बे

- कुछ देर के लिए स्टेशन पर मची अफरातफरी

प्रात : किरण संवाददाता

बरहट(जमुई):-शुक्रवार की सुबह जमुई स्टेशन के समीप चलती कोयला लदी मालगाड़ी के दो हिस्सों में बंट गए।डिब्बे अलग होने के कारण मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। बताया गया कि मालगाड़ी का कपलिंग खुल जाने के कारण तीन डिब्बे अलग हो गया।जिसके कारण कुछ दूरी तक मालगाड़ी आगे चली गए। घटना जमुई रेलवे स्टेशन के पास सुबह 7.48 मिनट की है,वही 8.2 मिनट पर डब्बे को जोड़कर मालगाड़ी को आगे बढ़ाया गया।गनीमत रही कि ट्रेन इस दौरान डीरेल नहीं हुई वरना बड़ा हादसा हो सकता था।बताया जाता है कि झाझा की ओर से आ रही एक मालगाड़ी जिस पर कोयला लदा हुआ था, जिसके पीछे के तीन डिब्बे गाड़ी से अलग हो गए। इंजन से जुड़े डिब्बे आगे की ओर रवाना हो गए। ट्रेन की रफ्तार अधिक नहीं होने के कारण तीन डिब्बे जमुई स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर थोड़ी दूरी पर जाकर रुक गए। इस दौरान प्लेटफार्म पर ट्रेन पकड़ने के लिए आए यात्रियों में अफरा तफरी का माहौल बन गया।इस मामले में जमुई स्टेशन के अधिकारी कुछ भी बोलने से परहेज कर रहे हैं।वही प्रत्यक्षदशीर्यों ने बताया की कोयला लदा मालगाड़ी झाझा की ओर से आ रही थी।जो लुप लाइन होते हुए आगे स्टेशन की ओर जा रहा था।तभी मालगाड़ी का कपलिंग खुल जाने के कारण तीन डिब्बे अगल हो गए। इसकी सूचना तुरंत मालगाड़ी के ड्राइवर को दी गई और गाड़ी को रुकवा कर मालगाड़ी को बैक कराया गया।वहीं, 10 मिनट में दोनों अलग हुए डब्बे के कपलिंग को जोड़कर मालगाड़ी को आगे बढ़ाया गया। इस दौरान कोई नुकसान नहीं हुआ है,नही किसी ट्रेन की प्रभावित होने की सूचना है।

केवस और छतौना में राजद का पंचायत स्तरीय अंबेडकर परिचर्चा आयोजित

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर प्रखंड के केवस निजामत तथा छतौना पंचायत में शुक्रवार को राष्ट्रीय जनता दल द्वारा पंचायत स्तरीय अम्बेडकर परिचर्चा आयोजित किया गया। अध्यक्षता राजद प्रखंड अध्यक्ष संतोष कुमार यादव, संचालन जिला राजद प्रवक्ता राकेश कुमार ठाकुर तथा धन्यवाद ज्ञापन मुखिया राजीव राय ने की। समारोह का उद्घाटन स्थानीय विधायक सह बिहार विधानसभा के उप मुख्य सचेतक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने किया। आगत अतिथियों का स्वागत पाग, चादर, माला तथा मोमेंटो से किया गया। परिचर्चा को सम्बोधित करते हुए विधायक अख्तरुल इस्लाम शाहीन ने कहा कि बाबा साहेब स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मन्त्री, भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निमार्ताओं में से एक थे। बाबा साहेब की पहचान एक न्यायविद, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ और समाज सुधारक के रूप में रही हैं। भाग्य में विश्वास रखने के बजाए अपनी शक्ति और कर्म में विश्वास रखना चाहिए। मौके पर मुखिया राजीव राय, मुखिया लक्ष्मण पासवान, सरपंच किशोरी पासवान, पंचायत समिति सदस्य दिलीप राय, युवा राजद के प्रदेश महासचिव डॉ० सूरज कुमार दास, जिला राजद नेता जयशंकर ठाकुर, रविन्द्र कुमार रवि, ज्योतिष महतो, मनोज पटेल, मन्नू पासवान, मो० बशीर अहमद, मो० आसिफ इकबाल, मनोज कुमार राय, रंजीत कुमार रम्भू, जयलाल राय, संदीप सरकार तथा चिरंजन कुमार सहित सैकड़ों ग्रामीण मौजूद थे।

पश्चिम बंगाल के अपहृत की बरामदगी बाद जमालपुर थाने से फरार, पुलिस के उडे होश

कामयाबी के साथ नाकामी हाथ लगी, बैरंग लौटीं बंगाल पुलिस

- जवान को नींद लगने और रात्रि का लाभ उठाकर भाग गया अपहृत आयुष

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर :पश्चिम बंगाल से अपहृत आयुष की बरामदगी के दूसरे दिन शुक्रवार को जमालपुर पुलिस को चकमा देकर फरार हो गया। घटना की सूचना मिलते ही आदर्श थाना जमालपुर में सुबह से ही अफरातफरी मची रही। वहीं पुलिस अधिकारियों के होश उडे रहे हैं । हालांकि फरार आयुष शर्मा की खोजबीन में पुलिस सुबह से शाम तक जुटी रही, लेकिन कुछ अता-पता नहीं लग पाया है। गौरतलब है आदर्श थाना जमालपुर पुलिस ने गुरुवार को जमालपुर स्टेशन रोड स्थित एक ग्राहक सेवा केंद्र से अपहृत को बरामद किया था। वहीं ग्राहक सेवा केंद्र के संचालक को भी हिरासत में लेकर पूछताछ की गयी थी। अपहृत पश्चिम बंगाल स्थित बिग बाजार थाना क्षेत्र के बाबू हांड़ी निवासी रवि शर्मा का पुत्र आयुष शर्मा (20) है। परिजन ने पहले मिसिंग फिर अपहरण का मामला दर्ज कराया था। बंगाल पुलिस ने टॉवर लोकेशन और ग्राहक सेवा केंद्र से ऑनलाइन एक हजार रुपए ट्रांसफर पर सक्रिय हुई थी। तथा जमालपुर थाने को सूचित कर ग्राहक सेवा केंद्र से युवक को बरामद किया गया। इधर, पश्चिम बंगाल की बिग बाजार थाना से आयी पुलिस को खाली हाथ लौटना पड़ा है। थानाध्यक्ष सर्वजीत कुमार ने बताया कि सूचना पर त्वरित कार्रवाई की गयी और युवक को बरामद कर भी लिया गया। लेकिन रात्रि का लाभ उठाकर भाग गया है। उन्होंने कहा कि आयुष से पूछताछ से पता चला कि उसे अपने भाई से नहीं पटता था, इसलिए घर से भागकर जमालपुर आया। रुपये की दरकार हुई तो बंगाल से ही किसी अन्य संगे-साथी व रिश्तेदार से राशि मंगवाया था। जिस पर पुलिस को इसकी भनक मिली और बरामदगी की गयी। अब फिर से फरार हो गया है।

लायंस क्लब ऑफ पटना सोशल ने छात्राओं के बीच वितरण किया छाता एवं सेनेटरी नैपकिन

प्रात : किरण संवाददाता

पटना । पटना कन्या मध्य विद्यालय, कंकड़बाग की करीब 60 आर्थिक रूप से कमजोर छात्राओं को लायंस क्लब ऑफ पटना सोशल द्वारा छाता एवं सेनेटरी नैपकिन का पैकेट दिया गया। मौके पर मुख्यअतिथि के रूप में उपस्थित बिहार अग्रवाल महिला अध्यक्ष डॉ गीता जैन ने कहा कि लायंस क्लब ऑफ पटना सोशल द्वारा कमजोर वर्ग के लोगों की हमेशा मदद की जाती है। मौके पर लायंस क्लब के सचिव नितेश बिदासरिया ने कहा कि छाता रहने से बच्चियों को वर्षा एवं गर्मी में विद्यालय आने जाने में परेशानियों का सामना नही करना पड़ेगा। क्लब की हनी अग्रवाल ने 60 से अधिक छत्राओं को सेनेटरी नैपकिन का पैकेट दिया। कहा कि इससे गरीब छात्राएं आपना सही हाइजीन रख पाएगी। क्लब के कोषाध्यक्ष गौरव महरोत्रा एवं सदस्या हनी अग्रवाल ने विद्यालय के प्राचार्य महोदय को कहा कि भविष्य में भी क्लब इस विद्यालय की बच्चियों को सहयोग करता रहेगा। मौके पर विद्यालय के प्राचार्य सुबोध ओझा ने क्लब के प्रति अपना आभार प्रकट किया। मौके पर विद्यालय शिक्षकगण स्वाति कुमारी, नीतु सिंह एवं क्लब के विनम्र अग्रवाल, आकृति अग्रवाल हनी अग्रवाल, रुचि बिदासरिया, विशाल, रवि कपूर, शिखा आदि उपस्थित थे।

भारतीय अंगदान दिवस पर सिविल सर्जन और स्वास्थ्य कर्मियों ने अंगदान की ली शपथ

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय अंगदान दिवस के अवसर पर शुक्रवार को समस्तीपुर सिविल सर्जन कार्यालय में एक जागरूकता बैठक की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिविल सर्जन डॉ एसके चौधरी ने किया। कार्यक्रम में उपस्थित सदर अस्पताल के डॉक्टरों व स्वास्थ्य कर्मियों को संबोधित करते हुए सिविल सर्जन श्री चौधरी ने कहा कि अंग दान एक ऐसा दान है, जो किसी जरूरतमंद को नया जीवन दे सकता है। अंगदान भी महादान की श्रेणी में आता है। लड़का के समय बीतने के साथ अब लोगों में अंगदान को लेकर जागरूकता बढ़ी है। हालांकि इसकी संख्या अभी भी काफी कम है। उन्होंने कहा इसी के प्रति जागरूकता फैलाने को लेकर हर वर्ष 3 अगस्त को भारतीय अंगदान दिवस मनाया जाता है। वहीं सदर अस्पताल के उपाधीक्षक डॉ गिरीश कुमार ने कहा कि राष्ट्रीय अंगदान दिवस का उद्देश्य लोगों को अंगदान के प्रति जागरूक करना है, ताकि वे अंगदान करने का संकल्प लें। इस दौरान सिविल सर्जन एसके चौधरी ने अंगदान के प्रति प्रतिबद्धता को लेकर अंगदान प्रतिज्ञा करायी। मौके सदर अस्पताल के उपाधिक्षक डॉ गिरीश कुमार, डॉ सयैद मेराज इमाम एवं अन्य डॉक्टर व स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थे।

मेरी माटी-मेरा देश-वीरों को नमन कार्यक्रम के लिए भाजपा ने की बैठक

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी जिला कार्यालय पर आगामी कार्यक्रम को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक में उपस्थित जिलाध्यक्ष उपेन्द्र कुमार कुशवाहा ने बताया कि 9 अगस्त से 13 अगस्त के बीच मेरा माटी-मेरा देश-वीरों को नमन कार्यक्रम मनाई जाएगी। इस कार्यक्रम के माध्यम से भाजपा कार्यकर्ता जिले के स्वतंत्रता सेनानी में शहीद हुए एवं भारतीय सेना में शहीद हुए परिवारो से मिलकर उनका सम्मान करेंगे साथ ही उस परिवार के घर माटी का संग्रह करने का कार्य करेंगे। 14 अगस्त को भारत विभाजन विभीषका दिवस मनाया जाएगा, जिसमें सभी मंडलों में मौन जुलूस एवं कैंडल मार्च निकाला जाएगा साथ ही जिला मुख्यालय पर चित्र प्रदर्शनी भी लगाई जाएगी। 15 अगस्त को भाजपा जिला पदाधिकारी एवं मंडल अध्यक्ष के द्वारा अनुसूचित जाति के बस्ती में झंडोत्तोलन कार्यक्रम किया जाएगा। सभी कार्यक्रम के लिए प्रभारी तय हो गयी है। बैठक में जिला महामंत्री राजीव चौधरी, कौशल कुमार पांडेय, प्रेम दास, जिला उपाध्यक्ष प्रभात कुमार ठाकुर, जिला प्रवक्ता आदित्य कुमार, वरिष्ठ नेता मनोज जायसवाल, राजु पटेल उपस्थित रहे।

टीवीएस मोटर कंपनी ने लॉन्च किया टीवीएस जूपिटर जेडएक्स ड्रम

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। दुनिया भर में दोपहिया एवं तिपहिया वाहनों की प्रतिष्ठित निमार्ता टीवीएस मोटर कंपनी ने टीवीएस स्मार्ट कनेक्टेड टेक्नोलॉजी से युक्त नए टीवीएस जूपिटर जेडएक्स ड्रम के लॉन्च की घोषणा की है। आधुनिक फीचर्स से युक्त यह स्कूटर दो आकर्षक रंगों- स्टारलाईट ब्लू और एक एक्सक्लुजिव कलर ओलिव गोल्ड में उपलब्ध है, जो इसकी विजुअल अपील को कई गुना बढ़ा देता है। टीवीएस जूपिटर जेडएक्स ड्रम वेरिएन्ट टीवीएस स्मार्ट कनेक्टेड टेक्नोलॉजी से युक्त ब्लूटुथ कनेक्टेड डिजिटल क्लस्टर के साथ आता है, जो राइडर को आधुनिक फीचर्स के साथ राइडिंग का बेजोड़ अनुभव प्रदान करता है। स्मार्ट कनेक्टेड फीचर्स के साथ राइडर को कई फंक्षनेलिटीज के फायदे मिलते हैं जैसे टर्न-बाय-टर्न नेविगेषन, वॉइस असिस्ट, कॉल और क्लस्टर में एसएमएस एलर्ट। इस आधुनिक टेक्नोलॉजी के जरिए राइडर हमेशा कनेक्टेड बना रहता है तथा सुरक्षित एवं सहज राइड का अनुभव पा सकता है। इसके अलावा इस वेरिएन्ट में बिल्ट-इन मोबाइल चार्जर भी है, जिसके द्वारा राइडर राइड के दौरान जब चाहे अपनी डिवाइसेज को चार्ज कर सकता है। अपने दृष्टिकोण ज्यादा का फायदा पर खरा उतरते हुए आधुनिक फीचर्स से युक्त टीवीएस जूपिटर का यह नया वेरिएन्ट ज्यादा सुरक्षा, ज्यादा सुविधा और ज्यादा कनेक्टिविटी के फायदे देता है। टीवीएस जूपिटर जेडएक्स देश भर में टीवीएस मोटर कंपनी की डीलरशिप्स पर उपलब्ध है। दो नए आकर्षक रंगों- स्टारलाईट ब्लू और ओलिव गोल्ड में उपलब्ध नया लॉन्च किया गया टीवीएस जूपिटर स्मार्ट कनेक्टेड ड्रम वेरिएन्ट रु 84,468 (एक्स शोरूम दिल्ली) पर उपलब्ध है।

माधोपुर दिघरूआ पंचायत भवन परिसर में मुखिया की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के ताजपुर प्रखंड के माधोपुर दिघरूआ पंचायत भवन परिसर में विभागीय अधिकारी के निदेर्शानुसार मुखिया ब्रजनंदन राम के अध्यक्षता में शुक्रवार को बैठक का आयोजन कर विकसित बिहार के सात निश्चय योजना में से एक आर्थिक हल युवाओं को बल अंतर्गत संचालित योजनाएं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी उपस्थित क्षेत्र के विद्यार्थियों को दिया गया। वहीं जिसमें मुख्यमंत्री बिहार सरकार के महत्त्वाकांक्षी योजना आर्थिक हल युवाओं में बल के तहत जिला निबंधन एवं परामर्श केंद्र समस्तीपुर में संचालित तीनों योजनाओं जानकारी दिया गया। जिसमें बिहार स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड, स्वयं सहायता भत्ता योजना एवं कुशल युवा कार्यक्रम योजना की जानकारी देते हुए समस्तीपुर डीआरसीसी के सहायक प्रबंधक कौशिक कुमार सिन्हा ने उपस्थित लोगों को तीनो योजनाओं के विषय में विस्तार पूर्वक बताया गया तथा लोगों को योजना का समुचित लाभ को लेकर जागरूक किया। इस मौके पर उप मुखिया अतिश कुमार, पंचायत सचिव जगदीश पासवान, सुमित कुमार, चंद्रशेखर कुमार, नंदन कुमार, सहित सैकड़ों की संख्या में विद्यार्थी एवं अन्य लोग मौजूद थे।

आर्थिक तंगी से जूझ रहे ऑटो चालक की लाश बथान में फंदे से लटकती मिली

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर जिले के मुफस्सिल थाना क्षेत्र अंतर्गत कोरबद्धा गांव स्थित बांसवाड़ी में बीती रात युवक का शव फंदे से झूलते हुए मिला। युवक की पहचान कोरबद्धा गांव निवासी दिलीप महतो के रूप में की गई है। परिजनों को सूचना मिलते ही घर में कोहराम मच गया। बताया जाता है कि बीते रात युवक खाना खाकर चौक पर गया था। जिसके बाद वह घर नहीं लौटा। इसके बाद परिजन युवक को खोजने निकले। इसी दौरान घर से कुछ ही दूर पर बगीचे में स्थित बथान में बांस से फंदे में लटकी युवक की लाश मिली। यह देख परिजनों ने जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। इसके बाद वहां जुटे लोगों ने उसे उठाकर निजी अस्पताल लाया। जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। इसके बाद घटना की सूचना मुफस्सिल पुलिस को दी गई। मुफस्सिल पुलिस शव को जब्त कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। फिलहाल घटना का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। वहीं मुफ्फसिल थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार सिंह बताया कि घटना की सूचना के बाद पुलिस के द्वारा शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया गया है। परिजनों के द्वारा घटना के संबंध में कोई आवेदन नहीं दिया गया है। हालांकि पुलिस की प्रारंभिक जांच में घटना आपसी कलह को लेकर की गई आत्महत्या का प्रतीत हुआ है।

संक्षिप्त खबरें

महिला को मारपीट कर किया जख्मी

बरौली। बरौली नगर परिषद क्षेत्र के कोटवा गाव में हुई मारपीट में एक महिला को कुछ लोगों ने मारपीट कर जख्मी कर दिया। इस मामले में पीड़ित महिला प्रीति कुमारी ने सतीश पांडेय सहित छह लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है। पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

जाति गणना अंतिम चरण में: एसडीएम

विजयीपुर। विजयीपुर प्रखंड के बीआरसी वायट केन्द्र पर चल रहे जाति गणना का जायजा लेने पहुंचे हथुआ अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार ने कहा कि जाति गणना का कार्य अब अंतिम चरण में पहुंच गया है। पारिवारिक सर्वेक्षण प्रपत्र जांच कर जमा कराया जा रहा है। हाई कोर्ट के निर्देश के आलोक में जाति गणना का कार्य युद्ध स्तर पर चल रहा है। अब सिर्फ ऑनलाइन की औपचारिकता रह गई है। इसे भी यथाशीघ्र पूरा कर लिया जाएगा। विजयीपुर वायट केंद्र पर अनुमंडल पदाधिकारी राकेश कुमार ने बीडीओ राजीव कुमार तथा सीओ बीएन राय को भी तेजी से गणना करा कर ऑनलाइन डाटा एंट्री करने का निर्देश दिया बीडीओ राजीव कुमार ने बताया कि टेबल वाइज पर्यवेक्षक लगाए गए हैं। हर पंचायतों के लिए अलग-अलग टेबल पर परिवारिक प्रपत्रों को जांच कर जमा कराया जा रहा है। विदित हो कि हाईकोर्ट के आदेश के बाद बुधवार से जाति आधारित गणना जोर शोर से किया जा रहा है।

नीलाम पत्र वाद का दो वारंटी गिरफ्तार

थावे। थावे पुलिस ने नीलाम पत्र वाद में जारी किए गए वारंट के आधार पर छापेमारी कर दो वारंटी को घर से गिरफ्तार कर लिया। थानाध्यक्ष शशि रंजन कुमार ने बताया कि गिरफ्तार आरोपित गोपलामठ के दूधनाथ महतो और एकडेरवा के परमेन्द्र साह के पास बैंक का रुपये बकाया है। पूछताछ के बाद गिरफ्तार वारंटी को शुक्रवार को न्यायालय में प्रस्तुत कर दिया गया। छापेमारी के दौरान प्रशिक्षु एसआई प्रशांत कुमार आदि पुलिस बल मौजूद थे।

अंग्रेजी शराब के साथ आरोपी गिरफ्तार

विजयीपुर। शराब की विशेष छापेमारी में विजयीपुर पुलिस ने स्थानीय मेन रोड के प्रमोद कुशवाहा की दुकान के सामने रोड से एक मोटरसाइकिल सवार को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी का नाम उपेंद्र यादव है जो थाना क्षेत्र के बभनौली गांव का है। घटना गुरुवार की शाम की है जब पुलिस गश्ती पर निकली थी कि संदेह के आधार पर मोटरसाइकिल सवार को रोककर तलाशी लिया। तलाशी के दौरान उसके पास से 180 एमएल का चार बोतल शराब बरामद हुआ। शराब को जब्त करते हुए आरोपी को शुक्रवार को गोपालगंज न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।

बाइक के धक्के से युवक घायल

भोरे। भोरे-मीरगंज मुख्य सड़क पर तेजी और लापरवाही से बाइक चलाते हुए बाइक चालक ने भोरे सेंट्रल बैंक के सामने एक युवक को ठोकर मार दिया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। मामले को लेकर बाइक के नंबर के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। बताया जाता है कि थाने के घना छापर गांव के आजाद अंसारी का नाती अल्ताफ अंसारी उर्फ सोनू एक अगस्त को भोरे बाजार से सामान खरीद कर घर लौट रहा था।

एससी/ एसटी एक्ट का आरोपित गिरफ्तार

भोरे। भोरे थाने की पुलिस ने थाने के कल्याणपुर टोला रिखई बारी से एससी/ एसटी कांड के एक आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपित गांव का शैलेश कुमार उर्फ खटीक है। शुक्रवार को उसे न्यायिक किरासत में गोपालगंज भेज दिया गया।

शराब के नशे में एक गिरफ्तार

भोरे। भोरे थाने की पुलिस ने शराब के नशे में एक युवक को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार युवक यूपी के देवरिया जिले के खामपार थाने के छपिया मिश्र गांव का चंद्रिका यादव है। उसे कल्याणपुर गांव से गिरफ्तार किया गया।

दहेज की मांग को लेकर नवविवाहिता को मारपीट कर किया बेघर

भोरे। थाना क्षेत्र के खलवा बिन टोली गांव में एक नवविवाहिता को दहेज की मांग को लेकर मारपीट कर घर से बाहर कर दिया गया। इस संबंध में पीड़िता के बयान पर पुलिस ने प्राथमिकी करते हुए मामले की छानबीन शुरू कर दी है। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के खलवा बिन टोली के नंदू बिन के बेटे करन बीन से रीमा देवी की बीते जून माह में आपसी प्रेम प्रसंग को लेकर थावे दुर्गा मंदिर में शादी हुई थी।

पिस्टल के बल पर एक लाख 25 हजार लुटे

बरौली। बरौली नगर परिषद क्षेत्र के सिवान सरफरा मुख्य पथ किनारे भठी मोड़ के समिप स्थित सोनाक्षी ट्रेडर्स नाम के एक गला व्यवसाई को कुछ असामाजिक लोगों ने रंगदारी में पांच लाख रुपये की मांग की। मांग पूरी नही होने पर जान मारने की धमकी दी गयी। वही फोन कर गाली गलौच करने के साथ ही हथियार से लैस कुछ लोग दुकान पर पहुच कर एक गाड़ी में तोड़फोड़ किये साथ ही एक लाख 25 हजार लूट लिये व बाकी रुपये एक सप्ताह के अंदर नही देने पर जान मारने की धमकी देते हुए फरार हो गए।

विश्व स्तनपान सप्ताह का हुआ आगाज मां के दूध के महत्व की दी गयी जानकारी

सदर एसडीएम ने दीप प्रजवलित कर किया कार्यक्रम का शुभारंभ

थावे प्रात : किरण संवाददाता

स्तनपान को प्रोत्साहन देने के लिए प्रसूताओं को नवजात बच्चों को प्रथम आहार के रूप में मां के दूध के लिए प्रेरित करने के लिए केंद्रीय संचार व्यूरो सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा आयोजित विश्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। इसी को लेकर शुक्रवार को थावे के बाल विकास परियोजना कार्यालय में किया कार्यक्रम का अयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन सदर एसडीओ डॉ. प्रदीप कुमार ने दीप प्रज्वलित कर किया। उद्घाटन के पूर्व सदर एसडीओ को कार्यक्रम प्रमुख पवन कुमार सिन्हा ने अंगवस्त्र एवं पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया।

इसके साथ ही बीडीओ अजय प्रकाश राय, बीपीआरओ पुष्पेन्द्र पुष्पेश, सीडीपीओ मंजू कुमारी व प्रबंधक महिला हेल्प लाइन नाजिया प्रवीण सहित अन्य पदाधिकारी को भी अंगवस्त्र व पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत स्वागतम सब स्वागतम ,आनंद मंगल मंगलम स्वागत गान से शुरू हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते एसडीओ डॉ. प्रदीप कुमार ने कहा कि विश्व स्तनपान सप्ताह एक अगस्त से सात अगस्त तक प्रत्येक वर्ष मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि इसकी शुरूआत 1992 में हुयी थी। बच्चो का पहला वैक्सीन मां का दूध होता है। जन्म से एक घंटे के अंदर नवजात शिशु को मां का दूध अवश्य पिलाना चाहिए। इस दूध में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। नवजात को छह माह तक केवल मां का दूध ही पिलाना चाहिए। मां का दूध ही सर्वोत्तम आहार है। बाजार में बिकने वाले दूध को नही पिलाना चाहिए। इसके लिए आप लोग गांवो में जाकर गर्भवती महिलाओं को जागरूक करे। वही सीडीपीओ मंजू कुमारी ने कहा कि महिलाओं को जागरूक करना बहुत जरूरी है। कार्यक्रम प्रमुख पवन कुमार सिन्हा ने सेविका और सहायिका से कहा कि आप लोग महिलाओं को स्तनपान के लिए जागरूक करे। मां का पहला दूध सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसके साथ ही सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जागरूक करे। इस दौरान विश्व स्तनपान को लेकर उपस्थित लोगो को शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम के अंत मे स्तनपान को लेकर उपस्थित आंगनबाड़ी सुपरवाइजर, सेविका व सहायिका से प्रश्न भी पूछा गया। जिसमें 13 महिलाओं को गिफ्ट भी दिया गया। कार्यक्रम का आयोजन केंद्रीय संचार व्यूरो सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय छपरा द्वारा किया गया। मंच का संचालन सहायक क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी अमरेन्द्र मोहन ने किया। मौके पर स्वास्थ्य प्रबंधक खुशबू कुमारी, जिला समन्यक ब्रजकिशोर, डीपीएचओ रजनीश कुमार व अभिषेक सिंह सहित आंगनबाड़ी सुपरवाइजर, सेविका व सहायिका आदि मौजूद थे।

विदेशी टोला पंचायत में स्वच्छता को लेकर बैठक का हुआ आयोजन

थावे प्रात : किरण संवाददाता

स्वछ भारत मिशन अभियान के तहत प्रखण्ड के विदेशीटोला पंचायत भवन पर बीडीओ अजय प्रकाश राय की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गयी। जिसमे पंचायत के मुखिया, सरपंच, पंचायत समिति सदस्य, वार्ड सदस्य, डीलर के साथ ही स्वच्छता कर्मी आदि भाग लिए। बैठक के दौरान बीडीओ ने कहा कि लोहिया स्वछ अभियान द्वितीय चरण अंतर्गत ठोस एवं तरल प्रबंधन हेतु स्वच्छता शुल्क जरूरी है।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक घर से स्वछता शुल्क के लिए प्रत्येक माह तीस रुपये वसूली करना है। डीलर एवं अन्य कर्मी स्वच्छता शुल्क लेने में सहयोग करे। इसके लिए आप सभी लोग ग्रामीणों को जागरूक करे। स्वच्छता शुल्क ग्राम पंचायत और स्वच्छता सुपरवाइजर के पास तीस रुपये जमा कर के रसीद प्राप्त कर सकते है। ताकि विदेशी टोला पंचायत में स्वच्छता बनी रहे। मौके पर बीपीआरओ पुष्पेंद्र पुष्पेश, मुखिया मनीष कुमार गुप्ता, सरपंच विमलेश पांडेय, वीरेन्द्र प्रसाद यादव, ब्रह्मा जी प्रसाद, शिवजी राम व प्रभु रावत सहित पंचायत सचिव, वार्ड सदस्य आदि शामिल थे।

हाईवे पर फर्जी पुलिस बनकर वूसली करने वाला गिरफ्तार

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

गोपालगंज पुलिस ने हाईवे एनएच 27 पर फर्जी पुलिस बना एक युवक द्वारा शराब तस्करों और शराबियो से अवैध राशि की वसूली करने के दौरान रंगे हाथ दबोच लिया। पुलिस ने इस युवक के निशानदेही पर चार बाइक सहित 27 पीस अंग्रेजी शराब भी बरामद किया। यह करवाई कुचायकोट थाना के नेचुआ जलालपुर पैक्स गोदाम के समीप एनएच 27 पर की। गिरफ्तार युवक का नाम राजन कुमार है, जो यूपी के तरेया सुजान थाना क्षेत्र के रहने वाला है। इस मामले में प्रशिक्षु डीएसपी सह कुचायकोट थानाध्यक्ष साक्षी राय ने बताया कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि शराब जांच के नाम पर कुछ लोग नकली पुलिस बनकर यूपी से आने वाली सभी गाड़ियों से मोटी रकम वसूल रहे है। इसी आधार पर पुलिस ने एक टीम गठित कर एनएच 27 नेचुआ जलालपुर गाँव के समीप छापेमारी किया गया। पुलिस को देखकर दो लोग भागने लगे। पुलिस ने एक युवक को दबोच लिया। जिसने अपना नाम राजन कुमार बताया है। इसके निशानदेही पर चार बाइक और 27 पीस विदेशी शराब बरामद किया गया है। गिरफ्तार युवक से पूछताछ करने पर कई अहम सुराग मिली है। इसपर पुलिस अपनी करवाई शुरू कर दी है।

माहवारी मिथ्या को समाप्त करना हीं संस्था का मुख्य लक्ष्य: डॉ. मनीषा

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

स्वस्थ महिला स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ बिहार को अपना लक्ष्य मानकर कार्य करने वाली समाजसेवी संस्था मनीषा वेलनेस केयर फाउंडेशन के तत्वधान में शुक्रवार को नगर परिषद अंतर्गत सरेया वार्ड नंबर 6 आंगनबाड़ी केंद्र संख्या 148 पर आयोजित निशुल्क सेनेटरी पैड, दवा वितरण, एवं माहवारी स्वच्छता प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्था की चेयरपर्सन स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ मनीषा के नेतृत्व में 300 महिलाओं एवं युवतियों को चैपाल के माध्यम से निःशुल्क सेनेटरी नैपकिन, एवं कैल्शियम का दवा वितरण कर माहवारी स्वच्छता के बारे में जानकारी देकर प्रशिक्षित करने का कार्य किया गया। डॉ मनीषा ने अपने संस्था मनीषा वेलनेस केयर फाउंडेशन का मुख्य लक्ष्य स्वस्थ महिला स्वस्थ परिवार एवं स्वस्थ बिहार के तहत महावारी के प्रति मिथ्या को तोड़ने का संकल्प लेकर जगह-जगह चैपाल के माध्यम से महिलाओं ने युवतियों को प्रशिक्षित कर जागरूक करने का कार्य कर रही हैं। साथ ही संस्थान द्वारा निशुल्क सेनेटरी नैपकिन एवं कैल्शियम की गोली भी वितरण किया जा रहा है। उन्होंने बताया की संस्था अब तक 300 सौ से ऊपर महिलाओ को माहवारी से जुडी समस्याओं के बारे मे जानकारी देकर उन्हें अन्य महिलाओ को जागरूक करने हेतु प्रशिक्षण देकर योग्य बना चूकी है। संस्था के सचिव एवं इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान के चिकित्सक डॉ. बिपिन सिंह के नेतृत्व मे मेडिकल की एक्सपर्ट टीम ने आज महिलाओ को माहवारी के दौरान साफ सफाई से रहने की जानकारी साझा किया एवं चैपाल के माध्यम से जागरूकता किया। संस्था की चेयरपर्सन स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ डॉ. मनीषा ने बताया की जिले के सभी पंचायतों में सिलसिलेवार रूप से चैपाल के माध्यम से महिलाओ को जागरूक करने का कार्यक्रम संस्था के कार्यकारणी द्वारा निर्धारित किया गया है। इसी कड़ी में आज संस्था के द्वारा तृतीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। इस मौके पर आंगनबाड़ी सेविका रागिनी देवी, सहायिका सोहिला देवी, सिविल कोर्ट की अधिवक्ता अंजली सिंह, प्रियंका सिंह, जयमाति देवी, ज्योति राजपूत, नीतू कुमारी, रेनू गुप्ता, गुलफ्शा खातून, बबिता देवी, रीता देवी सहित सैकड़ो महिलाएं उपस्थित थी।

सोशल मीडिया पर हथियार वाला खिलौना के साथ फोटो प्रसारित करना पड़ा महंगा

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव थाना क्षेत्र के एक युवक को हथियार वाले खिलौने के साथ फोटो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित करना महंगा पड़ गया। पुलिस ने आरोपित युवक को गिरफ्तार करने के बाद दप्रस की धारा 151 के तहत कार्रवाई करते हुए न्यायालय में प्रस्तुत किया। बताया जा रहा है कि थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह को सूचना मिली कि थाना क्षेत्र के तुलसिया गांव का एक युवक हथियार के साथ फोटो खींचकर इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित कर रहा है। जिससे क्षेत्र में भय का माहौल है। सूचना के आधार पर युवक की पहचान करने के बाद पुलिस ने आरोपित युवक को गिरफ्तार कर लिया। जिसकी पहचान थाना क्षेत्र के तुलसिया गांव के कुंदन कुमार के रूप में की गई है। इस दौरान पुलिस ने इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित तस्वीर में दिख रहे हथियार को भी जप्त कर लिया। जांच में बरामद हथियार नकली पाया गया। जिसके बाद पुलिस ने मामले में आरोपित युवक के विरुद्ध दप्रस की धारा 151 के तहत कार्रवाई करते हुए शुक्रवार के दिन अनुमंडल दंडाधिकारी हथुआ के न्यायालय में प्रस्तुत किया।

मारपीट के मामले में प्राथमिकी दर्ज

भोरे। भोरे थाना क्षेत्र के गोपालपुर में एक महिला और उसके दिव्यांग देवर को मारपीट कर जख्मी कर दिया गया। इस दौरान दौरान आरोपियों ने महिला के आभूषण छीनने के साथी धमकी देते हुए दो लाख रंगदारी की मांग की है। बताया जाता है कि थाना क्षेत्र के गोपालपुर निवासी अजय कुमार की पत्नी मुरत देवी अपने घर पर मौजूद थी तभी उसी गांव के राज किशोर सिंह, रामा कुंवर सिंह सहित दो अन्य लोग लाठी डंडे से लैस होकर आए और मूरत देवी की पिटाई शुरू कर दी। इस दौरान मूरत देवी की आवाज सुनकर उसे बचाने आए उसके दिव्यांग देवर मनोज कुमार की भी आरोपियों ने पिटाई कर जख्मी कर दिया। साथ ही आरोपी पीड़िता के गले से सोने की चेन, मंगलसूत्र भी लेते गए और जाते जाते यह चेतावनी भी दी अगर दो लाख रंगदारी नहीं दी तो अंजाम बुरा होगा।

महम्मदपुर में स्कॉर्पियो से 2871 बोतल विदेशी शराब जप्त, तस्कर फरार

गोपालगंज प्रात : किरण ब्यूरो

जिले के महम्मदपुर थाने की पुलिस ने एनएच 27 पर वाहन जांच के दौरान प्राथमिक स्वास्य केन्द्र के समीपएक स्कॉर्पियो से करीब 2871 बोतल विदेशी शराब बरामद कर लिया। जबकि धंधेबाज मौके का फायदा उठाकर भागने में सफल रहा। विदेशी शराब से भरी स्कॉर्पियो गाड़ी को पुलिस थाना परिसर लायी। इसकी जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष नेहा कुमारी ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि यूपी से शराब की बडी खेप आ रही है। सूचना के आधार पर पुलिस ने एनएच 27 पर वाहनों की सघन जांच शुरू कर दी। जांच के दौरान एक स्कॉर्पियों से करीब 2871 बोतल विदेशी शराब बरामद की गयी। इस दौरान तस्कर भागने में सफल रहा। फरार तस्कर की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। जल्द ही फरार तस्कर को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। उन्होने कहा कि किसी भी हाल में शराब तस्करी का कारोबार नही होने दिया जाएगा। इसके लिए एनएच पर वाहन जांच अभियान चलाने के साथ-साथ ग्रामीण इलाकों में भी पुलिस पैनी नजर रखे हुए है।

सांसद ने लोकसभा में उठाया थावे से लंबी दूरी की ट्रेन चलाने का मामला

गोपालगंज। जदयू सांसद डॉ. आलोक कुमार सुमन डॉ आलोक कुमार सुमन शुक्रवार को संसद में भारी हंगामे के बीच थावे जंक्शन से लंबी दूरी की ट्रेन चलाने के लिए प्राइवेट मेंबर बिल लाए जाने की मांग की ताकि भारत सरकार कानूनन थावे जंक्शन से गोपालगंज की जनता के लिए ट्रेन सुविधा प्रदान कर सके। गंतव्य हो कि थावे गोपालगंज से ट्रेन चलाने के लिए सांसद डॉ आलोक कुमार सुमन ने संसद के अंदर एवं संसद के बाहर अनेकों बार प्रयास किया ताकि थावे गोपालगंज जंक्शन से गोपालगंज की जनता को लंबी दूरी की ट्रेन मिल सके। मजबूरन सांसद ने प्राइवेट मेंबर्स बिल बनाया और संसद में प्रस्तुत किया ताकि सरकार हर हालत में गोपालगंज वासियों को ट्रेन की सुविधा प्रदान कर सके। प्राइवेट मेंबर बिल का मुख्य उद्देश्य है कि थावे से विभिन्न महानगरों के लिए ट्रेन की सुविधा दी जाए।

जनता दरबार में भूमि संबंधी मामलों का हुआ निपटारा

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। जनता दरबार में भूमि संबंधी मामलों का निष्पादन किया गया. डीएम और एसपी ने संयुक्त रूप से सभी मामलों पर सुनवाई की और उनके निराकरण हेतु सभी संबंधितों को निदेशित किया। ज्ञात हो कि महीने के प्रथम शुक्रवार को भूमि संबंधी विवादों के निपटारे के लिए विशेष जनता दरबार लगाने के निर्णय लिए गए थे, इसी कड़ी में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार जिला पदाधिकारी अमन समीर एवं पुलिस अधीक्षक डॉ गौरव मंगला संयुक्त रूप से जनता के दरबार मे उपस्थित रहे और मामलों का निपटारा किया। डीएम श्री समीर ने बताया कि एक अकेले भूमि विवाद के कारण कई तरह की समस्याएं उत्पन्न होने के उदाहरण हमारे सामने हैं। उन्होंने आगे कहा कि भूमि विवादों के निराकरण हेतु विभागीय निदेशानुसार प्रत्येक थाना पर प्रत्येक शनिवार को भूमि विवाद से संबंधी मामलों की सुनवाई अंचल अधिकारी एवं थानाध्यक्ष के स्तर पर एवं प्रत्येक 15 दिनों पर अनुमण्डल पदाधिकारी एवं अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी के स्तर से की जानी है। जिला स्तर पर जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक के द्वारा भूमि विवाद संबंधी मामलों की मासिक समीक्षा की जाती है, परन्तु प्रत्येक दिन जिलाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक के समक्ष भूमि विवाद संबंधी मामले लगातार आते रहते हैं, जिसमें कुछ गंभीर प्रकृति के जैसे- अवैध कब्जा, अवैध निर्माण, जातिगत हिंसा उत्पन्न कराने वाले, साम्प्रदायिक विवाद फैलाने वाले आदि होते हैं, जिनका त्वरित निष्पादन करना बहुत ही आवश्यक है।

जनता दरबार के लिए निर्धारित समय पर जिला के सभी अनुमण्डल पदाधिकारी, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, अंचल अधिकारी और थानाध्यक्ष अपने-अपने अनुमण्डल, प्रखंड मुख्यालय के वीडियो क्रॉफेसिंग कक्ष में ऑनलाइन उपस्थित रहे.। जनता दरबार में आवेदनों की समीक्षा दो श्रेणियों में की गई। विगत माह में सभी माध्यमों से प्राप्त आवेदनों को संवेदनशीलता के आधार पर वगीर्कृत करते हुए 23 आवेदनों को चिन्हित किया गया, जिसमें जिलाधिकारी कार्यालय में प्राप्त 10 आवेदन और पुलिस अधीक्षक कार्यालय में प्राप्त 13 आवेदन प्रमुख थे. अपर समाहर्त्ता, सारण मो॰ मुमताज आलम सभी आवेदनों के संबंध में पूर्व में ही संबंधित अनुमण्डल पदाधिकारी, अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी तथा अंचल अधिकारी व थानाध्यक्ष स्तर से की गई कार्रवाई के संकलित प्रतिवेदन के साथ जनता दरबार में उपस्थित रहे।

आज के सभी मामलों पर सुनवाई करते हुए जिला पदाधिकारी एवं पुलिस अधीक्षक ने संबंधित अंचलाधिकारी एवं थानाध्यक्ष को परिवाद में वर्णित तथ्यों को गंभीरता से जांच कर कार्रवाई करने का निदेश दिया। आयोजित जनता दरबार में प्राप्त आवेदनों के परिप्रेक्ष्य में जारी निदेशों के अनुपालन की साप्ताहिक समीक्षा हेतु अपर समाहर्त्ता को जिम्मेवारी दी गई।

पिकअप गाड़ी समेत चालक को अपराधियो ने कर लिया था अपहरण

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। अमनौर में अज्ञात व्यक्ति द्वारा सराय जाने के लिए भाड़े में पिककप कर चालक समेत गाड़ी का कर लिया अपहरण इस मामले में अमनौर हरनारायण निवासी गाड़ी मालिक जितेंद्र कुमार ने थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई थी। घटना 31 जुलाई की है। विगत चार दिन पूर्व आमनौर में हुई पिकअप चालक के अपहरण कांड का पुलिस ने सफल उद्वेदन कर लिया है। अपहरण में संलिप्त अपहरणकर्ता को भी पुलिस के द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है। 31 जुलाई को स्थानीय थाना क्षेत्र के हरनारायण गांव से एक व्यक्ति के द्वारा पिकअप को बुक किया गया और बिहार के वैशाली जिला के सराय में ले जाकर पिकअप सहित चालक को गायब कर दिया गया। जिसके बाद अमनौर थाना क्षेत्र के आमनौर अगुआंन गांव निवासी पिकअप चालक संतोष कुमार के परिजनों के द्वारा थाने में अपहरण की प्राथमिकी दर्ज कराई गई जिस पर पुलिस के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए एसआईटी का गठन किया गया।

गठित एसआईटी द्वारा तकनीकी अनुसंधान के आधार पर कांड का सफल उद्बोधन करते हुए घटना में संलिप्त अपराधी सारण जिले के सोनपुर थाना क्षेत्र के सबलपुर नवल टोला निवासी उमेश राय के पुत्र सचिन कुमार दशा वैशाली जिले के नगर थाना क्षेत्र के अंजानपीर चैक हसारगंज पठान टोला निवासी मोहम्मद अशफाक के पुत्र मोहम्मद इरशाद को एसआईटी के द्वारा गिरफ्तार किया गया है। पूछताछ के क्रम में गिरफ्तार अपराधियों ने बताया है कि पिकअप चालक को नशा खिलाकर पिकअप सहित अपहरण किया गया था गिरफ्तार अपराधियों के निशानदेही पर अपहृत पिकअप चालक संतोष कुमार को पुलिस ने सकुशल बरामद कर लिया है। घटना में संलिप्त अन्य अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। इस कार्रवाई में एक पिकअप वैन और दो मोबाइल बरामद किया गया है।

विश्व स्तनपान सप्ताह के तहत जन जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। मांझी स्थानीय प्रखंड अन्तर्गत बाल विकास परियोजना के तहत संचालित सभी आंगनबाड़ी केंद्रों पर शुक्रवार को विश्व स्तनपान सप्ताह के तहत जन जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में गर्भवती व धात्री के साथ अन्य महिलाओं ने भाग लिया। इस संबंध में सीडीपीओ पूजा रानी ने महिलाओं के स्तनपान के महत्व पर विस्तार चर्चा करते हुए बताया कि मां का दूध शिशु के लिए स्वच्छ व प्राकृतिक आहार है। जिसे बच्चे के जन्म के तुरंत बाद दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि बच्चो में अकारण स्वास्थ्य समस्याएं केवल मां का दूध न मिलने से होती है। स्तनपान केवल बच्चे के लिए ही फायदेमंद नही होता है जबकि मां के लिए भी लाभदायक होता है। इसमें बच्चों को कई बीमारियों के संक्रमण से बचने के कई तत्व होते है। इसमें भरपूर मात्रा में विटामिन ए की मात्रा के साथ दस प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा होती है। इसलिए कहा जाता है कि नवजात शिशु के लिए मां का दूध अमृत के समान होता है। बच्चे के जन्म के तुरंत बाद मां का गहरा पिला वाला पहला दुध बच्चे में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। साथ ही मां का दूध बच्चों का पूर्ण विकास करता है। यह कार्यक्रम 1से 7 अगस्त तक आंगनबाड़ी केंद्रों पर मनाया जाएगा।

जाति आधारित जनगणना का नगर आयुक्त ने किया निरीक्षण

छपरा। शुक्रवार को नगर आयुक्त सुमित कुमार के द्वारा नगर निगम क्षेत्र में चल रहे जाति आधारित गणना का औचक निरीक्षण किया गया। उन्होंने वार्ड नंबर 26 से लेकर वार्ड 45 तक के नियुक्त सभी पर्वेक्षक एवं प्रगनक तथा सभी गणना ब्लॉक को संध्या तक पुरा करके का निर्देश दिया स साथ ही नगर आयुक्त ने शनिवार शाम 5 बजे तक सभी प्रपत्र जमा करने का भी निर्देश दिया है। वहीं वार्ड संख्या 40 से 45 तक के प्रगनक का कार्य धीमी गति से चलने पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि वैसे प्रगणक को शो कॉज करने का आदेश दिया गया है। मालूम हो कि छपरा नगर निगम में कुल 45 वार्ड को मिलाकर 290 गणना ब्लॉक बनाया गया है। इस कार्य को ससमय पुरा करने को लेकर नगर आयुक्त गंभीर हैं स सरकार द्वारा भी इस बाबत टॉप प्रायरिटी पर रखकर कार्य को पूरा करने का फरमान जारी किया गया है।

आईटीआई कॉलेज के 20 छात्रों का हुआ कैंपस सेलेक्शन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। मांझी प्रखंड के चकियाँ स्थित शिव कुमारी सिंह आई टी आई कॉलेज परिसर में शुक्रवार को उत्तर प्रदेश के नोएडा की दो कम्पनियों द्वारा कैम्पस प्लेसमेंट का आयोजन किया गया। कॉलेज परिसर में आईटीआई के एक वर्षीय एवम दो वर्षीय कोर्स की अंतिम परीक्षा में सम्मिलित होने वाले प्रशिक्षणार्थियों ने कैम्पस प्लेसमेंट में भाग लिया। नोएडा की मदरसन एवं महिन्द्रा कंपनी ने छात्रों का सेलेक्शन किया। इसमें साक्षात्कार के आधार पर कुल 20 छात्रों ने सफलता हासिल की। कैम्पस सलेक्शन के दौरान कॉलेज के प्रबंधक पृथ्वीराज सिंह ने अंतिम रूप से सफल छात्रों को कंपनी द्वारा प्राप्त ऑफर लेटर प्रदान किया। कंपनी के एचआर द्वारा छात्रों को कंपनी की नियमावली से अवगत कराया, साथ ही सभी छात्रों को जॉब रॉल, सैलरी, खाने-पीने व रहने के बारे में बताया। छात्रों को रोजगार दिलाने को संकल्पित आईटीआई के प्रबंधक पृथ्वीराज सिंह ने कहा कि कॉलेज के प्रशिक्षणार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कालेज कृत संकल्पित हैं। प्रतिष्ठित कंपनियों में कॉलेज के सभी प्रशिक्षणार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए संस्थान प्रयासरत हैं। संस्थान का यह प्रयास है कि शत-प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों का प्लेसमेंट सुनिश्चित किया जाए। मौके पर कॉलेज के सभी कर्मी आदि मौजूद थे।

सम्पादकीय

नूंह के मोनू-बिट्टू

नूंह का सांप्रदायिक अंधड़ फिलहाल शांत लगता है, लेकिन क्या दबा-छिपा है, उसकी संभावनाएं भी नहीं बता सकते। हालांकि सर्वोच्च अदालत ने आदेश दिया है कि सरकारें तय करें कि कोई नफरती भाषण न दिया जाए। माहौल को भडकाया-उकसाया न जाए। हिंसा की कोई गुंजाइश न हो, लिहाजा अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए जाएं। शांति और सौहार्द कायम रहना चाहिए। यह जिम्मेदारी हरियाणा, दिल्ली, उप्र और केंद्र की सरकारों की तय की गई है। अदालत ने जुलूस, रैली, प्रदर्शन आदि की वीडियोग्राफी और रिकॉर्डिंग के भी आदेश दिए हैं। फिलहाल सुनवाई जारी है। नूंह हिंसा के पूरे प्रकरण में मोनू मानेसर और बिट्टू बजरंगी, कथित गोरक्षकों, को खलनायक चित्रित किया गया है। क्या सिर्फ दो हिंदूवादी चेहरों के कारण हरियाणा के एक संवेदनशील इलाके को हिंसा और दंगे की आग में झोंका गया? सांप्रदायिक दोफाड़ के हालात पैदा किए गए? छह मासूम मारे गए और 70 से अधिक घायल हुए। जिला अदालत की अतिरिक्त चीफ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट अंजलि जैन को, उनकी तीन साला बेटी के साथ, घंटों तक एक वर्कशॉप में छिपकर जान बचानी पड़ी। उनकी कार पर 100 से अधिक दंगाइयों ने पथराव के साथ हमला किया। क्या एक न्यायाधीश भी सांप्रदायिक हो गया? क्या यह हमला भी मोनू-बिट्टू के भडकाऊ वीडियो के कारण किया गया? अब नूंह के प्रवासी मजदूरों ने भी पलायन करना शुरू कर दिया है।

उनमें कई मुस्लिम भी हैं। गुरुग्राम के समीप एक गुरुकुल पर दो बार हमले की कोशिश की गई। उन अनाम ग्रामीणों का बहुत आभार है कि उन्होंने जान की बाजी लगाकर गुरुकुल को खंडहर होने से बचा लिया। बेकसूर दुकानदारों और व्यापारियों को लूटा गया, उनके प्रतिष्ठान जला कर राख कर दिए, करोड़ों की संपत्ति तबाह कर दी गई और कुछ कारोबारियों को तो जान से मार कर सडक किनारे फेंक दिया गया। क्या ऐसे हालात मोनू और बिट्टू के कारण बन सकते हैं? कौन हैं ये दो चेहरे? उनके खिलाफ हरियाणा में भी आपराधिक मामले दर्ज हैं, फिर भी उन्हें जामाता की तरह संरक्षण क्यों दिया जा रहा है? इस संदर्भ में मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री और गृह मंत्री के बयानों में ही विरोधाभास है। भाजपा और हरियाणा सरकार का बुनियादी अपराध यही है। दरअसल मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर हरेक घटना और टकराव के दौरान नाकाम साबित हुए हैं। चाहे वह जाट आरक्षण आंदोलन हो अथवा राम रहीम को अदालती सजा सुनाने के बाद भडकी जन-हिंसा हो! नूंह हिंसाकांड पर मुख्यमंत्री ने बयान दिया है कि पुलिस या सेना हरेक व्यक्ति को सुरक्षा नहीं दे सकती। यह यथार्थ हरियाणा और देश की जनता भी जानती है, लेकिन सरकार का अपना इकबाल होता है। कानून-व्यवस्था और खुफियागीरी के मायने क्या हैं? यदि सरकारें आम नागरिक की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं कर सकतीं, तो इस्तीफा दें। अलबत्ता चुनाव में जनता फैसला कर देगी। आश्चर्य है कि सरकार आंकड़ों में गिना रही है कि बीते 5 सालों के दौरान, 2017-22 के बीच, नूंह में कोई भी, कभी भी, सांप्रदायिक दंगा नहीं हुआ।

बेशक शेष हरियाणा में सांप्रदायिक हिंसा और दंगों की 211 घटनाएं जरूर हुई हैं। इस अर्द्धसत्य पर भी अदालत में चर्चा होनी चाहिए। नूंह की सांप्रदायिक और नफरती लपटें गुरुग्राम, फरीदाबाद, सोहना, पलवल आदि शहरों तक भी लपलपाती रही हैं। गुरुग्राम में ब्लू चिप की बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दफ्तर बाल-बाल बचे हैं। अलबत्ता दुनिया भर में हमारी साइबर सिटी की साख पर बट्टा जरूर लग जाता! नूंह के सवाल और दोषारोपण सिर्फ मोनू, बिट्टू तक ही सीमित नहीं हैं। यह जिला लघु आतंकीस्तान भी है। हिंसा, तनाव के दौरान भीड़ पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे लगाती रही। नूंह से मात्र 20 किलोमीटर की दूरी पर, एक गांव में, मस्जिद बनाई जा रही थी, जिसकी फंडिंग पाकपरस्त आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा ने की थी। राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने इसीलिए मस्जिद पर छापा मारा था। वह केस अब भी जारी है, लेकिन मस्जिद का निर्माण रुकवा दिया गया है। नूंह हरियाणा का दूसरा सबसे गरीब और पिछड़ा जिला है। उसके बावजूद सांप्रदायिकता में अव्वल है। प्रार्थना है इस इलाके में अमन-चैन बना रहे।

किसका इंडिया और किसका भारत

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

भारत के राजनीतिक इतिहास में 17-18 जुलाई 2023 का दिन बाद में याद किया जाता रहेगा। इसी दिन कर्नाटक की राजधानी में सोनिया गान्धी अपनी सन्तानों राहुल गान्धी और प्रियंका गान्धी समेत बेंगलुरू में पधारी थीं। वहां देश के कुछ दूसरे नए-पुराने राजवंश भी एकत्रित हुए थे। मसलन मरहूम मुलायम सिंह का राजवंश, लालू यादव का राजवंश, चौधरी चरण सिंह का राजवंश, मरहूम करुणानिधि का राजवंश। इसके अतिरिक्त कुछ ज्ञात-अज्ञात राजनीतिक दल भी हाजिर थे। वैसे जो नए-पुराने राजवंश आए थे, उन्होंने भी देशकाल की जरूरत के अनुसार अपने-अपने लिए राजनीतिक दल बना रखे थे। कुछ ने स्वयं बनाए थे और कुछ ने बने बनाए राजनीतिक दल पर कब्जा कर लिया था। उदाहरण के लिए सोनिया गान्धी ने अपने पति की दुखद मृत्यु के बाद देश के सबसे पुराने राजनीतिक दल इंडियन नैशनल कांग्रेस पर ही कब्जा कर लिया था। ये सभी दल किसलिए बेंगलुरू में एकत्रित हुए थे? मुख्य मुद्दा तो यही था कि राजवंशों को भारत के लोकतंत्र से किस प्रकार बचाया जाए? पिछले कुछ वर्षों से भारत के लोगों में नई चेतना और जागृति देखी जा रही है। वे विदेशी उपनिवेशवाद मानसिकता से मुक्त होते दिखाई दे रहे हैं। इससे सबसे बड़ा धक्का देश के सबसे पुराने राजवंश, जिस पर सोनिया गान्धी ने येन केन प्रकारेण कब्जा कर लिया था, को ही लगा। यह राजवंश भारत के लोकतंत्र का शिकार होकर पक्षाघात की स्थिति में आने लगा था। सोनिया गान्धी को इस बात का श्रेय देना होगा कि उन्होंने अपने देश इटली के ही मैकियावली के सभी तौर तरीकों का प्रयोग करते हुए, कम्युनिस्टों व कुछ अन्य छोटे मोटे दलों की सहायता से दस साल तक इस राजवंश को किसी न किसी तरह परोक्ष रूप से ही सही, सत्ता पर बिठाए रखा। लेकिन जैसा कि इस प्रकार के संक्रमण काल में होता है, सभी सत्ताधारी लोग कोयलों की दलाली में मशगूल हो जाते हैं। उनको यह डर लगा रहता है कि पता नहीं लोग उन्हें कब उखाड़ फेंकेंगे। जाहिर है कोयलों की दलाली में मुंह तो काला होगा ही। वह हुआ और उनकी शिनाख्त भी हो गई। उसका जो परिणाम हो सकता था, वही हुआ। राजवंश सत्ता से बाहर हो गए। उन्हें सत्ता से बाहर हुए लगभग दस साल हो गए हैं।

राजकुंवर जवान हो गए। कई राजवंशों के राजकुंवर तो अधेड़ हो गए। अब 2024 में लोकसभा के लिए चुनाव होने वाले हैं। राजवंशों को लगता है यह आखिरी मौका है। यदि इस बार चूक गए तो शायद फिर कभी मौका न मिले। राजवंश पुरानी रियासतों की तरह इतिहास बन जाएंगे। आम लोगों के बलबूते बने राजनीतिक दल बचे रहेंगे। बेंगलुरु में जमावड़ा इसी हताशा में से निकला था। दरअसल इस देश में एक इंडिया है और दूसरा भारत है। इंडिया वह है जिसका निर्माण, उसकी पहचान अंग्रेजों ने इस देश पर अपने दो सौ साल के शासन काल में की है। अंग्रेज मानते थे कि भारत समाप्त हो चुका है, वह इतिहास के अन्धेरे में गुम हो चुका है। इस भूमि पर अलग अलग समुदायों के लोग रहते हैं जिनका आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। वे एक-दूसरे से अनजान ही नहीं बल्कि एक-दूसरे के शत्रु भी हैं। उनका कोई इतिहास नहीं है, कोई संस्कृति नहीं है। उनमें से अधिकांश तो बाहर से ही आए हुए हैं। इसलिए रुडयार्ड किपलिंग कहा करते थे, ये लोग व्हिटमैन्ज बर्डन हैं। इनको सभ्य बना कर एक नए राष्ट्र का निर्माण करना पड़ रहा है। यदि आजादी की लड़ाई को ही देखा जाए तो जवाहर लाल नेहरु अपने को इंडिया की विरासत से जोडकर देखते थे। वे भी कहा करते थे कि हम एक नए राष्ट्र का निर्माण कर रहे हैं। लेकिन महात्मा गान्धी और सरदार पटेल अपने आपको भारत की विरासत से जोड़ते थे। यही कारण था कि नेहरु महात्मा गान्धी का सम्मान तो करते थे, जिसके अनेक राजनीतिक कारण हो सकते हैं, लेकिन वे महात्मा गान्धी के चिन्तन को स्वीकार नहीं करते थे। यहां तक कि उन्होंने महात्मा गान्धी के हिन्द स्वराज के थीसिस को भी अस्वीकार कर दिया था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सरसंघचालक सुदर्शन जी कहा करते थे कि हमारे देश में इंडिया और भारत में लड़ाई छिड़ी हुई है। इंडिया भारत को पराजित करना चाहता है। लेकिन इंडिया की आत्मा और विरासत इतनी सशक्त और प्राचीन है कि वह इसमें सफल नहीं हो पाता। लेकिन अंग्रेजों के चले जाने के बाद भारत की सत्ता जिन लोगों के हाथ में आई, वे भारत का नहीं इंडिया का प्रतिनिधित्व करते थे। संविधान बनाते समय भी इंडिया और भारत की यह लड़ाई चलती रही। लेकिन बाबा साहिब अंबेडकर ने अपने संविधान में स्पष्ट कर दिया कि जिसको तुम इंडिया कह रहे हो वह दरअसल भारत है।

स्थानीय क्षेत्रीय शिक्षा पर ध्यान एनईपी 2020 में

शिक्षा में अभिजात्यवाद हावी रहा, जिसके परिणामस्वरूप दशकों तक हमारी शिक्षा प्रणाली सेवाओं, वस्तुओं और बड़े पैमाने पर उत्पादन के क्षेत्र में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की सफलता की अंधी खोज में बनी रही। जब तक यह महसूस नहीं किया गया कि भारत एक समय ज्ञान के विश्व गुरु के रूप में खड़ा था और यह एक ऐसी भूमि थी जिसने मानव जाति को ब्रह्मांड के बारे में कुछ भी जानने से पहले ही गणितीय सटीकता के साथ खगोलीय गणनाएं की थीं। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नई शैक्षिक नीति 2020 (एनईपी 2020) की घोषणा के माध्यम से राष्ट्रीय गौरव को एक नए जोश के साथ नवीनीकृत किया गया है, जो क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से सीखने, अनुसंधान और नवाचार को दशार्ता है, जो किसी भी अन्य विदेशी भाषा के बराबर नहीं है। अब फोकस द लोकल पर अधिक है। उद्देश्य स्पष्ट है कि विचारों के वैश्विक अधिभोग के लिए राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को प्राप्त करने के लिए ही स्थानीय और क्षेत्रीय को अपनाया जाता है।

विजय गर्ग

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

विद्वान मूल निवासियों ने शुरूआती चरणों में कब्जा करने वाले की भाषा और संस्कृति का अनुकरण करने का गौरव प्रदर्शित किया, जब तक कि उन्हें एहसास नहीं हुआ कि सांस्कृतिक और राजनीतिक आत्मनिर्णय का असली गौरव केवल उनके मूल ज्ञान और संस्कृति के निस्संदेह दावे में निहित है। शिक्षा में अभिजात्यवाद हावी रहा, जिसके परिणामस्वरूप दशकों तक हमारी शिक्षा प्रणाली सेवाओं, वस्तुओं और बड़े पैमाने पर उत्पादन के क्षेत्र में पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं की सफलता की अंधी खोज में बनी रही। जब तक यह महसूस नहीं किया गया कि भारत एक समय ज्ञान के विश्व गुरु के रूप में खड़ा था और यह एक ऐसी भूमि थी जिसने मानव जाति को ब्रह्मांड के बारे में कुछ भी जानने से पहले ही गणितीय सटीकता के साथ खगोलीय गणनाएं की थीं। प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नई शैक्षिक नीति 2020 (एनईपी 2020) की घोषणा के माध्यम से राष्ट्रीय गौरव को एक नए जोश के साथ नवीनीकृत किया गया है, जो क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से सीखने, अनुसंधान और नवाचार को दशार्ता है, जो किसी भी अन्य विदेशी भाषा के बराबर नहीं है। अब फोकस द लोकल पर अधिक है। उद्देश्य स्पष्ट है कि विचारों के वैश्विक अधिभोग के लिए राष्ट्रीय प्राथमिकताओं को प्राप्त करने के लिए ही स्थानीय और क्षेत्रीय को अपनाया जाता है। नीति के उद्देश्य आदि शंकराचार्य के विश्व दृष्टिकोण में समाहित हैं, जिन्होंने स्वदेशो भुवना त्रयम् की घोषणा की थी - तीनों लोक मेरी जन्मभूमि हैं। शैक्षिक बुनियादी ढांचे और पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने के प्रावधानों के माध्यम से राष्ट्र की भव्य योजनाओं में नामांकित ग्रामीण शिक्षार्थियों के साथ लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग स्पष्ट रूप से निर्धारित किया गया है, जो गांवों के झिझकने वाले शिक्षार्थियों को अपने भाषाई अवरोधों को दरकिनार कर उभरने में सक्षम बनाएगा। रचनात्मक विचारक. पीएम श्री स्कूल योजना देश के दूरदराज के गांवों में ग्रामीण शिक्षार्थियों के दरवाजे तक प्रमुख शैक्षिक सुविधाएं लाने की प्रमुख पहलों में से एक है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन सोर्सेज का समकक्ष स्टेट इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन सोर्सेज है। ये ऐसे पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं जो जीवन संवर्धन और समुदाय-आधारित प्रयासों के साथ-साथ व्यावसायिक की ओर उन्मुख होते हैं। एनआईओएस और एसआईओएस द्वारा प्रस्तावित ओपन बेसिक एजुकेशन प्रोग्राम (ओबीई) इन प्रयासों में अग्रणी हैं। जब व्यक्तिगत या आमने-सामने शिक्षा उपलब्ध नहीं होती है, तो ऐसे ऑनलाइन कार्यक्रम होते हैं जो शिक्षा को शिक्षार्थियों के दरवाजे तक ले जाते हैं। स्थानीय और क्षेत्रीय स्तरों पर नीति के परिणाम प्राप्त करने के लिए उत्सुक सरकार ने निजी क्षेत्र और गैर सरकारी संगठनों को स्थानीय और क्षेत्रीय प्राथमिकताओं का अध्ययन करने और समाधान विकसित करने की अनुमति दी है। फायदा यह है कि ये निवेशक और हितधारक स्थानीय लोग होंगे जो उनकी जरूरतों को सबसे अच्छी तरह से समझते हैं, और बबार्दी और अतिरेक को खत्म करने के लिए सबसे व्यावहारिक स्तर पर काम करेंगे। जोर आउटपुट पर है, और परिणाम लालफीताशाही और नियंत्रण की बारीकियों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। ऐसे दूरस्थ, ओलंपियन रवैये की कोई गुंजाइश नहीं है जो सभी के लिए एक ही समाधान लागू करता हो। यह न केवल सभी के लिए व्यावहारिक और स्वीकार्य है, बल्कि शिक्षा के लिए सबसे लोकतांत्रिक और सर्वसम्मति-आधारित दृष्टिकोण भी है जो क्षेत्रीय आवश्यकताओं और लाभों को ध्यान में रखता है।

एनईपी में हर संभव स्रोत का उपयोग करके स्थानीय प्रतिभाओं और संसाधनों को शामिल किया गया है। प्रत्येक स्थानीय क्षेत्र के स्वयंसेवकों और शिक्षित और योग्य लोगों के डेटाबेस हैं। उनकी सेवाएं ली जाती हैं, और सलाह को इन शैक्षिक गतिविधियों के नियोजन आयु निष्पादन में शामिल किया जाता है। गतिविधियाँ यहीं तक सीमित नहीं हैंनियमित कक्षाकार्य, लेकिन पाठ्येतर गतिविधियों का व्यापक उपयोग। स्थानीय स्तर पर शिक्षार्थियों के बीच रुचि पैदा करने और बनाए रखने के लिए ओलंपियाड, प्रतियोगिताएं और कई अन्य दिलचस्प उपाय हैं। शिक्षकों के मार्गदर्शन में, शिक्षार्थी स्वयं को शिक्षित करने में भाग ले सकते हैं। प्रसिद्ध रूसी शैक्षिक मनोवैज्ञानिक यूरी अजरोव ने अपने टीचिंग एंड कॉलिंग स्किल्स में कहा है कि शिक्षण में कई नवाचार और प्रौद्योगिकियां हो सकती हैं, लेकिन शिक्षक की जगह लेने वाली कुछ प्रौद्योगिकी दूर की कौड़ी है। एनईपी 2020 में शिक्षण मानकों को बढ़ाने पर नया जोर दिया गया है। एक शिक्षक के सतत व्यावसायिक विकास (सीपीडी) की अवधारणा पर भरपूर ध्यान दिया जाता है।

सीपीडी के तहत, शिक्षक लगातार आत्म-विश्लेषण कर रहा है, और ताकत और कमजोरियों की पहचान करने में विशेषज्ञों और सहकर्मियों की मदद ले सकता है। यह शिक्षकों के लिए अपने करियर को आगे बढ़ाने और अपने शिक्षार्थियों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने में अमूल्य होगा। यह शिक्षा प्रणाली में सभी हितधारकों के लिए एक जीत की स्थिति है। सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के महत्व को पहचाना है और इसका पूरी तरह से दोहन करने की कोशिश की है। इसलिए, यह देखने के लिए कि व्यक्ति को इन निवेशों से अधिकतम लाभ मिले, नवीनतम सॉफ्टवेयर प्राप्त करने पर जोर दिया जाता है। स्थानीय भाषा पर पूरा ध्यान दिया गया है जो विशेष रूप से स्कूल स्तर पर शिक्षा का माध्यम होगी। पाठ्यपुस्तकें और इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों सहित अन्य अध्ययन सामग्री क्षेत्रीय भाषा को संबोधित करेंगी। इस मान्यता के परिणामस्वरूप शिक्षा की दिशा में और अधिक अनुकूल कदम उठाए जाएंगे और लंबे समय में एक राष्ट्र के रूप में एकता और अखंडता मजबूत होगी। शिक्षा प्रणाली को अधिक लचीला और शिक्षार्थी-केंद्रित बनाकर, सरकार एक ऐसे भविष्य का लक्ष्य बना रही है जिसका निर्माण सक्षम और कुशल लोगों द्वारा किया जाएगा जो वंचितों के लाभ के लिए काम करने के इच्छुक होंगे। इससे पिछड़ेपन और असंतोष की वे जड़ें खत्म हो जाएंगी जो भारत की एकता को खतरे में डाल सकती हैं। एनईपी 2020 ने वैश्विक प्रभुत्व हासिल करने के लिए स्थानीय को बढ़ावा देने और उत्थान के साथ कौशल अभिविन्यास और रोजगार योग्य कार्यबल के प्रवचन को फिर से शुरू किया है।

बड़ी चुनौतियों में से एक देश के ग्रामीण परिवेश में राष्ट्रीय योजना और वैश्विक पहचान में उनकी उचित हिस्सेदारी के लिए विश्वास पैदा करना है। सरकार ने अपनी स्पष्ट दृष्टि से शहरी, अर्ध-शहरी, ग्रामीण और दूरदराज की बाधाओं को दूर करते हुए देश के कुशल कार्यबल के आधार का विस्तार किया है। इनमें से प्रमुख है संसाधनों, विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उनकी क्षमता के अनुसार उपयोग करने में असमर्थता। इन बाधाओं पर तेजी से काबू पाने के लिए, सरकार नवीनतम सॉफ्टवेयर हासिल करने और इसे यथासंभव व्यापक रूप से उपयोग करने की योजना बना रही है। इन उपायों में सबसे महत्वपूर्ण है विकेंद्रीकरण जो राज्यों को अपने संसाधनों के साथ आगे बढ़ने और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सशक्त बनाएगा। एनईपी को एहसास है कि जीवन में ऐसे चरण होते हैं जो भाषा जैसे कुछ जीवन बदलने वाले कौशल सीखने और हासिल करने के लिए इष्टतम होते हैं। इस प्रकार यह महज तथ्यों पर आधारित एक दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह संज्ञानात्मक और भावनात्मक पहलुओं से ओतप्रोत है जिसका भारत में शिक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ेगा। हम अपनी युवा आबादी से जो जनसांख्यिकीय लाभांश प्राप्त करने की आशा करते हैं, वह क्षेत्रीय प्रतिभाओं और संसाधनों के उपयोग के कारण बेहतर ढंग से प्राप्त होगा। इससे दुनिया में हमारा रुतबा बढ़ेगा और हम सभी देशों में सबसे ऊंचे पायदान पर पहुंच सकते हैं। एनईपी एक समग्र दस्तावेज है जो अपने दृष्टिकोण में व्यापक है. यह शिक्षा के हर पहलू को संबोधित करता है: स्थानीय और राष्ट्रीय से लेकर वैश्विक तक। राष्ट्र की समृद्ध सभ्यता, उसके अतीत और वर्तमान को चित्रित करते हुए, इसका लक्ष्य तत्काल वर्तमान में जीवन को बेहतर बनाना है, और भविष्य की ओर देखना है। इसकी ताकत इसकी दूरदर्शिता और व्यावहारिकता में निहित है।

संसद में विवादित बयान : संविधान ने सब कुछ करने की छूट दी... गृहमंत्री

यह तो राजनीतिक पंडितों के विचार विमर्श की विषय वस्तु है, किंतु भारत के हर जागरूक बुद्धिजीवी नागरिक की दृष्टि में मौजूदा सरकार की संसद में की गई यह गर्वोक्ति संवैधानिक दृष्टि से बिल्कुल भी उचित नहीं है, क्योंकि अतीत में ऐसी ही सोच रखने वाली पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी इसका खामियाजा भुगत चुकी है। गृह मंत्री अमित भाई शाह ने पिछले दिनों संसद में दिल्ली सेवा अध्यादेश प्रस्तुत करते हुए कहा था कि हमारी सरकार बहुमत में है और बहुमत वाली सरकार को हमारे संविधान के तहत हर कदम उठाने और फैसला लेने की छूट है, हमें इस कार्य से कोई नहीं रोक सकता। गृह मंत्री के इस बयान से देश के राजनीतिक क्षेत्रों में हलचल सी मच गई है और विभिन्न विचारक गृहमंत्री के इस कथन के विभिन्न अर्थ निकाल रहे हैं। गृह मंत्री के इस बयान व दिल्ली सेवा अध्यादेश की वास्तविक तथा कथा यह है कि दिल्ली में मोदी जी की नाक के नीचे भाजपा विरोधी आप की सरकार है गृह मंत्री व प्रधानमंत्री ने कई तरीकों से दिल्ली की इस सरकार को कसने या इसे अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश की

ओम प्रकाश मेहता

लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

भारत की मौजूदा सरकार की यह सोच कि संविधान ने बहुमत वाली सरकार को सब कुछ करने की छूट दी है हमारे संविधान के परिपेक्ष में कितनी सही या गलत है? यह तो राजनीतिक पंडितों के विचार विमर्श की विषय वस्तु है, किंतु भारत के हर जागरूक बुद्धिजीवी नागरिक की दृष्टि में मौजूदा सरकार की संसद में की गई यह गर्वोक्ति संवैधानिक दृष्टि से बिल्कुल भी उचित नहीं है, क्योंकि अतीत में ऐसी ही सोच रखने वाली पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी इसका खामियाजा भुगत चुकी है।

गृह मंत्री अमित भाई शाह ने पिछले दिनों संसद में दिल्ली सेवा अध्यादेश प्रस्तुत करते हुए कहा था कि हमारी सरकार बहुमत में है और बहुमत वाली सरकार को हमारे संविधान के तहत हर कदम उठाने और फैसला लेने की छूट है, हमें इस कार्य से कोई नहीं रोक सकता। गृह मंत्री के इस बयान से देश के राजनीतिक क्षेत्रों में हलचल सी मच गई है और विभिन्न विचारक गृहमंत्री के इस कथन के विभिन्न अर्थ निकाल रहे हैं। गृह मंत्री के इस बयान व दिल्ली सेवा अध्यादेश की वास्तविक तथा कथा यह है कि दिल्ली में मोदी जी की नाक के नीचे भाजपा विरोधी आप की सरकार है गृह मंत्री व प्रधानमंत्री ने कई तरीकों से दिल्ली की इस सरकार को कसने या इसे अपने नियंत्रण में लेने की कोशिश की, किंतु उन्हें सफलता नहीं मिली, तब सरकार संसद में दिल्ली सेवा अध्यादेश लेकर आई जिस पर संसद में इन दिनों हंगामा पूर्ण चर्चा जारी है, किंतु देश की राजनीति के पंडितों का कहना है कि देश के गृहमंत्री को ऐसा बयान देने से पहले देश का अतीत जानने के लिए इंदिरा जी के शासन का इतिहास पढ़ लेना चाहिए था और उनके 19 महीनों के आपातकाल का हश्र जान लेना चाहिए था, इसके बाद संविधान की दुहाई देकर संसद में बयान देना चाहिए था, क्योंकि हमारे संविधान ने बहुमत वाली सरकार को हर तरह की मनमानी करने की छूट नहीं दी है, संविधान व संसद के नियमों के अनुसार सरकार चलाने की संविधान ने मनसा जाहिर की है, इसलिए एक जिम्मेदार गृहमंत्री को प्रजातंत्र के सबसे महान मंदिर में ऐसी बयानबाजी नहीं करनी चाहिए।

यही नहीं... यदि हम आज के संसदीय परिप्रेक्ष्य में मौजूदा सरकार को देखें तो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि प्रधानमंत्री और सत्ता पक्ष के नेता प्रधानमंत्री लगातार संसद की उपेक्षा कर रहे हैं, जिस संसद में राज्यसभा के सभापति को यह कहना पड़े कि वह प्रधानमंत्री जी को संसद में हाजिर रहने का निर्देश नहीं दे सकते उस देश की संसद अपने आप में कितनी असहाय है? देश का पूर्वोत्तर भाग सांप्रदायिकता की आग में जल रहा है मणिपुर मिजोरम की आग दिन दूनी रात चौगुनी फैल रही है और हमारी केंद्र सरकार व उसके प्रधानमंत्री चैन की बंसी बजा रहे हैं? आखिर यह परिदृश्य क्या संदेश दे रहा है? जिस लोकतंत्री देश के प्रति पक्ष को संसद में प्रधानमंत्री की वाणी सुनने के लिए अविश्वास प्रस्ताव लाना पड़े उस देश में लोकतंत्र की उम्र कितनी रह गई है, यह कोई नहीं जानता क्या? किंतु किया क्या जाए सरकार बहुमत वाली है कुछ भी कर सकती है यह संदेश तो गृह मंत्री जी दे ही चुके हैं?

मेरी दृष्टि में इसे प्रजातंत्रिय दोष ही कहा जा सकता है? क्योंकि यहां की सर्वोच्च शासक राष्ट्रपति है, जो प्रधानमंत्री की मनमर्जी से आज इस कुर्सी पर है ऐसे में कितने ही विपक्षी दल सरकार की शिकायतें उन तक पहुंचाए उससे क्या होना जाना है? अब आज की तारीख में सबसे मौजू और ज्वलंत सवाल यही है कि देश की सत्ता व उस पर काबिज देश के कर्णधारो के खिलाफ वाजिब शिकायतें भी किसके सामने प्रस्तुत की जाए? और कौन उन पर लगाम लगा सकता है? क्या इसके लिए प्रजातंत्रिय देश में अगले चुनावों तक इंतजार करना पड़ेगा? हमारे संविधान निमार्ताओं ने क्या कभी ऐसी स्थिति की कल्पना नही की थी? आज सरकार मनमानी पर है और देश उनकी नादानी पर।

मध्य प्रदेश: संस्कार, संस्कृति, साहित्य में उन्मेष और उत्कर्ष

डॉ. मयंक चतुर्वेदी

भारत अपने गौरवशाली स्व को जानने के नए संदर्भों में 75 वर्ष का उत्सव मना रहा है। हिमालयी क्षेत्र से आरंभ हुआ उन्मेष देश के हृदय प्रदेश आ पहुंचा है। उन्मेष का यह दूसरा संस्करण है। पहला आयोजन शिमला में गत वर्ष हुआ ही है। आप पूछ सकते हैं आखिर ये उन्मेष है क्या? वस्तुतः धरती पर सूर्य की पहली किरण पड़ते ही जगत जाग उठता है। जागना अर्थात अंतस की जागृति, क्रिया के रूप में जागना और विचारों में जाग जाना है। आप जब जागे रहते हैं तो आपके बाहर से लेकर अंदर तक सभी कुछ सचेत होता है। आप हर क्रिया की प्रतिक्रिया देने में सक्षम रहते हैं। इसी जागने को संस्कृत में उन्मेष कहा गया। जीवन में उन्मेष आ जाए तो फिर किसी और की आवश्यकता नहीं रहती। यह उन्मेष जीवन से जुड़ी हर जरूरत को पूरा करने में सक्षम है। जैसे कि जो जागा हुआ है, फिर उसे किस का भय! स्वभाविक है जो जागा हुआ है, उत्कर्ष भी उसी का होगा। समृद्ध, प्रशंसा, श्रेष्ठता, उत्तमता, अधिकता, उन्नति, उच्च गुणवत्ता जोकि उत्कर्ष शब्द के ही पर्यायवाची हैं का भोक्ता भी वही बनेगा।

संयोग देखिए; एक ओर भारत का सबसे समावेशी और भाषाओं की संख्या के प्रतिनिधित्व के संदर्भ में एशिया का सबसे बड़ा साहित्य आयोजन यह है, तो दूसरी तरफ उन्मेष अपने साथ उत्कर्ष को जोड़कर दुनिया का सबसे बड़ा कला-संस्कृति का उत्सव यह बन गया है। वैसे भी उन्मेष के बिना उत्कर्ष संभव नहीं है। हमारे यहां कहा भी गया है; उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है। जो सोवत है सो खोवत है, जो जागत है सोई पावत है।

सभ्यताओं में संस्कृति और संस्कार का भोर भी कुछ ऐसा ही है। आपको नित्यप्रति जागना है, जो इसके प्रति आग्रही नहीं, दुनिया में विलुप्त हो चुकीं अब तक की अनेक सभ्यताओं की तरह वह भी देर सवेर समाप्त हो जाएंगे। रह जाता है तो सिर्फ किताब का एक पन्ना; बहुत हुआ तो दो-चार पन्ने तक सिमटा इतिहास। यदि इतिहास को पुनः जागृत करना पड़ जाए तो परम्पराओं की लकड़ी चाहिए, ऊष्मा का कठोर श्रम और न पीछे हटने वाला साहस चाहिए, तब कहीं जाकर इतिहास अपने आप को पुनः दोहराता है।

इतिहास से याद आया, भारत की पिचहत्तर वर्ष पहले की यात्रा सांस्कृतिक यात्रा तो थी, किंतु राजनीति के स्तर पर भारत कई भागों में बंटा हुआ था। अलग-अलग राज्य और अलग-अलग संहिताएं। मुद्राएं भी अलग, कर की प्रणाली भी अलग, यदि कुछ अलग नहीं तो वह था वृहद भारत की सांस्कृतिक अवधारणा। जिसमें हिमालय के धवल शिखर से लेकर सुदूर हिंद महासागर (इंदू सरोवर) तक एक भारत, जम्मूद्वीप, आर्यवर्त, अजनाभवर्ष, हिन्द, हिन्दुस्थान कई नामों से ख्यात एक अखण्ड भारत। जिसका संकल्प त्रिकाल संध्या-वंदन में और हर उस नई शुरूआत में जो प्रत्येक भारतवासी के जीवन से जुड़ी है। भारतवासी संकल्प लेता है, जिसके बोल ही विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः तीन बार विश्व के प्रत्येक अणु-परमाणु तत्व विष्णु को साक्षी मानकर शुरू होते हैं और काल की गणना में कल्प, मन्वन्तर, युग की गणना करते हुए साक्षी भाव से भूलोर्के जम्बू द्वीपे भरत खण्डे भारत वर्षे आर्या वर्तान्तर्गत ब्रह्मा वर्तस्य भारत क्षेत्रे भारत देशे कहते हुए यह संकल्प आगे बढ़ता है। तो यह हुआ संस्कृतिक भारत का दृष्य। जिसमें कभी अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यान्मार, बांग्लादेश, श्रीलंका, थाईलैण्ड, कंबोडिया, मलेशिया, इंडोनेशिया और ईरान तक समाए हुए थे। किंतु काल प्रवाह में सांस्कृतिक भारत का जो दृष्य कल था, वह आज का नहीं है।

इस सांस्कृतिक भारत से राजनीतिक तौर पर 12 भाग टूटकर अलग हो चुके हैं। शेष भारत की विवधता में सम्वेत स्वर 15 अगस्त 1947 के प्रथम ऊषाकाल में हमने सुने और अनुभव किए। यहीं से एक नए भारत की यात्रा राजनीतिक और सांस्कृतिक तौर से आरंभ होती है। यह संस्कृति संस्कार जन्य है। क्योंकि संस्कृति संस्कारों को जन्म देती है और ये संस्कार लोक के हैं, ग्राम्य जीवन के हैं, नगर के हैं, समूह, समाज, परिवार यहां तक कि व्यक्ति के अपने हैं। इन संस्कारों से ही विविध कलाओं का प्रादूर्भाव होता है। सबका हित करने वाला साहित्य इसी संस्कार से निकलता है और इसीलिए यह साहित्य शब्द उतना प्राचीन है जितना कि मनुष्य जीवन।

साहित्य स्वरूप को स्वतंत्र रूप से विश्लेषित करने का प्रथम प्रयास अग्निपुराण में देखा जा सकता है। जिसके रचयिता वेदव्यास हैं। यद्यपि साहित्य स्वरूप विश्लेषण का प्रारंभ संस्कृत साहित्य में आचार

संक्षिप्त खबरें

किसानों को निःशुल्क दस घंटे बिजली उपलब्ध करावे सरकार : भाकपा

मुजफ्फरपुर।भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिवमंडल सदस्य अजय कुमार सिंह ने जिलाधिकारी तथा जिला कृषि अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर जिला में अनावृष्टि से उत्पन्न भीषण सुखाड़ की स्थिति में जिला को सूखाग्रस्त घोषित कर किसानों को प्रतिदिन दस घंटे निःशुल्क बिजली उपलब्ध कराने की मांग की है। विदित हो कि औसत से काफी कम वर्षा होने से खरीफ मौसम में जिला में चालीस प्रतिशत खेतों में धान की खेती नहीं हो सकी। जिन किसानों ने धान की रोपनी की उनके खेतों में नमी के अभाव में दरारें पड़ गया है। पहले से ही कर्ज के जाल में फंसे किसान खेती चौपट होने से भीषण संकट का सामना कर रहे हैं। सरकार द्वारा सूखा का सामना करने के लिए घोषित डीजल अनुदान की पेचिदा प्रक्रिया के कारण आम किसानों को इस योजना का लाभ नहीं मिल रहा है। अधिकांश सरकारी नलकूप खराब रहने तथा नहरों में पानी नहीं रहने से किसानों को पूरी तरह मानसून पर निर्भर रहना पड़ता है। किसानों की इस बिपदा की स्थिति में सरकार त्वरित कार्रवाई करते हुए शत प्रतिशत अनुदान पर निजी नलकूप योजना को मूर्त रूप दे तथा नलकूपों में अभियान चलाकर विद्युत कनेक्शन देकर सिंचाई के लिए निःशुल्क दस घंटे प्रतिदिन बिजली उपलब्ध करावे।

सुक्की जामुन चौक पर श्रद्धा सुमन श्रधांजलि अर्पित करते युवा वर्ग के लोग

मधुबनी खजौली प्रखंड़ क्षेत्र के सूक्की जामुन चौक पर नंदू सिंह ने नेतृत्व में समाजसेवी स्व. कृष्णदेव सिंह उर्फ परनामी सिंह की प्रथम बरसी पर श्रधांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया.इस श्रधांजलि कार्यक्रम के दौरान समाजसेवी स्व कृष्णदेव सिंह उर्फ परनामी सिंह के तैलय चित्र पर दर्जनों युवा वर्ग पुष्पांजलि अर्पित किया गया.इस दौरान कार्यक्रम के आयोजन कर्ता नंदू सिंह ने कहा कि समाजसेवी स्व. कृष्णदेव सिंह उर्फ परनामी सिंह अपने जीवन काल मे प्रखंड़ के सभी पंचायतों में आम जनता के हित मे बढ़चढ़ कर काम किया गया.उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में गरीबो के मसीहा के रूप में जानते थे.वही प्रगति युवा मंच के अध्यक्ष राम कुमार सिंह ने कहा कि समाजसेवी स्व. कृष्णदेव सिंह गरीबो की मसीहा थे.वे अपने परिवार से ज्यादा गरीब गुरवा परिवार को सहायता करके आगे बढ़ाने का काम किया था. इस मौके पर राघव मिश्रा,मोहन पासवान,राजीव रंजन,शंकर सिंह,राम कुमार सिंह,बरुण सिंह,संजय सिंह,अजय लालू, छोटू यादव,विक्रम सिंह,राजीव कुमार साहू सहित दर्जनों युवा वर्ग भाव भिवनी श्रधांजलि अर्पित की।

भारत विकास परिषद की अन्नपूर्णा रसोई सेवा से जरूरतमंदों को मिल रही है राहत

रक्सौल। शहरके पोस्ट ऑफिस के सामने भारत विकास परिषद के सदस्यों के परस्पर सहयोग से आज चार अगस्त को अन्नपूर्णा रसोई सेवा के माध्यम से गरीब, असहाय, निःशक्त लोगों एवं दिहाड़ी मजदूरों के बीच निः शुल्क भोजन वितरित किया गया। परिषद के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने बताया कि परिषद के द्वारा विगत तीन महीने भी अन्नपूर्णा रसोई सेवा के माध्यम से लोगों के बीच भोजन वितरित किया गया था तथा इस माह भी निः शुल्क अन्नपूर्णा रसोई सेवा दी गयी। साथ ही परिषद इस सेवा को प्रत्येक महीने की चार तारीख को जारी रखने के लिए संकल्पबद्ध है।वहीं परिषद के मीडिया प्रभारी रजनीश प्रियदर्शी ने बताया कि परिषद प्रयासरत है कि गरीब, वंचित वर्ग, असहाय लोगों एवं भिक्षुकों को यह सेवा निरंतर मिले। भोजन वितरण में परिषद के अजय मस्करा, नरेश मित्तल, योगेन्द्र प्रसाद, विजय कुमार साह, दिनेश प्रसाद, विनोद रौनियार, सुरेश धानोठिया, रजनीश प्रियदर्शी, विष्णु मस्करा समेत परिषद के कई सदस्यों ने उल्लेखनीय योगदान दिया।इसकी जानकारी परिषद के मीडिया प्रभारी रजनीश प्रियदर्शी ने दी है।

कांग्रेस का भ्रमण सह सदस्यता अभियान कार्यक्रम सम्पन्न

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। प्रखंड के निजी विवाह भवन में कांग्रेस जिलाध्यक्ष ई. शशिभूषण राय ऊर्फ गप्पू राय के नेतृत्व में प्रखंड भ्रमण सह सदस्यता अभियान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिलाध्यक्ष ने सभी पंचायत अध्यक्षों, प्रखंड अध्यक्ष, प्रखंड कमिटी से अनुरोध करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी को मजबूत एवं गतिशील बनाने हेतु एवं चुनावी वर्ष कि अवश्यकताओं को देखते हुयें, सभी पंचायतों में कम से कम एक हजार सहित प्रखंड में कम से कम पच्चीस हजार कांग्रेस पार्टी के सदस्य बनायें। आगे जिलाध्यक्ष ने कहा कि अगर हम काँग्रेस की उपलब्धि एवं मोदी सरकार की नकामिया गिनवाने लगे तो घंटो बित जाऐगें, लेकिन पुरा नही होगा, फिर भी हम कुछ प्रमुख बिन्दुओ पर प्रकाश डालते है। 1950 में पहली आईआईटी खड़गपुर में स्थापना किया गया। 1954 में भाभा स्टोमिक सेन्टर का स्थापना किया गया, जो देश को परमाणु बम बनाने में अहम रोल आदा किया। आज के समय में भारत एक परमाणु शक्ति वाला देश है, इसलिए पुरी दुनिया भारत का सम्मान करती है। 1956 में एम्स जैसे बड़ी अस्पताल की स्थापना हुई। काँग्रेस के 70 साल का योगदान पुछने वालो की जब तबियत बिगड़ जाती है तो वही एम्स में ईलाज कराते हुए मिलते है। 1958 देश में डीआरडीओ का स्थापना किया गया, जहां हथियार, गोला बारूद, मिशाईल बनता है, जिसका इस्तेमाल करके भारत की सेना एकता एवं अखंडता को मजबूत बनाती है। 1959 में देश में टेलीविजन आया। 1995 में देश को इन्टरनेट की सुविधा दिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के पूर्व महासचिव सह नगर प्रतिनिधि सदस्य बिहार विधान परिषद क्षेत्र संख्या 12 के प्रोफेसर अखिलेश दयाल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन रक्सौल प्रखंड कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मनोरंजन तिवारी ने किया।

इस मौके पर कांग्रेस जिला उपाध्यक्ष प्रोफेसर विजय शंकर दुबे, मुनमुन जयसवाल, ऋषि सिंह, विनय कुमार सिंह, संजीव कुमार सिंह, रामप्रवेश तिवारी, आशीष रंजन सिंह,सुभम कुमार सिंह, रोहित सिंह, अशोक प्रजापति, रहमतुल्लाह मियां, उपेन्द्र यादव, प्रदीप दास,जावेद अंसारी, नवीन कुमार रवि,पुण्यदेव भारती, बृजभान गिरि, मुक्तिनाथ ओझा, उनितलाल यादव, बैधनाथ पांडे, ईश्वर चंद्र प्रसाद, शिवपूजन प्रसाद, अमलदेव प्रसाद, शेषनाथ यादव सहित अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

प्रखंड़ नियोजन इकाई की बैठक में उपस्थित प्रमुख,बीपीआरओ व बीईओ

प्रात : किरण, संवाददाता

मधुबनी खजौली प्रखंड़ प्रमुख कार्यालय में शुक्रवार को प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा के अध्यक्षता में नियोजन समिति की बैठक बुलाई गयी. इस बैठक के दौरान प्रखंड़ नियोजन इकाई के अध्यक्ष प्रमुख कुमारी उषा बीपीआओ हेमनारायण चौधरी बीइओ योगेंद्र चौधरी नियोजन इकाई के सदस्य पंसस मनोज झा द्वारा सर्व सम्मत्ति से निगरानी विभाग का आदेश को पालन करते हुए फर्जी शिक्षक मध्य विद्यालय रसीदपुर के शिक्षक प्रदीप राम रमन एव मध्य विद्यालय गोबरौरा के शिक्षिका सुशीला कुमारी को शिक्षक पद से बर्खास्त कर उनके वेतन बंद करने का निर्देश दिया गया. साथ ही प्रखंड़ नियोजन इकाई द्वारा सर्व सम्मति से निर्णय लिया कि निगरानी विभाग के पत्र के आलोक में दतुआर पंचायत के उत्क्रमित मध्य विद्यालय दक्षिण के शिक्षक कृष्ण भूषण कुमार को वेतन पर रोक लगाते हुए प्रथम कारण बताओ नोटिस जारी किया गया. प्रखंड़ नियोजन इकाई खजौली के सभी सदस्यों द्वारा जिस विद्यालय में शिक्षकों की कमी को भरने के लिए राय मशविरा किया गया.इस मौके पर प्रखंड़ प्रमुख कुमारी उषा, बीईओ योगेंद्र चौधरी, बीपीआरओ हेमनारायण महतो, प्रखंड़ नियोजन इकाई के पदेंन सदस्य मनोज झा,लेखा पाल सरोज गोईत मौजूद थे।

प्रखंड़ सभागार में विकास मित्र को निर्देश देते प्रखंड़ कल्याण पदाधिकारी आलोक कुमार

प्रात : किरण, संवाददाता

मधुबनी खजौली प्रखंड़ सभागार में शुक्रवार को प्रखंड़ कल्याण पदाधिकारी आलोक कुमार के अद्यक्षता में विकास मित्रों की बैठक बुलाई गयी. बैठक के दौरान प्रखंड़ कल्याण पदाधिकारी आलोक कुमार ने उपस्थित सभी विकास मित्रों को कहा कि अपने अपने पंचायत में अनुसूचित जाति के विकास को लेकर जानकारी प्राप्त किया गया.उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार या बिहार सरकार के द्वारा जो लाभ अनुसूचित जाति वर्ग को मिलना है उस लाभ को पहचाने को लेकर चार अनुसूचित जाति की महिलाएं को समूह गठन करकेअनुसूचित जाति के टोले,मुहल्ले पहुँच कर जागरूक करने का निर्देश दिया गया.उन्होंने कहा कि अनुसूचित पर अत्याचार करने वाले व्यक्ति को चिन्हित कर रिपोर्ट तैयार कर प्रखंड़ कार्यालय में सौंपने का निर्देश दिया गया.वही अनुसूचित जाति वर्ग को मुकदमा लड़ने की खर्चा कल्याण विभाग से मुहैया कराया जाएगा. प्रखंड़ कल्याण पदाधिकारी ने विकास मित्रों को सुझाव दिया कि अपने पंचायत में सप्ताह में एक दिन रविवार को सभी अनुसूचित जाति की बैठक बुलाकर छूटे हुए लाभ को इकट्ठा करने को कहा. अनुसूचित जाति वर्ग में कोई भी महिला,पुरुष 60 वर्ष से अधिक उम्र ज्यादा रखने बाले को राष्टीय बृद्धा पेंशन,मुख्यमंत्री सम्मान योजना पेंशन से लाभ दिलाने का निर्देश दिया गया. उन्होंने सभी विकास मित्र को शख्त निर्देश दिया कि जो भी विकास मित्र अपना अपना कोटा पूरा नही करता है उस पर विभागीय कारवाई की जाएगी. इस मौके रसीदपुर पंचायत के विकास मित्र कृष्ण कुमार राम,राजेश्वर राम,कृष्णदेव राम,भारत साफी,विनोद सदाय,रामदेव सदाय,नविता कुमारी,लालो देवी, सोमनी देवी, अंजली कुमारी,जगवीर देवी सहित सभी विकास मित्र उपस्थित थे।

जमुई में बारिश की बेरुखी सूखे की मार से किसान मुसीबत में

प्रात : किरण ब्यूरो

जमुई जिला के कई प्रखंड जहां तेज बारिश की हुई कमी का सामना कर रहा है मौसम विभाग के आंकड़ों के मुताबिक इस साल जमुई जिला में अब तक औसत से करीब आधी भी बारिश नहीं हुई है बहुत कम बारिश के कारण धान की रोपनी बुरी तरह प्रभावित हुई है इससे लाखों किसानों के सामने संकट खड़ा हो गया है जबकि जमुई जिला में इस बार लगभग 25 या 50 लाख हेक्टेयर में इस साल धान की खेती होनी थी लेकिन बारिश नहीं होने से धान की आधी रोपनी नहीं हो पाई है वहीं अब पानी की कमी से कई प्रखंड में बिछड़े भी करने लगे हैं वहीं जमुई जिला के गोखुला गांव के पुष्कर कुमार के सामने भी ऐसी ही समस्या है पुष्कर कुमार के पास 4 बीघा खेत है लेकिन बारिश ना होने से अब तक वह धान के पौधे की रोपनी शुरू नहीं कर पाए हैं पुष्कर कुमार कहते हैं हमारे पास अपने पंप हैं लेकिन इससे मुश्किल से पीने का पानी ही मिल पाता है सिंचाई कहां से होगी बारिश नहीं होने से अब तो धान का बिछड़ा भी मरने लगे हैं मौसम विभाग के मुताबिक जमुई में औसत से करीब 46 फीसदी कम बारिश हुई है

सरकार से कितनी राहत : कहा जाता है कि बारिश और बाढ़ बिहार के आपदा भी हैं और इसी में बिहार की खुशहाली भी छिपी है हर साल आने वाली बाढ़ के साथ जिला के विशाल मैदान इलाके में मिट्टी की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है और किसानों की पैदावार भी अच्छी होती है लेकिन इस साल बारिश नहीं होने से जिला के लाखों किसान बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं जहां की जिला के सरकारी आंकड़ों के मुताबिक कुल आबादी का 65 /70फिसिदी हिस्सा खेती पर निर्भर है राज सरकार भी बारिश की कमी के इस असर को समझ रही है और उसने अपनी तरफ से राहत का ऐलान भी किया है बिहार सरकार फिलहाल डीजल पंप सेट से सिंचाई के लिए डीजल पर 75 प्रति लीटर का अनुदान दे रही है जबकि जमुई जिला के किसानों का मानना है 80 फीसदी किसान ऐसे हैं जो अपने परिवार के भोजन की जरूरत से ज्यादा अनाज पैदा नहीं कर पाते हैं क्योंकि उनके पास सीमित जमीन है वही मशीन के जरिए सिंचाई के लिए इलाके में पानी होना भी जरूरी है जमुई जिले के सिकंदरा प्रखंड के पुष्कर कुमार के मुताबिक इनका इलाका एक पहाड़ी क्षेत्र है और यहां ना तो नदी है और ना तो तालाब है ऐसे इलाके में हुआ या पंप के भरोसे भी सिंचाई नहीं हो सकती है ऐसे किसानों के लिए बारिश भी खेतों का एकमात्र सहारा है जमुई जिला को किसानों के धान की फसल के लिए अगले कुछ दिन काफी अहम होने वाले हैं इस दौरान अगर जिला में अच्छी बारिश हो जाए तो उनकी मरती फसल को नया जीवन मिल सकता है अगर ऐसा नहीं होता है तो किसानों के सामने पैदा होने वाले संकट का अनुमान लगाना भी मुश्किल होगा

इलेक्ट्रिक वाहन निमार्ता अल्टीग्रीन ने एक्सिस बैंक के साथ की साझेदारी

AXIS BANK

प्रात : किरण, संवाददाता

पटना। इलेक्ट्रिक वाहन निमार्ता कंपनी अल्टीग्रीन ने अपने ग्राहकों की जरूरतों के अनुसार फाइनेंस के विकल्प प्रदान करने के लिए एक्सिस बैंक के साथ साझेदारी की है। यह साझेदारी खरीदारी प्रक्रिया को सुव्यवस्थित, सरल और ग्राहकों को इलेक्ट्रिक मोबिलिटी में बदलाव के लिए सशक्त बनाने के लिहाज से की गई है। इस तरह एक्सिस बैंक के वित्तीय उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला अब पूरे भारत में अल्टीग्रीन के ग्राहकों के लिए उपलब्ध होगी। इस साझेदारी के बारे में अल्टीग्रीन के सीएफओ शैलेन्द्र गुप्ता ने कहा, अपनी उत्कृष्ट बिक्री-पश्चात सेवा और एक्सिस बैंक की फाइनेंस संबंधी सेवाओं के साथ, हम अपने ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करना जारी रखेंगे। वहीं एक्सिस बैंक के ग्रुप एक्जीक्यूटिव और हेड रिटेल बैंकिंग सुमित बाली ने कहा, हम अल्टीग्रीन के साथ साझेदारी करके उत्साहित हैं, जिसके साथ हम पर्यावरण-अनुकूल गतिशीलता समाधान बढ़ाने का एक साझा लक्ष्य साझा करते हैं। हमारा उद्देश्य इलेक्ट्रिक गतिशीलता में बदलाव को सभी ग्राहकों के लिए आसान और परेशानी मुक्त बनाना है।

नदी में लापता होने के दूसरे दिन भी नही हो सका वृद्ध का शव बरामद

प्रात : किरण, संवाददाता

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर थाना क्षेत्र के भरपुरा स्थित बूढ़ी गंडक नदी में लापता वृद्ध का शव दूसरे दिन भी बरामद नही हो सका है। एसडीआरएफ टीम व नौका से दूर दूर तक नदी में शुक्रवार को भी शव खोजने का प्रयास किया गया लेकिन शव बरामद नही हो सका। बता दें कि गुरुवार की सुबह भरपूरा स्थित बूढ़ी गंडक नदी में एक अज्ञात वृद्ध छलांग लगा थी। और नदी में लापता हो गए थे।

2 हफ्ते से ज्यादा खाँसी और बुखार है तो टीबी की जाँच जरूर कराएं : डॉ. संजीव

प्रात : किरण, संवाददाता

मोतिहारी। जिला यक्ष्मा केंद्र मोतिहारी में टीबी मुक्त अभियान चलाए जाने को लेकर बैठक आयोजित की गईं। जिसमें जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ. संजीव कुमार ने स्वास्थ्यकर्मियों को कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में जनप्रतिनिधियों को साथ लेकर टीबी पर जागरूकता फैलाएं। उन्होंने बताया कि 2025 तक टीबी के खात्मे के लिए जनसमुदाय को जागरूक करना बेहद जरूरी है। वहीं मौके पर उपस्थित चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. सुनील कुमार ने बताया कि इलाज कराने आए रोगियों से सकरात्मक बर्ताव करना जरूरी है। साथ ही उन्हें संतुलित आहार सेवन से सम्बंधित सुझाव दें। ताकि दवाओं के सेवन के साथ संतुलित आहार का सेवन कर वे जल्द स्वस्थ हों। यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ. संजीव ने बताया कि आमतौर पर देखा जाता है कि लोग 2 हफ्ते से ज्यादा बलगम वाली खाँसी, बुखार से पीड़ित होते हुए भी टीबी की जाँच नहीं कराते हैं। जब उनकी मुश्किलें बढ़नी शुरू हो जाती तब वे अस्पताल का रुख करते हैं। ऐसे में जरूरी है कि लक्षणों को नजरअंदाज न करते हुए तुरंत सरकारी अस्पताल में टीबी की जांच कराएं। ताकि सही समय पर पहचान होने पर दवाओं के सेवन से यह खत्म हो सके। यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ संजीव ने बताया कि जिले के सरकारी अस्पतालों में 5,139 टीबी मरीजों का मुफ्त इलाज हो रहा है। साथ ही उन्हें निक्षय पोषण योजना के लाभ के तौर पर हर महीने 500 रुपए भी दिए जाते हैं। उन्होंने बताया कि टीबी की बीमारी अब लाइलाज नहीं है। जिले के सरकारी अस्पतालों में मुफ्त में टीबी के मरीजों की जाँच एवम इलाज उपलब्ध है। चिकित्सा पदाधिकारी डॉ. सुनील कुमार एवं टीबी मुक्त भारत अभियान के जिला कोऑर्डिनेटर ललित कुमार ने बताया कि दो हफ्ते से ज्यादा बुखार के साथ ही भूख में कमी और वजन कम होना आदि लक्षण दिखे तो तुरंत टीबी की जांच कराएं। उन्होंने कहा कि टीबी रोग हवा के माध्यम से फैलता है। जब टीबी रोग से ग्रसित व्यक्ति घर या बाहर खांसता, छींकता या बोलता है तो उसके साथ संक्रमण बाहर निकलता है। जो हवा के माध्यम से किसी अन्य व्यक्ति को संक्रमित कर सकता है। ऐसे में घर के लोग संक्रमित न हों इसलिए सावधानी बरतनी चाहिए। मुँह पर मास्क जरूर लगाना चाहिए। उन्होंने बताया कि कुछ लोग भूलवश ये गलतियां कर बैठते हैं कि आराम होने पर पूरा कोर्स किए बिना ही दवा बीच में छोड़ देते हैं। ऐसे दवा छोड़ने से बीच में ही टीबी लौट सकता है। वहीँ मरीज को एमडीआर टीबी होने की संभावना बढ़ जाती है। मौके पर जिला यक्ष्मा पदाधिकारी डॉ संजीव, चिकित्सा पदाधिकारी डॉ सुनील कुमार, डब्ल्यूएचओ के राज्य प्रतिनिधि डॉ कुमार गौरव, प्रमोद कुमार, अमरेंद्र कुमार, सुमित कुमार पांडे आदि उपस्थित थे।

फूट ओवर ब्रिज सहित रेलवे परिक्षेत्र में बसे लोगों को रेलवे ने हटाया, दिखें कही आंशु तो कही गम

प्रात : किरण, संवाददाता

रक्सौल। एक तरफ सरकार द्वारा आवास हीनों को आवास एवं भूमि हीनों को भूमि देने का वादा और कार्य कर रही है तो दूसरे तरफ अवैध रूप से सरकारी जमीनों में बसे भूमिहीनों को अतिक्रमनमुक्त के रास्ते हटा रही है। ताजा मामला रक्सौल के रेलवे परिक्षेत्र का है, जहां से डीआरएम के आदेश पर स्थानीय रेलवे पुलिस बल द्वारा रेलवे परिक्षेत्र को खाली कराया गया। जिसमें फूट ओवर ब्रिज के नीचे बसे लोगों के घर बार तोड़ कर उन्हें हटा दिया गया। साथ ही रेलवे परिक्षेत्र में पड़ने वाले सभी लोगों को हटाकर अतिक्रमण मुक्त कराया गया। इसके साथ ही एक बेहतर कार्य ये हुआ कि सड़क पर अवैध रूप से कब्जा जमाए अवैध मनी एक्सचेंज काउंटर अर्थात सभी सटही काउंटर को हटा दिया गया है। भारी मात्रा में पुलिस बल के साथ उक्त अतिक्रमण को हटाया गया, जिससे कई लोगों के आंखों में आंशु भी थे तो कई के चेहरे लटके दिखे। फूट ओवर ब्रिज के नीचे एवं अगल-बगल में बसे जहां कई लोग अब घर बिहीन हो गए तो कई लोगों के सामने बड़ी समस्या खड़ी हो गई। कुछ पीड़ितों ने बताया कि अब वे इतनी जल्दी में अपने बच्चो और परिवार को लेकर कहां जाएं। इस अतिक्रमण के हटने में खास करके भूमि हीनों के बारे में लोगों के अलग-अलग राय दिखें तो मनी एक्सचेंज काउंटर के हटने पर लोग लगभग एक मत में दिखें।

जनता के दरबार मे जिलाधिकारी कार्यक्रम में कई मामलों का हुआ निष्पादन

प्राप्त शिकायतों में भूमि अतिक्रमण भूमि विवाद नल-जल योजना आपसी विवाद जनवितरण आदि से संबंधित मामले ज्यादा

प्रात : किरण, संवाददाता

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा ने समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित जनता के दरबार मे जिलाधिकारी कार्यक्रम में आये 150 परिवादियों से मिलकर उनकी समस्यायों को सुना जिसमें कई मामलों में स्वयं सबंधित पदाधिकारियो से दूरभाष पर बात कर त्वरित निष्पादन का निर्देश दिया शेष आवेदनों को संबधित विभाग के पदाधिकारियो को ससमय निष्पादन को लेकर अग्रसारित कर कृत करवाई से अवगत कराने का निर्देश दिया। प्राप्त शिकायतों में भूमि अतिक्रमण भूमि विवाद नल-जल योजना आपसी विवाद जनवितरण आदि से संबधित मामले सबसे अधिक पाए गए। इसके अतिरिक्त समजिक सुरक्षा योजना बाल विकास परियोजना शिक्षा सहित अन्य कार्यालय में लंबित मामले भी प्राप्त हुए। आनंद कुमार ने जिला पदाधिकारी से शिकायत किया कि राज्य स्वास्थ्य समिति द्वारा उनके पिता की जिनकी कोविड 19 से मृत्यु हो गई थी उनकी मृत्यु की तिथि में टंकण भूलवश परिवर्तन करने के कारण मुझे अनुग्रह अनुदान की राशि नही मिल रही है। शिकायत कर्त्ता पुनिता देवी पिता श्री दुखी सहनी प्रखण्ड-राजनगर ग्राम-गोसाई टोल गोढ़ियारी ने शिकायत किया की सपरिवार करीब दस वर्षो से अपने ससुराल में आवासीय जमीन न रहने के कारण और न नही मैके में आवसीय जमीन न रहने के कारण गोसाई टोल के अस्पताल के जमीन हरिजन कलौनी की जमीन में रहती थीअब मुझे अंचल प्रशासन के द्वारा खाली कराया जा रहा है वही प्रखण्ड- लखनौर के मंदिर कमिटि सदस्य ने शिकायत करते हुए कहा की श्री राधाकृष्ण मंदिर एवं मंदिर के करीब 48 ऐकड़ जमीन पर दबंगो द्वारा कब्जा कर लिया गया है।

वही विजय पासवान ने शिकायत किया की उनको नियोजन पत्र मिलने के उपरांत भी उनका योगदान नहीं लिया जा रहा है।जिलाधिकारी ने न केवल आए हुए परिवादियों की समस्याओं को सुना बल्कि उन समस्याओं के संदर्भ में संबंधित अधिकारियों को कई आवश्यक निर्देश भी दिए। उन्होंने उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्राप्त जनशिकायतों को पूरी गंभीरता से लेकर सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ उसका त्वरित निष्पादन करे। उक्त अवसर पर डीडीसी विशाल राज अपर समाहर्ता नरेश झा सहित कई अधिकारी भी उपस्थित थे।

देवरिया थाना में पुलिस बर्बरता के खिलाफ माले व इंसाफ मंच का प्रतिवाद मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। देवरिया थाना हाजत में पुलिस की बर्बरता से शराफत की मौत तथा इम्तियाज और नौशाद को अधमरा करने के खिलाफ भाकपा-माले और इंसाफ मंच ने शहर में प्रतिवाद मार्च निकाला। मार्च हरिसभा चौक स्थित पार्टी कार्यालय से नारे लगाते हुए निकाला गया जो विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए कल्याणी चौक पहुंचा। इस दौरान संदेहास्पद सीएसपी लूटकांड में गिरफ्तार तीन नौजवानों पर देवरिया कोठी थाना में पुलिस अधिकारियों द्वारा ढाई गई बर्बरता जिसमें एक की मौत तथा दो को अधमरा करने के मामले की उच्चस्तरीय न्यायिक जांच कराने की मांग सरकार से की गई। यह भी मांग की गई कि इसके लिए जिम्मेवार उस क्षेत्र के एसडीपीओ चंदन कुमार तथा थानेदार विनय कुमार सिंह पर हत्या का मुकदमा दर्ज किया जाए तथा नौकरी से बर्खास्त किया जाए। मृतक के परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी, 25लाख रुपए मुआवजा तथा घायल दो नौजवानों को 10-10लाख मुआवजा तथा बेहतर इलाज की गारंटी की जाए। संदेहास्पद लूटकांड के मामले की भी जांच करायी जाए। मार्च में माले राज्य कमिटी सदस्य सह नगर कमिटी सचिव सूरज कुमार सिंह, जिला कमिटी सदस्य वीरबहादुर सहनी, इंसाफ मंच के जिला अध्यक्ष फहद जमां, रेयाज खान, खुशीदा खातुन, सैरा खातुन, नजमा खातुन, शहनाज बेगम, रुखसाना खातुन, नूर मोहम्मद, मोहम्मद तजु, आफिया, गजला प्रवीण, माहिरा प्रवीण, माले नगर कमिटी सदस्य विजय गुप्ता, विनय वर्मा ,धनंजय कुमार, नौजवान सभा के मयंक कुमार सहित अन्य शामिल थे। मार्च को संबोधित करते हुए माले व इंसाफ मंच के नेताओं ने कहा कि देवरिया कोठी थाना कांड में प्रशासन केवल थाना के पुलिसकर्मियों का तबादला कर मामले को टालने में लगी हुई है। मामले में मुख्य दोषी एसडीपीओ चंदन कुमार को बचाया जा रहा है। पुलिस-प्रशासन के इसी तरह के कामचलाऊ तौर-तरीकों के कारण निर्दोष लोगों को फंसाया जाता है तथा दोषियों को बचाया जाता है। इस दौरान शहर सहित जिले में बढ़ रही आपराधिक गतिविधियों, हत्या व छिनतई के लिए पुलिस के तौर-तरीकों को कठघरे में खड़ा किया गया। यह भी आरोप लगाया गया कि पुलिस-प्रशासन कई मामलों में बड़े अपराधियों व माफियाओं को संरक्षण देने में लगी रहती है। आपराधिक गतिविधियों के कारण आमलोग काफी परेशान हैं। मुजफ्फरपुर माफियाओं और अपराधियों का ठिकाना बन गया है जो चिंता का विषय है। इस मामले में सरकार को सख्त कारवाई करनी चाहिए।

संक्षिप्त खबरें

जाति आधारित गणना की प्रगति के संबंध में डीएम ने की विस्तृत समीक्षा

भागलपुर। जिलाधिकारी की अध्यक्षता में विडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से सरकार द्वारा निर्धारित जाति आधारित गणना की प्रगति के संबंध में विस्तृत समीक्षा की गई, साथ ही कार्य को पूर्ण करने के लिए कई आवश्यक दिशा निदेश दिये गये है। समीक्षा बैठक के क्रम में जाति आधारित गणना संबंधित निर्धारित कार्यों को यथाशीघ्र पूर्ण करने का निदेश जारी कर दिया गया है। बैठक के क्रम में सभी वरीय पदाधिकारियों को निदेश दिया गया है कि प्रखंड परिभ्रमण के क्रम में जाति आधारित गणना अंतर्गत कार्यों का औचक निरीक्षण कर किये जा रहे कार्यों का सत्यापन करेंगे एवं आंकड़ा प्रवृष्टि की जॉच कॉपी संबंधित विभाग को संग्लन करेंगे, साथ ही यह सुनिश्चित करना आवश्यक होगा की निर्धारित कार्य त्रुटि रहित पूर्णतः किया गया है। वही प्रखंड स्तर पर ग्रामीण क्षेत्रों में संबंधित कार्य को लेकर बैठक में मौजूद सभी विकास पदाधिकारी को भी जाति आधिरित गणना के निर्धारित कार्यों के नियमित समीक्षा सतत पर्यवेक्षण हेतु निदेशित किया गया है साथ ही जाति आधारित गणना में संलग्न सभी कमीर्यों को निर्धारित कार्यों को त्रृटि रहित पूर्ण करने करने का निदेश दिया गया।

पुलिस ने हथियार संग दो बदमाश को किया गिरफ्तार

सदर मुंगेर। धरहरा थाना पुलिस ने गुरुवार की देर रात मानगढ़ गांव से हथियार संग दो बदमाश को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार दोनो बदमाश मानगढ़ गांव का है। उनमें से एक युवक मानगढ़ गांव निवासी पप्पू वर्मा के पुत्र गोलू कुमार है। जबकि दूसरा नाबालिग है। इनके पास से पुलिस ने एक पिस्टल बरामद किया। थानाध्यक्ष रोहित कुमार सिंह ने बताया कि गुप्त सूचना पर एस आई राजीव कुमार के नेतृत्व में पुलिस टीम गठित की गई। इस दौरान मानगढ़ गांव में छापेमारी की गई। मानगढ़ आटो स्टैंड के पास से दोनो युवक को संदिग्ध अवस्था मे देखकर पुलिस को शक हुआ। पूछताछ के क्रम मे युवक पुलिस को चकमा देकर भागने लगा। पुलिस ने घेराबंदी कर दोनो युवक को पकड़कर तलाशी ली तो उसके पास से एक पिस्टल बरामद हुआ। पुलिस दोनो युवक से सघन पूछताछ कर रही है। साथ ही उसके अपराधिक इतिहास को खंगाला जा रहा है। पुलिस को आशंका है कि किसी अपराध को अंजाम देने की फिराक से दोनो युवक वहां पर खड़ा था। फिलहाल पुलिस प्राथमिकी दर्ज कर शुक्रवार को न्यायिक हिरासत मे जेल भेज दिया।

करंट के चपेट में आया किसान, हुई मौत

गंगटा मोड। गंगटा थाना क्षेत्र बनाहरा पंचायत के मिल्की गांव निवासी उमाकांत का बेटा पवन कुमार एवं भैरव प्रसाद सिंह का बेटा रिंकू कुमार सिंह दोनों पटवन के लिए आपने खेत गए हुए थे जहां खेत में 11000 वोल्ट का तार लटका हुआ था। तार को ऊपर करने के क्रम में करंट के चपेट मेंपवन कुमार सिंह की मौत घटनास्थल पर हो गई। वही रिंकू कुमार सिंह घायल हो गए। ग्रामीणों के सहयोग से उसे इलाज के लिए खड़गपुर स्वास्थ्य केंद्र लाया गया। जहां डॉक्टर ने पवन कुमार को अमित घोषित कर दिया। जबकि घायल रिंकू कुमार सिंह को बेहतर इलाज के लिए भागलपुर रेफर कर दिया गया।

राहुल गांधी के मामले में सुप्रीम कोर्ट का निर्णय स्वागत योग्य

मुंगेर। कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी पर पूर्णेश मोदी केस में उच्च न्यायालय द्वारा जो 02 वर्ष की अधिकतम सजा सुनाई गई थी, उस निर्णय के विरुद्ध राहुल गांधी के वकीलों द्वारा दिए गए तर्क पर अपनी सहमति व्यक्त करते हुए यह निर्णय दिया की मोदी सरनेम केस में राहुल गांधी को अधिकतम 02 साल की सजा सुनाना गलत था। उसे एक वर्ष से काम की भी सजा दी जा सकती थी। उच्च न्यायालय के इस फैसले पर खुशी व्यक्त करते हुए राजद बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव प्रो. विनय कुमार सुमन ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट का यह ऐतिहासिक निर्णय से देश की करोड़ों जनता का न्यायपालिका के प्रति विश्वास बढ़ा है। सुप्रीम कोर्ट के इस निर्णय से राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता फिर से बहाल हो जाएगी।

मशरक नगर पंचायत में 80 प्रतिशत जातीय गणना पूर्ण

छपरा। मशरक नगर पंचायत में 80 प्रतिशत जातीय गणना का कार्य शुक्रवार को पूर्ण हुआ। हालांकि इक्के दुक्के वार्ड में आधे दर्जन परिवार ने गणना कराने से इंकार कर दिया। जिसकी सूचना प्रगणक एवम पर्यवेक्षक ने उप चार्ज अधिकारी मशरक बीसीओ संदीप कुमार को दी। जिसके बाद चार्ज अधिकारी एवम पर्यवेक्षक मशरक नगर पंचायत मुख्य पार्षद सोहन महतो से मिलकर जातीय गणना में वार्ड सदस्य के माध्यम से सहयोग कर लोगो को जागरूक करने का आग्रह किया। कुछ परिवार रिश्तेदारी में गए है जिन्होंने एक दो रोज में वापस लौटकर गणना प्रपत्र भरने का आश्वासन दिया। इधर मुख्य पार्षद ने सभी वार्ड सदस्य को जातीय गणना में सभी लोगो को जागरूक कर निर्धारित समय सीमा के अंदर अपना गणना कराने का सुझाव दिया।

पापी पेट का सवाल है साहब, बाढ़ को ले सब कुछ करना पड़ता है

गंगा का लगातार बढ़ रहा जलस्तर, पूल से 32 फिट नीचे रस्सी के सहारे उतर लोग निकाल रहे जलावन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले के गंगा नदी तटवर्ती इलाके में रहने वाले लोगों के बीच गंगा के जलस्तर लगातार हो रही बढ़ोतरी से दियारा व निचले इलाके में बसे हुए लोग बाढ़ के आने के पूर्व अपने जीविकोपार्जन हेतू व्यवस्था की तैयारी में जुट गए हैं, लेकिन इसी के बीच एक खतरनाक तस्वीर भी सामने आई है, जो दशार्ता है कि लोग दो वक्त के रोटी इंतेजाम हेतू पेट की आग को बुझाने के लिए कितनी जद्दोजहद करनी पड़ती हैं, दरअसल गंगा का जलस्तर बढ़ने से विक्रमशिला पूल के निचे का हिस्सा टापू बन गया है धीरे धीरे वह हिस्सा जलमग्न होता जा रहा है, यहां पर आसपास के कई किसान खेती करते थे, लेकिन उक्त स्थल पहुंच पथ मार्ग का एक मात्र साधन नाव है और जलस्तर बढ़ने के बाद नाव भी सहारा नहीं बन पा रहा है, ऐसे में लोग विक्रमशिला सेतु से 32 फिट निचे अपने खेत मे पूल से रस्सी के सहारे उतरते नजर आ रहे हैं। छोटा हो या बड़ा सभी रस्सी के सहारे ही उतरते है।

जहां किसान नीचे उतर कर अपने जलावन जमा कर रखे थे उसे हटाने की जद्दोजहद कर रहे है, ताकि पानी बढ़ने के बाद जलावन को बचाया जा सके, रस्सी के सहारे ही किसान उक्त जलावन के बोझे को भी खींच रहे हैं, उक्त तस्वीर कहीं न कहीं डरावनी भी दिख रही है क्योंकि 32 फिट की ऊँचाई से अगर रस्सी का पकड़ कही छूटा तो कितना बड़ा हादसा होगा, इसका महज आशंकित घटना के दृश्य का अंदाजा लगाया जा सकता है। वही किसान अब बड़े नाव से मवेशियों को बाहर निकालने की तैयारी में जुटे हुए हैं। क्योकि गंगा का यह हिस्सा पूरी तरह जलमग्न हो जाएगा।

जिसके बाद यहाँ किसानों की खेती भी बढ़ के पानी से प्रभावित हो जायेगी, इस दियारा क्षेत्र इलाके में नाथनगर, परबत्ता, राघोपुर, महादेवपुर, बरारी सहित आसपास के दर्जनों किसान सब्जियां उपजाते हैं, यहीं पर आश्रित हो कर अपने मवेशियों को भी रखते हैं। यहां पर रहने वाले किसान हमेशा रस्सी के सहारे ही ऊपर जाते है और ऊपर से नीचे उतर कर आते हैं, दूध, जलावन हो या सब्जियां सभी सामान रस्सी के सहारे ही खींचते नजर आते हैं।

जेवर चमकाने का झांसा दे सोने की बाली लेकर हुआ फरार

फरार होने के क्रम में चोरों को ग्रामीणों ने खदेड़ कर दबोचा, जमकर हुई धुनाई

प्रात : किरण संवाददाता

नाथनगर (भागलपुर)। नाथनगर थाना परिक्षेत्र अंतर्गत माधोपुर गांव इलाके में एक ग्रामीण महिला का जेवर चमकाने का झांसा दे एक जोड़ी सोने की बाली लेकर भाग रहे दो चोर को लोगों ने पीछा कर दबोच लिया। जिसके बाद ग्रामीणों ने दोनों ठग चोर की जमकर धुनाई कर दी जिसके बाद ग्रामीणों ने स्थानीय नाथनगर पुलिस के हवाले कर दिया । घटना के बाद पीड़िता सीमा देवी ने नाथनगर थाना में पकड़ाए दोनो चोरों के विरुद्ध लिखित शिकायत दर्ज कराई है। वहीं पीड़िता महिला सीमा देवी ने घटना को लेकर बताया कि उसके घर माधोपुर गांव इलाके में एक बाइक पर सवार दो युवक सोने चांदी की जेवर सफाई करने की बात कह कर आया और जब एक जोड़ी सोने की बाली जिसका कीमत करीब तीस से पैंतीस हजार रुपया था। जैसे ही सफाई करने के लिए दिया तो उसने एक पैकेट में पाउडर भर कर दिया और कहा कुछ देर बाद निकाल लेना उसके बाद दोनो बाइक पर सवार होकर भागने लगे। इस दौरान जैसे ही महिला ने जब पैकेट खोल कर देखा तो उसमें सोने की बाली नहीं थी, जिसके बाद शोर मचाने पर स्थानीय लोगों की भीड़ जुट गई और उक्त दोनों चोर को खदेड़ कर पकड़ लिया। वही ग्रामीणों ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। वही पकड़ाए गए चोर की पहचान नवगछिया गोपालपुर थाना क्षेत्र के तीनटंगा करारी निवासी विजय साह और भागलपुर बरारी थाना क्षेत्र के मधु चौक निवासी रजीव कुमार साह के रूप के हुई है। वहीं मामले को लेकर नाथनगर के थानाध्यक्ष महताब खान ने बताया कि पीड़िता के बयान पर लिखित शिकायत दर्ज कर सोने की कान की बाली को बरामद कर लिया गया है, साथ ही गिरफ्तार दोनों चोर के विरुद्ध कानूनी प्रक्रिया पूरी करने के साथ ही मेडिकल जांच के साथ न्यायिक हिरासत में भेज दिया जाएगा।

ज्ञात हो कि विगत 25 मार्च को शहरी क्षेत्र के आदमपुर चौक के समीप नकली सोना दिखाकर ठगी करने मामले में दो आरोपियों को भीड़ ने पकड़ कर पुलिस के हवाले किया था। उक्त घटना के बाद से पूरे शहर व आसपास क्षेत्र इलाके में स्वर्णिम आभूषण के ठगों का लगातार मामला सामने आ रहा है। इस मामले को लेकर भी लोग सचेत होने का नाम नही ले रहे हैं।

जातिगत जनगणना को हरी झंडी मिलते ही कार्यकर्ताओं ने मनाया जश्न

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। बिहार सरकार अपने खर्चे पर जातिगत जनगणना कराने को लेकर अग्रसर हो गई है, हालांकि विगत वर्ष ही जाती आधारित सर्वेक्षण की प्रक्रिया शुरूआत कर दी गई थी, लेकिन कुछ कारणवस इसे हाईकोर्ट के आदेश पर स्थगित कर रोक लगा दिया गया था। वही पुनः उक्त कार्य को लेकर सरकार को कार्य पूरा करने की न्यायालय ने हरी झंडी दे दी है। उक्त आदेश के मिलने के पश्चात नीतीश कुमार की महागठबंधन सरकार में एक बार फिर से खुशी की लहर जाग उठी है। सूबे में जातिगत जनगणना की शुरूआत हो चुकी है, जिसको लेकर राज्य भर में जिलाधिकारी को पत्र भेज कर जाती आधारित जनगणना कार्य को शुरू करने के साथ जल्द से जल्द कार्य पूरा करने का नोटिफिकेशन जारी किया जा चुका है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव द्वारा न्यायालय के फैसले का स्वागत करने के साथ ही कार्यकताओं के बीच खुशी की लहर देखने को मिल रही है। जाति जनगणना को लेकर हाईकोर्ट के फैसले की सूचना मिलने के बाद जनता दल यूनाइटेड भागलपुर इकाई के द्वारा एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी जाहिर करते हुए बधाई दी। वही मामले को लेकर संगठन के जिला अध्यक्ष विपिन बिहारी सिंह के द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की। इस दौरान उन्होंने कहा कि जातिगत जनगणना सरकार की एक सफल प्रयास है, जिसके तहत तो गरीब पिछड़े शोषित वंचित लोगों के लिए एक सकारात्मक कदम सरकार के द्वारा उठाया जा सकेगा, इतना ही नहीं जो आर्थिक रूप से बिछड़े होंगे उन्हें भी मुख्यधारा में लाने की कवायद की जाएगी, साथ ही उन्होंने कहा कि इससे आम जनता का काफी भला हो सकेगा, और सरकार एक साइंटिफिक डाटा के तहत लोगों को योजनाओं का लाभ दे सकेगी, हालांकि उन्होंने बीजेपी पर कटाक्ष करते हुए कहा कि केंद्र सरकार को देशभर में जातिगत जनगणना करानी चाहिए थी, लेकिन भाजपा उन लोगों के हित से कोई वास्ता नहीं है, साथ ही कहा कि जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में एक डेलिगेशन प्रधानमंत्री से मुलाकात करने के लिए गए थे, लेकिन बावजूद इसके केंद्रीय स्तर से इसे मंजूरी नहीं मिली क्योंकि बीजेपी को 2024 लोकसभा चुनाव का डर था, जिस कारण उन्होंने जातिगत जनगणना जैसे अहम मुद्दे को प्राथमिकता नहीं दी, हालांकि बिहार सरकार अपने बूते इसे कराने जा रही है, और न्यायालय ने भी इसे पूर्णता मंजूरी दे दी है, न्यायालय के फैसले का वे लोग स्वागत करते हैं। इस दौरान नाथनगर के पूर्व विधायक लक्ष्मीकांत मंडल, जिला उपाध्यक्ष इंद्रप्रकाश मंडल, प्रदेश उपाध्यक्ष महिला प्रकोष्ठ बिनु बिहारी सिंह, जेडीयू प्रवक्ता सह मीडिया प्रभारी शिशुपाल भारती सहित कई गणमान्य नेता व कार्यकर्ता मौजूद थे।

हरियाली तीज बड़े ही धूमधाम से महिलाओं ने मनाया

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिला लायंस क्लब प्राइम की महिलाओं द्वारा शहरी क्षेत्र के नया बाजार स्थित हिंदुस्तान क्लब में हरियाली तीज का कार्यक्रम बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। सभी महिलाओं ने रंग बिरंगी पोशाक, परिधान पहनकर राजस्थानी गीत पर नृत्य किया और लजीज पकवान और चाट का लुफ्त उठाया। कार्यक्रम की संयोजिका लायन अंबिका डालमिया शेखर, लायन तृप्ति जैन, ला. कंचन जैन, लायन शिल्पी छापोलीका एवं ला. तृप्ति शर्मा ने अतिथियों का प्रीति शेखर, जिया गोस्वामी, लायन इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 322ए के जिलापाल की जिला की प्रथम महिला ला. बबीता अग्रवाल लायन सारिका खेत्रीवाल (डिस्ट्रिक्ट ग्रीटर), जोनल चेयरपर्सन ला. प्रज्ञा साह का स्वागत तिलक लगाकर और अंग वस्त्र भेंट कर किया गया। ला. बरखा बुधिया, ला. शिखा डोकानिया, ला. रैना गोयनका, ला रीना जैन, ला. तृप्ति झुनझुनवाला, ला. प्रीति जैन, ला. वंशिका आदि महिलाओं ने कार्यक्रम का चाट पकवान का लुफ्त उठाया साथ ही आज के आयोजित कार्यक्रम में ला. स्वीटी जैन एवं ला. ऋषिका मांडिया का विशेष दिन होने पर केक काटकर जन्म दिवस मनाया गया। लायंस क्लब ऑफ भागलपुर प्राइम के अध्यक्ष लायन सुधांशु शेखर, सचिव अभिषेक डोकानिया, कोषाध्यक्ष ला. आयुष छापोलीका एडमिनिस्ट्रेटर ला. सुमित जैन ने सभी महिलाओं को हरियाली तीज उत्सव पर उपस्थित महिला सदस्यों ने बधाई दी।

पुलिस की बर्बरता आधी रात धरनार्थियों पर किया लाठीचार्ज

प्रात : किरण संवाददाता

भागलपुर। जिले में विगत दिनों मोहर्रम जुलूस के दौरान उपद्रवियों ने जिले के सौहाद्र माहौल को बिगाड़ने के लिए धार्मिक स्थल पर पत्थर बाजी की घटना को अंजाम दिया था, जिससे पूरे क्षेत्र इलाके में स्थिति तनावपूर्ण माहौल में तब्दील हो गई थी। वही मामले को लेकर स्थानीय पुलिस प्रशासन ने आपाधापी में घटनास्थल पर आक्रोशित लोगों को दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई किये जाने के आश्वासन देकर मामला शांत कराया था और वही पुलिस ने अज्ञात के विरुद्ध एफआईआर दर्ज किया था। पुलिस द्वारा धार्मिक स्थल पर पथराव करने वाले उपद्रवियों की गिरफ्तारी के मांग ले विगत तीन दिन से भाजपा के नेता सह पूर्व जिलाध्यक्ष रोहित पांडे आमरण अनशन पर बैठे गये थे। बावजूद इसके पुलिस ने अभी तक उपद्रवियों को गिरफ्तार नहीं किया। सरकार के पुलिसिया कार्रवाई रवैये को देखते हुए भाजपा नेता रोहित पांडे सहित कई समर्थक के साथ मिलकर बिहार सरकार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का अर्थी जुलूस निकाला और पुनः धरना स्थल कचहरी चौक पर बैठ गए थे। वही स्थिति बिगड़ता देख अर्द्ध रात्रि में धरना स्थल पर भारी संख्या में पुलिस पहुंचकर धरनार्थियों को जबरन धरना स्थल से उठाकर अस्पताल ले जाया गया। वही पुलिस कर्मियों ने धरना स्थल से सभी समान को उठाकर ट्रैक्टर पर लोड कर जब्त कर लेजाने का काम किया है।मामले को लेकर भाजपा नेता रोहित पांडे ने मीडिया प्रतिनिधि से बातचीत में उन्होंने बताया है की पुलिस ने जबरन गलत मंशा से उन्हें उठाकर अस्पताल लाया है। वही इस घटना क्रम में स्थल पर मौजूद पत्रकार पर भी पुलिस कर्मियों ने अपनी बर्बरता का परिचय देते हुए धक्का-मुक्की एवं लाठियां भांजी है। वही फिलहाल जिले में धार्मिक स्थल पर पथराव मामले को लेकर स्थिति तनावपूर्ण माहौल में दिखाई दे रही है।

मीडिया के प्रतिनिधि पुलिस प्रशासन के विरुद्ध उतरे सड़क पर दिया धरना

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। शहरी क्षेत्र इलाके के सटे परबत्ती मोहल्ले के बीचोबीच स्थित मां बुढ़िया काली मंदिर के मुख्य द्वार पर असमाजिक तत्वों जैसे लोगों ने पथराव की घटना को अंजाम दिया था, उक्त मामले को लेकर लगातार भाजपा के समर्थकों व कार्यकताओं ने दोषियों के गिरफ्तारी की मांग को लेकर लगातार आंदोलन कर रही है। वहीं विगत देर रात अनशन पर बैठे भाजपा के पूर्व जिला अध्यक्ष रोहित पांडे और अन्य कार्यकताओं को पुलिस ने जबरन धरना स्थल से उठाकर अस्पताल लेजाया गया। वहीं खबर कवरेज के क्रम में कुछ पत्रकार साथियों को मौजूद पुलिस कर्मियों ने बर्बरतापूर्वक सभी की पिटाई कर दी। इस मामले को लेकर जिले के संबंधित मीडिया प्रतिनिधि आक्रोशित हो समाहरणालय के मुख्य मार्ग पर सड़क पर धरने पर बैठ गये हैं। वही मीडिया प्रतिनिधि सह पत्रकार की पिटाई करने वाले दोषी पुलिस कर्मियों की निलंबित किये जाने की जिले के वरीय पुलिस अधीक्षक से मांग कर रहे हैं, वही आक्रोशित मीडिया प्रतिनिधि ने कहा है कि सरकार मीडिया के ऊपर किये पुलिसिंग हमले की कड़ी कार्रवाई करें, वैसे पुलिस अधिकारी पर कार्रवाई हो जिनके निर्देश पर मीडिया प्रतिनिधि की पिटाई की गई है, वैसे पुलिस पदाधिकारियों के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई करते हुए उन्होंने निलंबित किया जाए।

लोक अदालत का किया जाएगा आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। बिहार राज्य विधिक सेवा प्राधिकार पटना के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर द्वारा आगामी 8 अगस्त से 10 अगस्त 2023 को चलंत लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। इस की जानकारी प्रभारी सचिव सह अपर जिला न्यायाधीश चतुर्थ प्रवाल दत्ता ने दी है। जिला विधिक सेवा प्राधिकार के प्रभारी सचिव ने बताया की चलंत लोक अदालत 8 अगस्त2023 को सदर मुंगेर अनुमंडल के प्रखंड धरहरा में 10 बजे पूर्वाहन, प्रखंड जमालपुर में 12:30 बजे अपराहन, प्रखंड सदर मुंगेर में 2:30 बजे अपराह्न चलंत अदालत का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसके दूसरे दिन 9 अगस्त 2023 को खड़गपुर अनुमंडल के टेटिया बंबर प्रखंड में 10:00 पूर्वाहन हवेली खड़गपुर प्रखंड में 12:30 बजे अपराहन एवं बरियारपुर प्रखंड में 2:30 अपराह्न लोक अदालत लगाया जाएगा। जबकि 10 अगस्त 2023 को तारापुर अनुमंडल क्षेत्र के संग्रामपुर प्रखंड में 10:00 बजे पूर्वाहन, तारापुर प्रखंड में 12:30 बजे अपराहन एवं असरगंज प्रखंड में 2:30 बजे अपराहन चलंत लोक अदालत का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने बताया की लोक अदालत आपके द्वार, आपके गांव कस्बों में पहुंच रहा है, जिसमें अधिक से अधिक सभी प्रकार के सुलहनीय क्रिमिनल मुकदमा, दीवानी (सिविल) मुकदमा के साथ राजस्व मुकदमों का निपटारा किया जाना है।

सड़क पर जल जमाव से ग्रामीणों को हो रही है परेशानी

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)।बिहार सरकार के लाख प्रयास करने के बावजूद बिहार का हर गली के साथ नाली का पक्की करण फेल हो गया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार संग्रामपुर प्रखंड श्रेत्र के अंतर्गत ददरी जाला गांव के वार्ड संख्या 02 एवं 03 का सड़क जलमग्न हो गया है। बताया जाता है कि गांव के लगभग तीन दर्जन से अधिक के घर में गंदे नाले की पानी प्रवेश कर गया है। इस कारण से ग्रामीणों को घर और सड़क पर चलने -फिरने में कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि जब बरसात होती है तो सड़क पर कुछ पानी दिखाई पड़ता है जाला गांव के सड़क पर 365 दिन पानी ही पानी दिखाई पड़ता है सड़क के पानी में अगर मछली छोड़ दिया जाए तो मछली खाने के काम में जरूर आ जाएगा ऐसा ही नजारा हो गया है । इस नाली के गंदे पानी के वजह से गांव में हैजा का प्रकोप बढ़ गया है ग्रामीण चिकित्सक सह पूर्व पंचायत समिति सदस्य डॉ संजय कुमार ने बताया कि हमारे यहां हर रोज दर्जनों से अधिक के पेशेंट आता है। उन्होंने कहा कि हैजा विमारी से प्रभावित होकर दर्जनों ग्रामीण आपने इलाज कराने के लिए आते हैं। गांव के सैकड़ों ग्रामीण सड़क के गंदे नाले में चलकर रोजमर्रा के सामान लाने के लिए बाजार एवं गांव आते जाते रहते हैं।

कहते हैं ग्रामीण: ग्रामीण मिथुन कुमार शाह महेंद्र शाह मुकेश कुमार साह ने बताया कि अधिक समय बीत जाने के बाद भी इस नाला के पानी का निकाश अभी तक नहीं हुआ है।उन लोगों ने बताया कि जब चुनाव का वक्त आता है तो मुखिया विधायक सांसद सभी लोग वोट मांगने के लिए आते हैं वादे करके वोट लेकर चले जाते हैं। लेकिन इस गांव को देखने वाला कोई नहीं है।

पंचायत के मुखिया ने कहा: इस संदर्भ में पंचायत के मुखिया पिंटू मंडल ने बताया कि निजी जमीन होने एवं पानी का निकास नहीं होने के कारण नाला बनाने का कार्य नहीं हो सका है जैसे ही पानी निकास के लिए रास्ता उपलब्ध होता है नाला बनाने का कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा।

प्रतियोगिता 2023-24 का हुआ आयोजन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार राज्य खेल प्राधिकरण एवं जिला प्रशासन भागलपुर के संयुक्त तत्वाधान में जिला स्तरीय सुब्रतो मुखर्जी फुटबॉल अंडर 14 बालक एवं अंडर-17 बालक व बालिका प्रतियोगिता 2023-24 का आयोजन स्थानीय सैंडीस कंपाउंड मैदान परिसर में किया गया। इस प्रतियोगिता में अंडर 14 बालक वर्ग में मध्य विद्यालय ममलखा विजेता एवं उच्च विद्यालय नारायणपुर उपविजेता रही साथ ही अंडर 17 बालक वर्ग में साहू परबत्ता उच्च विद्यालय विजेता एवं उच्च विद्यालय ममलखा उपविजेता रही घोषित किया गया है।

दोनों ग्रुप के विजेता टीम को आयोजित होने वाले राजस्थानी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए चयनित किया किया गया है। आयु वर्ग सत्रह की राज्य स्तरीय सुब्रतो मुखर्जी फुटबॉल प्रतियोगिता बांका में 5 अगस्त से आयोजित होना तय किया गया है जिसमें भागलपुर का मैच 6 अगस्त को निर्धारित है। वही राज्य स्तरीय अंडर फोर्टीन सुब्रतो मुखर्जी फुटबॉल प्रतियोगिता भागलपुर के खेल मैदान में ही आयोजित है, जिसमें मध्य विद्यालय समलखा की टीम भागलपुर का प्रतिनिधित्व करते हुए आगामी 6 अगस्त को वैशाली जिले की टीम से भिड़ेगी। आज के जिला स्तरीय प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में मनोज कुमार मंडल, शत्रुघन कुमार सिंह, गोपाल कुमार अच्छू एवं सादिक हुसैन थे । इसके पूर्व प्रतियोगिता की शुरूआत जिला खेल पदाधिकारी जयनारायण कुमार ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर किया गया। इस अवसर पर मिनाल किशोर, सतीश कुमार, अमीर खान, मानस कुमार, राजीव लोचन, चंद्र भूषण सिंह, चंदन कुमार सिंह इत्यादि उपस्थित थे। वही खेल प्रतियोगिता के विजेता हुए खिलाड़ियों को प्रमाण पत्र मेडल एवं ट्रॉफी से सम्मानित किया गया।

13वां राष्ट्रीय अंग दान दिवस कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। अंगदान को बढ़ावा देने की एक महत्वपूर्ण पहल की शुरूआत करने के साथ एनटीपीसी कहलगांव में 13वां राष्ट्रीय अंग दान दिवस कार्यक्रम आयोजित की गई। परियोजना प्रमुख (कहलगाँव) नारायण प्रकाश शाहर, ने स्थानीय प्रसाशनिक भवन के चाणक्य सभागर में राष्ट्रीय अंग दान दिवस कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए एनटीपीसी कमियों को अंग दान के उद्देश्य में समर्थन और योगदान देने की शपथ दिलाई गयी।

इस अवसर पर परियोजना प्रमुख (कहलगाँव) श्री नारायण प्रकाश शाहर ने अपने संबोधन में एनटीपीसी कर्मियों को अंगदान के लिए प्रेरित करते हुये कहा कि भारत में जितनी अंगदान की जरूरत है, उतना हो नहीं रहा है। अंग दान जीवन दान महा अभियान को लेकर उन्होने बताया कि एक व्यक्ति अपने शरीर के अंगों को दान करके करीब 50 लोगों को जीवन दे सकता है, जो लोग किसी बीमारी या अन्य वजह से अपने खास अंगों को खो देते हैं, या उनके अंग खराब हो जाते हैं, ऐसे में समाज कल्याण और लोगों को नया जीवन देने की सोच के साथ बहुत से स्वस्थ लोग अपने जीते जी या मृत्यु के बाद अंगदान करके लोगों को एक नई जिंदगी देते हैं। इस कार्यक्रम के दौरान चिकित्सा अधिकारी (जीवन ज्योति चिकित्सालय) डॉ. सुष्मिता सिंह ने मुख्य रूप से भारत में अंगदान के वर्तमान परिदृश्य पर व्यावहारिक आंकड़े प्रस्तुत किए साथ ही उन्होंने अंग दान के महत्व को बताते हुये कहा कि भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे महत्वपूर्ण जागरूकता कार्यक्रमों एक है उन्होंने इस पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला साथ ही उन्होंने कहा कि परियोजना-प्रभावित गांवों सहित स्थानीय इलाके में भी अंग-दान जागरूकता अभियान जीवन ज्योति अस्पताल द्वारा चलाया गया है। कार्यक्रम के दौरान महाप्रबंधक (ओ&एम) संजीव कुमार साहा, महाप्रबंधक (एश डाइक मेनेजमेंट) राजेश गुप्ता, महाप्रबंधक (एफजीडी) राकेश चौहान,अपर महाप्रबंधक (मानव संसाधन) सौरव शर्मा एवं सभी विभागों के प्रमुख तथा एनटीपीसी कर्मचारीगण उपस्थित थे, जिन्होंने अंग दान के नेक काम के लिए अपना समर्थन व्यक्त किया।

भाजपा के आक्रोशित कार्यकर्ताओं ने की अर्थी जुलूस आयोजित

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। विगत 29 जुलाई को शहरी क्षेत्र के सटे विश्वविद्यालय थाना क्षेत्र स्थित परवत्ती मोहल्ले के बीचोबीच में स्थापित धार्मिक स्थल पर असामाजिक तत्व के लोगों के द्वारा पथराव की घटना को अंजाम दिया गया था। घटना के 6 दिन बीत जाने के बावजूद अब तक जिला पुलिस प्रशासन द्वारा असामाजिक तत्व के लोगों के विरुद्ध कोई कार्रवाई व उनकी गिरफ्तारी नहीं किये जाने से भाजपा के भागलपुर विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी रहे रोहित पांडे विगत 3 दिनों से स्थानीय कचहरी चौक स्थित समाहरणालय गेट के समीप आमरण अनशन धरना देकर बैठे हुए हैं, बावजूद इसके जिला पुलिस प्रशासन द्वारा अबतक असामाजिक तत्वों की गिरफ्तारी को लेकर कोई ठोस पहल नहीं किये जाने पर आक्रोशित भाजपा के कार्यकर्ता एवं विभिन्न सामाजिक संगठन के लोगों ने स्टेशन चौक से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का अर्थी जुलूस का आयोजन किया गया। इस अर्थी जुलूस को स्थानीय स्टेशन चौक मार्ग से होते हुए भगत सिंह चौक मार्ग के रास्ते घंटाघर होते हुए कचहरी चौक पहुंची। जहां पूरे हिंदू रीति रिवाज के तहत क्रिया क्रम प्रक्रियाओं के साथ विधिवत रूप से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को मुखाग्नि दी गई। इस दौरान अर्थी जुलूस में शामिल लोग मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते दिखाई दिये।

मुंगेर शहर में फन काट रहा कोढ़ा गैंग, किसान का उड़ाया 50 हजार रुपए

मुंगेर। मुंगेर - जमालपुर मुख्य मार्ग के सफिया सराय ओपी क्षेत्र में इंदुरुख ग्राम निवासी किसान अजय सिंह के थैले से कोढ़ा गैंग के सदस्यों ने 50 हजार रुपए नगद राशि सहित कई जरूरी कागजात को गायब कर बेखौफ तरीके से चलते बने। मामले के बारे में जानकारी देते हुए किसान अजय सिंह ने बताया कि भारतीय स्टेट बैंक शाखा जमालपुर से 50 हजार रुपए निकासी कर सफिया सराय स्थित ग्रामीण बैंक साइकिल से जा रहे थे। रास्ते में एक चापानल देखकर में शर्ट पर लगे गंदे को धोने लगा इसी बीच दो लड़का बाइक रोककर मुझसे बातें करते हुए कहने लगा क्या हुआ बाबा। मुझे बातों में उलझा कर मेरे साइकिल में लगे रुपए से भरे थैले को लेकर भाग गए। थैले में नगद 50 हजार रुपए सहित पासबुक, आधार कार्ड सहित कई जरूरी कागजात थे।

संक्षिप्त खबरें

प्रखंड व नगर पंचायत गड़हनी में दूसरे चरण का जाति आधारित गणना पूर्ण

गड़हनी। भोजपुर जिले के गड़हनी प्रखंड क्षेत्र व नगर पंचायत गड़हनी में दूसरे चरण का जातीय आधारित जनगणना बुधवार से शुरू शुरू हुआ था जो शुक्रवार के शाम 5 बजे तक सौ प्रतिशत पूरा कर लिया गया हैं।वही प्रखंड के सभी पंचयात व नगर पंचायत में 44 पर्वेक्षको व प्रगणनको को लगा कर कार्य पूर्ण कराया गया ।इस संबंध में बीडीओ बिरेन्द्र कुमार ने बताया कि गड़हनी प्रखंड व नगर पंचायत में 100 प्रतिशत जाति आधारित जनगणना के कार्य पूरा कर लिया गया अब उसे इंट्री करना बाकी हैं।वही नगर पंचायत कार्यपालक पदाधिकारी सुजीत कुमार के देख रेख में जाती गणना का कार्य को अंतिम रूप दिया गया ।बतादें की जातीय आधारित जनगणना में मकान सूचीकरण, गणना का निर्धारण,गृह संख्या निर्धारण,संक्षिप्त गृह पंजी को तैयार कर लिया गया था,बचे हुए कार्य को अंतिम रूप देने में शिक्षक का भरपूर सहयोग मिला ।

गरीबों के लिए मलिकायिन ढाबा जल्द खुलेंगे : आकाश

गया। मानपुर मे खुलने जा रहा है मलिकायिन इंटरप्राइजेज का पहला ढाबा बनने जा रहा है ढाबा के प्रोपराइटर युवा नेता, युवा समाजसेवी आकश प्रियदर्शिनी उर्फ आप ने बताया कि बहुत जल्द ही हमारे शहर में पहला ढाबा का शुभारंभ होने वाले हैं यह पुरी तरह से शाकाहारी भोजन मिलेगा,वह भी गरीबो के लिए कम दाम में उपलब्ध करवाया जाएगा अभी वह नोयडा में इसकी नौकरी कर रहे हैं वीनसडम ट्रेडमार्क प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में जल्द ही बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी से इस ढाबा का शुभारंभ किया जाएगा।

बिजली चौरी अभियान चलाया गया

गया ।गया विधुत आपूर्ति विभाग द्वारा एटी फाल्ट और लोड सेडीग अधिख होने के कारण बिजली चौरी विरूद्ध विशेष अभियान चलाया जाएगा, टीम बनाकर विशेष अभियान चलाया जाएगा।

अंचलाधिकारी ने भ्रमण कर बाढ़ की स्थिति का लिया जायजा

रूपौली (पूर्णिया) । रूपौली प्रखण्ड क्षेत्र के विभिन्न बाढ़ प्रभावित इलाके को अंचलाधिकारी रूपौली राजेश कुमार ने भ्रमण कर प्रखंड क्षेत्र में बाढ़ की स्थिति का जायजा लिया। इस दौरान बाढ़ के बारे में होने वाली समस्याओं के संबंध में भी स्थानीय लोगों से पूछताछ भी की। यद्यपि कारी कोशी नदी का जलस्तर वर्तमान में वृद्धि है। बता दे हर बर्ष कोयली सिमड़ा पश्चिम, गोड़ियर पट्टी श्रीमाता, कोयली सिमड़ा पूरब, भौवा प्रबल सहित कई पंचायत बाढ़ के पानी से प्रभावित हो जाती है। इस दौरान पानी में अब वृद्धि हो रही है और लोगों के समक्ष कई तरह की समस्याएं धीरे धीरे खड़ी हो रही है। अंचलाधिकारी रूपौली राजेश कुमार ने प्रखंड क्षेत्र के कोयली सिमड़ा पश्चिम पंचायत के पुरानी नंदगोला, महादलित टोला बाढ़ की पानी से घेरा गांव सहित पंचायत का भ्रमण कर बाढ़ से हालात का जायजा लिया। स्थानीय जनप्रतिनिधि ने अंचलाधिकारी को बताया कि यहां के लोग प्रत्येक वर्ष बाढ़ की समस्या को झेलते हैं। करीब चार माह तक लोगों का आवागमन सहित कई कार्य बाढ़ के कारण अवरुद्ध हो जाता है। रूपौली प्रखंड मुख्यालय तक जाने के लिए नौका ही एकमात्र सहारा रहता है, नाव के माध्यम से ही लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक आना-जाना करते है। साथ में अन्य कई तरह की समस्याएं भी उन लोगों के समक्ष खड़ी हो जाती है। अंचलाधिकारी रूपौली राजेश कुमार ने बताया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर बाढ़ से उपजे हालात का जायजा लिया ताकि वरीय पदाधिकारियों को इस से अवगत कराया जा सके।

जातिगत जनगणना के कार्य को लेकर बीडीओ, सीओ व अन्य अधिकारियों की बैठक

पूर्णिया/ केनगर । हाईकोर्ट से फैसला आने के बाद केनगर प्रखंड क्षेत्र में दूसरे चरण में होने वाले जाति आधारित जनगणना का कार्य लक्ष्य से अधिक होकर किया जा रहा है। उक्त कार्य को गति देने के उद्देश्य से केनगर प्रखंड मुख्यालय स्थित सदभावना सभागार में परीक्ष्यमान वरीय उप समाहर्ता सह केनगर प्रखंड विकास पदाधिकारी स्वाति कुमारी, नव पद स्थापित बीडीओ आशिष कुमार, अंचलाधिकारी अशोक कुमार सिंह, प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी सह कार्यपालक पदाधिकारी शेखर कुमार, प्रखंड सांख्यिकी पदाधिकारी कृष्ण कांत चौधरी तथा प्रखंड स्वच्छता समन्वयक स्नेह लता कुमारी और अंचल निरीक्षक शिल्पी कुमारी के अलावा जिला मास्टर ट्रेनर मोल झा सहित अधिकारियों ने संविक्षा बैठक कर जाती आधारित जनगणना कार्य में जुड़े कर्मियों को जल्द कार्य पूरा करने का निर्देश दिया गया। परीक्ष्यमान वरिय उप समाहर्ता सह केनगर बीडीओ स्वाति कुमारी ने बताया कि लक्ष्य से 90 फिसदी से अधिक जाती आधारित जनगणना का कार्य हो गया है। बताया की 5 सौ 9 प्रगणक एवं 93 पर्यवेक्षक को उक्त कार्य के लिए प्रतिनियुक्त किया गया है।

अभाविप भोजपुर 25000 छात्रों की करेगी सदस्यता

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद भोजपुर जिला द्वारा सदस्यता कार्यशाला का आयोजन किया गया

प्रात : किरण संवाददता

गया। सदस्यता को लेकर सदस्यता कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विधिवत उद्घाटन दीप प्रज्वलित एवं विवेकानंद और माँ शारदे के तैलीय चित्र पर पुष्प अर्पित किया गया..

मौके पर उपस्थित प्रवासी कार्यकर्ता प्रदेश सह मंत्री सूरज सिंह ने बताया कि विद्यार्थी परिषद अपने स्थापना काल से ही हर साल सदस्यता अभियान चलाती है इस बार अभाविप अपने अमृत काल में प्रवेश कर इस बार तीन चरण में सदस्यता करने जा रहे हैं. अभाविप विश्व का सबसे बड़े छात्र संगठन के नाते हर साल नए छात्रों का सदस्यता कर उन्हें नेतृत्व करने का मौका प्रदान करती है.. वही विश्वविद्यालय संयोजक चंदन तिवारी ने बताया कि इस बार 7 अगस्त से 14 अगस्त तक 10 +2 विद्यालयो के छात्रों की सदस्यता होगी अगले चरण में 17 अगस्त से 20 अगस्त तक शिक्षक सदस्यता और अंतिम चरण में 21 से 29 अगस्त तक महाविद्यालय स्तर के छात्रों की सदस्यता की जाएगी. वही प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य और सदस्यता के दृष्टि से जिला सदस्य अभियान प्रमुख राजन कुमार ने बताया कि इस बार पूरे जिले में 25 हजार सदस्य बनाने जा रही है जिसको लेकर सभी प्रखंडो के प्रमुख बनाये गए है और सभी महाविद्यालय ,कोचिंग , 10+2 के भी अलग अलग कार्यकताओं की जिम्मेदारी दी गई है..

साथ ही साथ सदस्यता अभियान को लेकर पोस्टर विमोचन भी किया गया। धन्यवाद ज्ञापन नगर सह मंत्री आदित्य सिंह ने किया वही मुख्य रूप से उपस्थित कार्यकर्ता बिहियां नगर इकाई के अध्यक्ष राजेश मिश्रा, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य ऋतुराज चौधरी, चंदन कुमार ,समीर सिंह छोटू सिंह, जिला एसएफएस प्रमुख अनूप सिंह,बंटी कुमारी,नेहा कुमारी, पूजा कुमारी,नीतीश कुमार, विशाल कुमार ,प्रकाश चौबे, सूर्यमणि तिवारी,उमंग कुमार, नितीश,चंदन, विशाल, ऋषभ,अंकित, रितेश,नीतीश पाण्डेय,आलोक, राहुल अन्य कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

जलवायु परिवर्तन से जन जीवन प्रभावित सबको करना होगा पौधारोपण : इंदु

प्रात : किरण संवाददता

आज यूथ फॉर सेवा के तत्वावधान में मॉडल इंस्टीट्यूट के प्रांगण में विश्व प्रकृति संरक्षण दिवस पर माननीय मेयर इंदु देवी के कर कमलों से पौधारोपण किया। इस अवसर पर महोगनी ,नीम, गुलमोहर ,ग्रीन सेमर ,पीपल , आंवला व जामुन का पौधा लगाया गया।

इस अवसर पर मेयर इंदु देवी ने कहा की यूथ फॉर सेवा शिक्षा, स्वास्थ्य के साथ पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहा हैं। संगठन पर्यावरण संरक्षण हेतु पौधारोपण ,स्वच्छता अभियान के साथ जल संरक्षण और पंछी बचाओ अभियान को समय समय पर करते हैं जो सार्थक होने के साथ समाज के लिए प्रेरक कार्य हैं। हमलोगो को इस अभियान में बढ़- चढ़ सहभागिता निभानी चाहिए। वहीं अभियान से शामिल विधालय के प्रिंसिपल राधेश्याम पासवान ने कहा की यूथ फॉर सेवा का वृहद पौधारोपण अभियान में विधालय परिवार हर संभव सहयोग करने के साथ शारीरिक रूप से सहभागी होकर पर्यावरण संरक्षण के संकल्प को पुरा करेंगे। यूथ फॉर सेवा के सार्थक व जनोपयोगी कार्य में सबको आगे आना चाहिए। कार्यक्रम का नेतृत्व विश्व पर्यावरण बचाओं संस्थान के राजेन्द्र पर्यावरण व धन्यवाद ज्ञापन डॉ राजीव ने किया। इस अवसर पर यूथ फॉर सेवा के प्रदेश संयोजक पर्यावरण आनंद कुमार ,वैभव कुमार रविन्द्र कुमार ,डॉ ममता मिश्रा ,डॉ अजीत सिंह सुशील शर्मा अवध शर्मा ,प्रकाश चन्द्र ,रीना सिंह ,राजदेव ,शाहीना राजेश मोची, विनय दुवे मधूकर गुप्ता सहित अन्य थें।

भोजपुर जिलाधिकारी ने किया पटेल बस पड़ाव आरा का निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददता

आरा। बस पड़ाव आरा का भोजपुर जिलाधिकारी राजकुमार के नेतृत्व में उप विकास आयुक्त ,नगर आयुक्त एन के भगत,महापौर इंदु देवी ने निरीक्षण किया। होने वाले इस निरीक्षण को लेकर कल से ही पड़ाव परिसर में अवैध कब्जाधारियों को हटाया गया साथ ही लगभग 5 करोड़ की राशि से बने भवन की सफाई आदि की गई। विदित हो की पड़ाव स्थित नवनिर्मित भवन का उदघाटन सूबे के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पटना से वर्चुअल तरीके से किया गया था एवं तत्कालीन महापौर रूबी तिवारी और नगर आयुक्त की देख- रेख में पड़ाव परिसर में ही संक्षिप्त कार्यक्रम भी हुआ था ।बाद यह नवनिर्मित भवन निगम की उदासीनता के रवैए से दुर्दशा की ओर चला गया।आज भी निरीक्षण के दौरान शीर्ष अधिकारियों ने दर्जनों पंखे ,लाइट आदि को गायब पाया जबकि बुडको द्वारा निर्मित इस भवन को आरा नगर निगम ने अपने अधीन वर्षो पूर्व ही कर लिया था ।कहा जा सकता है की इस भवन से लगभग लाखो रुपए मूल्य के सजावटी उपकरण गायब दिखे।आनन फानन में दर्जनों मजदूरों को लगाकर इसकी कुछ हद तक सफाई कराई गई। इस संबंध में नगर आयुक्त एन के भगत ने बताया की जिलाधिकारी के नेतृत्व में हमलोगों ने आज पटेल बस पड़ाव का सर्वे किया की किस तरह से इसका सौंदर्यकरण कराया जाए ताकि यात्री जनता को लाभ पहुंच सकें ।उन्होंने बताया की जिलाधिकारी ने पुराने भवन की भी मरम्मत्ती आदि कराने का निर्देश दिया ।नगर आयुक्त ने बताया की एक प्रस्ताव बनाकर सरकार को भेजा जायेगा और यहां कई प्रकार की समस्याएं है उनका भी समाधान किया जायेगा और सुरक्षा की व्यवस्था भी की जायेगी। माले नगर सचिव दिलराज प्रीतम गायब उपकरणों के लिए क्यों नही कराई प्राथमिकी:दिलराज प्रीतम इधर माले के नगर सचिव दिलराज प्रीतम ने मांग किया है की पटेल बस पड़ाव में निर्मित नए भवन से गायब लाखो रूपए मूल्य के उपकरणों को लेकर आरा नगर निगम ने थाना में प्राथमिकी क्यों नही कराई? दिलराज प्रीतम ने कहा की 7 अगस्त को पार्टी द्वारा प्रस्तावित भ्रष्टाचार के मामले को लेकर आरा नगर निगम का घेराव किया जायेगा।

राहुल गांधी की सदस्यता बहाल होने पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं में खुशी

प्रात : किरण संवाददता

आरा। मोदी सरनेम मानहानि के केस मे सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी जी की सजा पर रोक लगा दिय। इसी खुशी मे कांग्रेस कार्यकर्ताओ ने आरा शहीद भवन चौक पर आम जनता को लड्डू खिलाकर खुशी का इजहार किया, साथ ही राहुल गांधी जिन्दाबाद, मोदी सरकार मुदार्बाद के नारे भी लगाए।

पूर्व विधान पार्षद डा अजय कुमार सिंह ने कहा की आज भारत मे नफरत के खिलाफ मोहब्बत की जीत हुई, सुप्रीम कोर्ट के निर्णय से कांग्रेस कार्यकर्ताओ के साथ साथ आम जनमानस मे भी खुशी की लहर है। हम सबो को पहले से उमीद थी कि सुप्रीम कोर्ट, मोदी सरकार के षडयन्त्र को नकाम करते हुए गुजरात के सिविल कोर्ट और हाईकोर्ट के फैसलो पर रोक लगाते हुए सत्यमेव जयते के अधार पर माननीय राहुल गांधी जी के सच्चाई के पक्ष मे फैसला दिया। आज के सुप्रीम कोर्ट के फैसलो से मोदी सरकार द्वारा देश भर मे फैलाए जा रहे नफरत के बजार मे राहुल गांधी जी के मोहब्बत के दुकान एवं भाई चारे की संदेश देश भर मे सत्य साबित होगा, आज का जीत इण्डिया की जीत है। इस दौरान सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

राष्ट्रीय कुँवर सेना के तत्वाधान में कुँवर सेना का एक दिवस धरना का आयोजन

प्रात : किरण संवाददता

आरा जिला समाहरणालय के समक्ष राष्ट्रीय कुँवर सेना के तत्वाधान में कूँवर सेना राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्मल शक्रवार के अध्यक्षता 8सूत्री मांगों के लेकर धरना दिया गया धरना के संचालन कुँवर सेना के राष्ट्रीय प्रवक्ता अरुणेश कुमार सिंह ने किया ।धरना कोसम्बोधित करते हुए पूर्व विधान पार्षद लाल दास राय ने कहा कि क्षेत्रीय सांसद सह केंद्रीय ऊर्जा मंत्री राजकुमार सिंह ने सौंदर्यीकरण के नाम पर रमना का अस्तित्व को समाप्त कर रहे हैं ये मैदान शहर के ह्रदय स्थल है यहाँ पर नित्य शहर के बच्चे बच्चियां खेलती हैइसमें यदि पार्क बनाया गया तो भोजपुर के जनता के लिए घोर अपमान होगा ।पूर्व विधायक रामाकांत ठाकुर ने कहा कि जिलाधिकारी और सांसद राजकुमार सिंह इसका निर्माण कार्य पर अभिलम्ब रोक लगाए नही तो चरणबद्ध तरीके से जुझारू आंदोलन किया जाएगा ।पूर्व विधायक भाई दिनेश एवं डॉ रघुबर चन्द्रवँशी ने संयुक्त रूप से कहा कि इस ऐतिहासिक रमना मैदान में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी पूर्व प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू जयप्रकाश नारायण जैसे बड़े नेताओं की आम सभा होती रही है यह पार्क नही एक मैदान है सौंदर्यीकरण के नाम पर निर्माण कार्य पर जिला नगर वासियों के भवना के विरोध है यदि पार्क बनाने की हार्दिक इच्छा है तो शहर में अनेको जगह खाली स्थल है जहाँ पर पार्क बनाया जा सकता है ।विजय सिंह मुंखिया वार्ड पार्षद प्रयाग यादव एवं यादव रामसकल सिंह भोजपुरिया ने संयुक्त रूप से कहा कि रमना मैदान को पहले ही नागरी प्रचारिणी सभा मन्तेश्वरी स्कूल कुँवर सिंह पार्क स्टेडियम मंदिर रामलीला मैदान शौचालय एवं साईकल स्टैंड बनाकर तीन चौथाई भाग को अतिक्रमण कर लिया गया है।

शेष एक तिहाई बचे भाग को भी सौंदर्यीकरण के नाम पर अतिक्रमण कर रमना मैदान के अस्तित्व को मिटाया जा रहा है यदि मंत्री जी अभिलम्ब कार्य पर रोक नही लगाते हैं तो जिस प्रकार बाबू कुंवर सिंह ने अंग्रेजों को देश से खदेड़ दिया उसी तरह राष्ट्रीय कुंवर सेना ऊर्जा मंत्री राजकुमार सिंह को भोजपुर से खदेड़ देगी ।धरना को सम्बोधित करने वालो लोगो मे कृष्ण राज प्रसाद उर्फ शेषनाथ यादव उदय नाथ उर्फ विमल सिंह पप्पू यादव कामेश्वर उर्फ लादेन यादव बरमेश्वर सिंह बेहरा श्रीधर तिवारी कांग्रेश नेता अरुण सिंह रामलायक सिंह रबिन्द्र रजक वीरमणि सिंह आशुतोष ठाकुर किरण देवी उर्मिला देवी मुकुल सिंह बिजेंद्र राय पप्पू पांडेय रामायण सिंह अधिवक्ता मोहन सिंह मुंखिया कन्हैया सिंह महाप्रभु राजभूषन सिंह मंगरु पासवान ओमकार पाठक राम बाबू पांडेय शुशील कुमार सिंह ब्यास युवा नेता शिवम सिंह छात्र नेता अभिनव प्रसादकलावतीउमेश सिंह अशोक कुमार सिंह नन्द किशोर यादव देवी सहित हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे धरनाकार्यक्रम के धन्यवाद ज्ञापन पूर्व प्रचार्य श्री हरेन्द्र सिंह तत्त पश्चात राष्ट्रीय कुंवर सेना ने जिलाधिकारी को मेमोरंडम दिया जिला ने आश्वासन दिया कि रमना मैदान को बचना मेरा दायित्व होता है कभी भी रमना मैदान को अस्तित्व को समाप्त नही होने देंगे।

सफाईकर्मी समाज का दर्पण हैं, इनकी भूमिका सराहनीय है:निशा

प्रात : किरण संवाददता

गया। समाज का हर व्यक्ति की अपनी एक अलग पहचान होती है। समाज में जो इंसान सफाई को प्राथमिकता दे वो सर्व प्रिय होता है। मगर समाज में उनका सम्मान भी उसी तरीके से किया जाना चाहिए।

ऐसा ही हर किसी का बराबर का ख्याल रखने वाली संस्था इनरव्हील क्लब ऑफ गया द्वारा बरसात के दिनों में सुरक्षित व संरक्षित रहने के लिए गया महानगर के सफाई कर्मचारियों के बीच छाता और स्लीपर वितरित किया। इस मौके सफाई कर्मी के बारे में बताया गया कि सफाई कर्मी हमारे समाज के अभिन्न अंग है यह हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं यह सफाई कर्मी हमारे आसपास की गंदगी और कचरा इकट्ठा करके सही जगह पर पहुंचाते हैं सफाई कर्मी भाई बहनों से ही हमारा शहर साफ सुथरा रह पाता है इसकी जानकारी क्लब की अध्यक्षा निशा ने दी। क्लब की संपादक कंचन कुमार ने बताया कि इस कार्यक्रम में क्लब की बहुत सारी महिलाओं ने भाग लिया और इस कार्यक्रम को सफल बनाया।

आदित्य हत्याकांड में संलिप्त अपराधियों को मिले कड़ी से कड़ी सजा:डॉ प्रेम

प्रात : किरण संवाददता

गया। पूर्व कृषि मंत्री सह नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार ने स्वर्ण व्यवसायी अखिलेश वर्मा के 17 वर्षीय बेटे आदित्य कुमार को सशस्त्र अपराधियों द्वारा गोली मारकर निर्मम हत्या किये जाने घटना पर गहरा दुख प्रकट किया है। इस घटना में संलिप्त सभी अपराधियों को चिन्हित कर अविलंब गिरफ्तार करने की मांग एसएसपी से की है। उन्होंने शहर की गिरती विधि व्यवस्था पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि नीतीश कुमार की नेतृत्व वाली सुशासन की सरकार में अपराधियों का दुस्साहस बढ़ गया है। आए दिन व्यवसाईयों और उनके परिवार वालों को निशाना बनाया जा रहा है। बिहार में हत्या, लूट, फिरौती,छिनतई की घटनाओं से व्यवसायियों में भय का माहौल है। बिहार में कोई भी सुरक्षित नहीं है। नीतीश और तेजस्वी की सरकार कानून व्यवस्था में पूरी तरह से असफल साबित हो रही है ।उन्होंने इस घटना को जघन्य अपराध बताते हुए मामले की उच्च स्तरीय जांच एवं अपराधियों को गिरफ्तार कर स्पीडी ट्रायल चला कर कड़ी से कड़ी सजा दिलाने की मांग की है ताकि ऐसे घटनाओं की पुनरावृति भविष्य में ना हो। उन्होंने सिटी डीएसपी से दूरभाष पर घटना की पूरी जानकारी ली और हर संभव न्याय दिलाने का भरोसा दिलाया।

बिजली बिल समझौता बैठक में गड़हनी बीडीओ कक्ष में नही पहुँच पाए जेई व एई

प्रात : किरण संवाददाता

गड़हनी। बिजली बिल बढ़ोतरी व बिजली कर्मी के मनमानी को ले आज गड़हनी बीडीओ ऑफिस में उपभोक्ताओं के साथ बैठक होना है ।बैठक में जे ई व ए ई भी पहुँचने वाले थे ।लेकिन दोनी लोग बैठक में नही पहुँच पाए ।बिजली पदाधिकारीओ के नही आने से गड़हनी नगर पंचायत के उपभोक्ता काफी नाराज है ।बता दे कि गड़हनी नगर पंचायत के उपभोक्ताओं ने 3 अगस्त गुरुवार को बिजली बढ़ोतरी व कर्मी के मनमानी को ले सड़क जाम किया था ।जाम में कोई बिजली विभाग से नही आय थे ।गड़हनी बीडीओ व थानाध्यक्ष के आश्वासन पर जाम छोड़ा गया था ।बीडीओ ने आश्वासन दिए थे कि कल जे ई व ए ई की बुलाकर ऑफिस में वार्ता किया जाएगा ।बीडीओ ऑफिस में दर्जनों उपभोक्ता पहुँच गए लेकीन बिजली विभाग के कोई पदाधिकारी नही आय ।बीडीओ ने दोनों पदाधिकारी के पास फोन किये तो दोनों लोग बिभाग के काम से गये हैं। अब बीडीओ ने कहा कि दोनों पदाधिकारी से बात हो गई अब वार्ता को ले सोमवार को तारीख तय की गई ।उपभोक्ताओं का मांग है कि बढ़े बिल को कम किया जाए ।बिजली कर्मी के मनमानी पर लगाम लगाया जाए जिसका भी बिल गड़बड़ी को ले अधिक आया है उसको जल्द सुधार किया जाए।

समाजसेवी राहुल रंजन किए गए गौ सेवा सामान से सम्मानित

प्रात : किरण संवाददता

गया ।भाजपा नेता सह समाजसेवी राहुल रंजन को झारखण्ड के रांची मे गौ सेवा विशेष सामान से सम्मानित किया गया है ।यह सम्मान रांची गौशाला न्यास परिषद ने दिया एवं राहुल रंजन को झारखण्ड गौशाला न्यास परिषद का आजीवन सदस्य भी बनाया गया है ।इस सम्मान को खुद न्यास परिषद के अध्यक्ष एवं मुख्य संचालक ने दिया है। वही राहुल रंजन कहते है की इस सम्मान को मै पाकर अभिभूत हु यह गौ माता का मेरे लिए सिर्फ प्रतीक चिन्ह ही नहीं है हमारे मेरे लिए शाक्छत मेरे लिए गौ माता है वही राहुल रंजन ने कहा की हम गाय को नहीं, गाय हमें पालती है ।यदि आप बाजार जाएं और आपको पता चले कि एक किलो गोबर की कीमत 350 रुपये है, तो आप आश्चर्य में मत पड़ियेगा। बताया कि जहां एक ओर भारत और दुनिया विज्ञान और वैश्विकरण के माध्यम से दिनों दिन उन्नति की तरफ अग्रसर है, वहीं गाय जो ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उत्थान में एक महत्वपूर्ण कड़ी रही है, आज दुधारू न रहने पर उपेक्षित हो जाती है और बोझ लगने लगती है ।गोमय उत्पादों की बाजार में बढ़ती लोकप्रियता से यह स्थिति बदल रही है ।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने धेनुकृपा ग्रामोद्योग इस दिशा में बड़े प्रयास किए है जिससे गौ धन आज कही न कही सुरक्षित है। उन्होंने बताया कि हमारा संगठन एक लक्ष्य के साथ काम करता है, जिसका आदर्श वाक्य है स्वावलंबी भारत, समृद्ध भारत जिसके अंतर्गत उन्होंने सैकड़ो महिलाओं को रोजगार प्रदान किया है।

डीएम ने जनता दरबार लगाकर 150 मामले की जांच का दिया निर्देश

प्रात : किरण संवाददता

गया ।जनता दरबार स्थगित रहने के बावजूद समाहरणालय में कई व्यक्तियों को आए देखते हुए जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम ने उनकी समस्याओं को सुना है। जनता दरबार में आये हुए लगभग 150 व्यक्तियों के मामले को गंभीरतापूर्वक सुनते हुए संबंधित पदाधिकारियों को प्राप्त आवेदनों को जांच यथाशीघ्र कराते हुए जांच प्रतिवेदन उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया है ।कई मामलों में जिला पदाधिकारी द्वारा जिले के वरीय पदाधिकारी उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी संबंधित प्रखंड के नामित जिला स्तरीय पदाधिकारी आदि द्वारा मामले को जांच करने का भी जिम्मा दिया गया है ।जनता दरबार में प्रधानमंत्री आवास ,मुख्यमंत्री आवास योजना से संबंधित आए मामलों को जिला पदाधिकारी ने उप विकास आयुक्त को संबंधित आवेदनों को यथाशीघ्र जांच करते हुए पात्रता रखने वाले व्यक्तियों को प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री आवास योजना का लाभ देने हेतु अग्रेतर कार्य करने का निर्देश दिया गया है ।जनता दरबार में कई व्यक्तियों ने भूमि विवाद, आपसी बटवारा, अतिक्रमण, जमीन संबंधी दिक्कते आदि से संबंधित आवेदन दिए। उन सभी आवेदन के आलोक में जिला पदाधिकारी ने संबंधित अंचलाधिकारी एवं थानाध्यक्ष एवं अनुमंडल पदाधिकारी ,अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के अध्यक्षता में थाना स्तर एवं अनुमंडल स्तर पर हर शनिवार को आयोजित होने वाले जनता दरबार में दोनों पक्षों के व्यक्तियों को बुलाकर संबधित मामलों को प्राथमिकता देते हुए निराकरण कराने का निर्देश दिए हैं ।जमीन से संबंधित अत्यधिक मामले को देखते हुए जिला पदाधिकारी ने आए आवेदनों को सभी भूमि सुधार उप समाहर्ता को निर्देश दिया कि अच्छे तरीके से आए आवेदनों को जांच करते हुए संबंधित अधिकारियों द्वारा नियमानुसार उचित कार्रवाई करने हेतु आदेशित करें।

इसके साथ ही प्राप्त कई आवेदनों के विरुद्ध वरीय पदाधिकारी नामित कर जांच हेतु निर्देशित किया है। इसके साथ ही जांच पदाधिकारी को निर्देश दिया है कि प्राप्त आवेदन को अधिकतम सात दिनों में जांच करते हुए दोषी कर्मी, पदाधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई हेतु प्रेषित करे ।कई व्यक्ति परिमार्जन के संबंध में आवेदन दिए जिसपर जिला पदाधिकारी ने संबंधित अंचलाधिकारी एवं राजस्व पदाधिकारी को सख्त निर्देश दिया कि परिमार्जन हेतु लंबित आवेदनों को तेजी से निष्पादन करें ।आपदा विभाग के तहत विभिन्न लंबित आवेदन के विरुद्ध जांच करते हुए जिला आपदा पदाधिकारी उसे तेजी से अनुपालन करवाये। बिजली विभाग के बिजली बिल ज्यादा आने, घर का बिजली कनेक्शन जोड़ने सहित अन्य मामले पर जिला पदाधिकारी ने कार्यपालक अभियंता बिजली पदाधिकारी को प्राप्त आवेदनों को जांच करते हुए अग्रेतर कार्रवाई करने का निर्देश दिए हैं।

उन्होंने कहा कि बिजली बिल ज्यादा आना एवं एवरेज बिल आना इत्यादि के मामले ज्यादा आ रहे हैं ।जिला पदाधिकारी ने कहा कि उस एरिया के संबंधित जे०ई० से जांच करवाएं एवं खराब बिजली मीटर को बदलवाने का कार्य करे। जहां भी ज्यादा बिल आने की शिकायत है उसे जांच करवाकर मीटर बदले ।जिले के कई जल स्रोतों यथा आहार, पइन, पोखर इत्यादि के जमीन को भरकर अतिक्रमण करने की लगातार शिकायत प्राप्त हो रही है। जिला पदाधिकारी ने सभी अंचलाधिकारी को सख्त निर्देश दिया कि यदि आपके क्षेत्र से जल स्रोत में अतिक्रमण होने की सूचना मिलती है तो उसे तुरंत जांच कराएं, इसके अलावा जिला पदाधिकारी एवं अन्य माध्यम से जो आवेदन प्राप्त हो रहे हैं उसके आलोक में निश्चित तौर पर भौतिक रूप से निरीक्षण करें। जल स्रोत के जमीन में कहीं अतिक्रमण पाया जाता है तो निरीक्षण के पश्चात तुरंत प्राथमिकी दर्ज करते हुए संबंधित जल स्रोत के भूमि को अतिक्रमण मुक्त करावे। इस कार्य में थोड़ी सी भी शिथिलता बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

सुरक्षित गर्भपात को बढ़ावा देने को एमटीपी एक्ट को लेकर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पूर्णिया । सुरक्षित गर्भपात को बढ़ावा देने तथा जनसमुदाय में जागरूकता लाने के उद्देश्य से स्वास्थ्य विभाग के चिकित्सकों व ग्रामीण स्तर की महिला कार्यकताओं को एमटीपी एक्ट से संबंधित प्रशिक्षण देकर उनका क्षमतावर्धन किया जा रहा है। इसी को लेकर क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रबंधन इकाई (आरपीएमयू) के द्वारा आईपास के सहयोग से राजकीय चिकित्सा महाविद्यालय सह अस्पताल परिसर स्थित मुख्य भवन में सुरक्षित गर्भ समापन को लेकर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय आशा समन्वयक प्रियंका कुमारी, सिफार के धर्मेंद्र रस्तोगी, आई पास डेवलपमेंट फाउंडेशन के डीसी विकास कुमार सहित सभी प्रतिभागी और प्रशिक्षक मौजूद रहे। मुख्य प्रशिक्षक सह महिला रोग विशेषज्ञ डॉ पूनम प्रभा ने कहा कि वर्ष 1971 से पूर्व किसी भी प्रकार का गर्भ समापन अवैध माना जाता था। दरअसल गर्भ समापन में बहुत ज्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। जिस कारण घरेलू उपायों से गर्भ समापन करने की प्रक्रिया में महिलाओं की मृत्यु तक हो जाती थी। जिसको रोकने के लिए वर्ष 1971 में एमटीपी एक्ट बना। इसके बाद से सुरक्षित गर्भ समापन की प्रक्रिया शुरू हुई। अज्ञानता के कारण तथा सरकारी अस्पतालों में सुविधा नहीं होने के कारण गर्भवती महिलाओं की मृत्यु दर में कमी नहीं हो रही थी। एमटीपी एक्ट- 1971 के प्रावधानों के अनुसार गर्भ समापन कई शर्तों के साथ वैध माना गया है। लेकिन इससे भी समस्या का समाधान नहीं हो रहा था। इसलिए एमटीपी एक्ट में संशोधन किया गया। जिसमें 20 से लेकर 24 सप्ताह तक के गर्भ को नियम संगत शर्तों के अनुसार समापन कराया जा सकता है।

क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रबंधक (आरपीएम) कैसर इकबाल ने बताया कि के नगर पीएचसी की महिला चिकित्सक डॉ प्रीति प्रिया और एएनएम, पूर्णिया पूर्व पीएचसी की महिला चिकित्सक डॉ नीलू भारती और एएनएम विभा कुमारी जबकि कटिहार जिले के कोढ़ा सीएचसी की महिला चिकित्सक डॉ अंकिता नेहा और जीएनएम पूनम बाई को पूर्णिया की महिला रोग विशेषज्ञ डॉ पूनम प्रभा और अपर्णा डे के द्वारा संयुक्त रूप से सुरक्षित गर्भ समापन एमटीपी एक्ट- 1971 को लेकर प्रशिक्षित किया जा रहा है। तीनों महिला चिकित्सा पदाधिकारियों को 12 दिन जबकि स्टाफ नर्स या एएनएम को 6 दिनों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आईपास के सहयोग संचालित किया जा रहा है।

स्कूल में गैस पर न

नई दिल्ली रेलवे स्टेशन में दिलचस्पी दिखा रही हैं कंपनियां

नई दिल्ली, एजेंसी। देश का दिल है दिल्ली। दिल्ली का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन है नई दिल्ली। यह दिल्ली के दिल कनॉट प्लेस से महज कुछ ही कदम की दूरी पर है। रेल मंत्रालय ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के रिडेवलपमेंट के लिए निजी कंपनियों को सौंपने का मन बनाया है। इसमें करीब 4700 करोड़ रुपये का निवेश होगा। ऐसी खबरें आ रही हैं कि इस स्टेशन के रिडेवलपमेंट में एलएंडटी, एसपीसीएल, एनसीसी लिमिटेड, जीआर इंफ्रा, दिलीप बिल्डकॉन, जेकेआईएल, अहलूवालिया कॉन्ट्रैक्ट्स जैसी कंपनियां दिलचस्पी ले रही हैं।

प्री-बिड मीटिंग में इन कंपनियों ने लिया हिस्सा: रेलवे बोर्ड ने नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के रिडेवलपमेंट के लिए रेल भूमि विकास प्राधिकरण को अधिकृत किया है। इसी ने पिछले दिनों नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के रीडेवलपमेंट के संबंध में प्री-बिड मीटिंग का आयोजन किया था। इस बैठक में एलएंडटी, एसपीसीएल, एनसीसी लिमिटेड, जीआर इंफ्रा, दिलीप बिल्डकॉन, जेकेआईएल, अहलूवालिया कॉन्ट्रैक्ट्स (इंडिया) लिमिटेड, पीएसपी प्रोजेक्ट्स, आईटीडी सीईएम कंपनी, तिरुमाला सेवन हिल्स प्राइवेट लिमिटेड आदि कंपनियों ने हिस्सा लिया है।

29 सितंबर तक लगा सकते हैं बोली: नई दिल्ली रेलवे स्टेशन को ईपीसी (इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट और कंस्ट्रक्शन) मोड पर रीडेवलप किया जाएगा। इस परियोजना की अनुमानित लागत 4700 करोड़ रुपये है। इस प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए 45 महीने का समय तय किया गय है। इस स्टेशन के रीडेवलपमेंट के लिए ई-बोली जमा करने की अंतिम तिथि 29 सितंबर 2023 को दोपहर 2 बजे तक है। ई-बोली (तकनीकी) खोलने की तारीख 05 अक्टूबर 2023 को दोपहर 03:30 तक रखी गई है।

रीडेवलपमेंट में क्या क्या शामिल: नई दिल्ली रेलवे स्टेशन के रीडेवलपमेंट कार्य के दायरे में स्टेशन भवन और संबंधित बुनियादी ढांचे के लिए सिविल और एमईपी कार्य करना शामिल है। इसके अलावा सड़कें (एलिवेटेड/एट-ग्रेड), मल्टी-मोडल ट्रांजिट हब (एमएमटीएच) भवन, छत, प्लाजा, पार्सल बिल्डिंग, आसपास के सर्कुलेशन एरिया का विकास आदि भी परियोजना में शामिल किया गया है।

उत्साहपूर्ण भागीदारी रही: आरएलडीए के उपाध्यक्ष वेद प्रकाश डुडेजा ने कहा, हमें बोली-पूर्व बैठक में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी को देखकर खुशी हुई है। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन का रीडेवलपमेंट हमारी प्रमुख परियोजनाओं में से एक है। परियोजना का उद्देश्य एनडीएलएस को अत्याधुनिक सुविधाएं और सुख-सुविधाएं प्रदान करते हुए एक विश्व

स्तरीय परिवहन केंद्र के रूप में विकसित करना है। यह व्यापक विकास योजना स्टेशन को एक एकीकृत परिवहन केंद्र के रूप में देखती है जो रेल, मेट्रो, बस और परिवहन के अन्य साधनों को निर्बाध रूप से जोड़ता है जिससे यात्रियों के लिए सुविधाजनक और परेशानी मुक्त कनेक्टिविटी सुनिश्चित होती है।

2030 तक देश के निर्माण क्षेत्र में 10 करोड़ से अधिक लोग करेंगे काम, घरों की मांग में वृद्धि से फायदा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में निर्माण क्षेत्र में रोजगार का आंकड़ा 2030 तक 10 करोड़ को पार कर जाएगा। फिलहाल निर्माण क्षेत्र में 7.60 करोड़ लोग कार्यरत हैं। गुरुवार को जारी एक रिपोर्ट में इसका अनुमान लगाया गया। प्रॉपर्टी कंसल्टेंसी नाइट फ्रैंक और रॉयल इंस्टीट्यूशन ऑफ चार्टर्ड सर्वेयर्स (आरआईसीएस) इंडिया की ओर से जारी निर्माण क्षेत्र में कुशल रोजगार रिपोर्ट के अनुसार, इस क्षेत्र में कुशल कार्यबल की हिस्सेदारी इस दशक के अंत तक बढ़कर 10.5 प्रतिशत हो जाएगी, जो वर्तमान में 9.7 प्रतिशत है।

रियल एस्टेट सेक्टर का उत्पादन एक ट्रिलियन डॉलर के पार पहुंचेगा: इसके अलावा, रियल एस्टेट सेक्टर का उत्पादन 2030 तक एक ट्रिलियन डॉलर के पार पहुंचने का अनुमान है। वर्तमान में यह 650 अरब डॉलर है। रिपोर्ट में कहा गया है, रियल एस्टेट क्षेत्र में वृद्धि का सबसे बड़ा कारण बढ़ती आबादी से उत्पन्न आवासीय मांग में वृद्धि है। इसके अलावे वाणिज्यिक, खुदरा, आतिथ्य और वेयरहाउसिंग के क्षेत्र में भी विकास हो रहा है।

बुनियादी ढांचे की बढ़ती मांग से कुशल कर्मचारियों की मांग भी बढ़ी: रिपोर्ट के अनुसार, रियल एस्टेट और बुनियादी ढांचे की बढ़ती मांग के कारण, कुशल कर्मचारियों की मांग डेवलपर्स, निर्माण कंपनियों, परामर्श फर्मों आदि में उत्पन्न होती रहेगी, जबकि कुशल जनशक्ति की आपूर्ति सरकारी पहलों, शैक्षणिक और प्रशिक्षण संस्थानों से उत्पन्न की जानी है। इसके अलावा, निर्माण क्षेत्र 2012 के बाद 11 प्रतिशत की सालाना दर से बढ़ा है। वर्तमान में, यह भारतीय अर्थव्यवस्था के कुल उत्पादन का 18 प्रतिशत है। इसके अलावा नौकरी देने के मामले में यह कृषि क्षेत्र के बाद दूसरे नंबर पर है।

शहद में कैंसर वाले केमिकल्स का दावा, कंपनी ने कहा- हमारा शहद सबसे शुद्ध

नई दिल्ली, एजेंसी। डाबर इंडिया लिमिटेड के शहद में कैंसर पैदा करने वाले केमिकल्स की मौजूदगी का दावा किया गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, डाबर के शहद में कार्सिनोजेनिक मैटेरियल का अमाउंट लिमिट से ज्यादा है। हालांकि, कंपनी के चीफ फाइनेंशियल ऑफिसर अंकुश जैन ने कहा है कि उनके प्रोडक्ट एफएसएसएआई और ,तरूक्ष के स्टैंडर्ड के मुताबिक बनाए जाते हैं और पुरी तरह शुद्ध हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, डाबर के शहद में एचएमएफ की मात्रा भी इंसान के पचा पाने की लिमिट से ज्यादा है। रिपोर्ट में कहा गया है कि हमारे देश में डाबर जैसे बड़े ब्रांड भी शुद्ध शहद का दावा कर मिलावटी शहद बेच रहे हैं।

अंकुश जैन ने कहा कि डाबर हनी का हर बैच रॉ-मटेरियल रिसीव करने से लेकर फाइनल प्रोडक्ट की पैकेजिंग तक एफएसएसएआई के मानकों के हिसाब से ही तैयार किया जाता है। उन्होंने आगे कहा कि कंपनी को हाल ही में ईजीजी मार्क का एक स्पेशल नोट मिला है और हम कह सकते हैं कि डाबर भारत में सबसे शुद्ध हनी बनाता है।

क्या है एचएमएफ?: एचएमएफ एक ऑर्गेनिक कंपाउंड है जो मीठी खाने-पीने की चीजों में पाया जाता है। शहद में एचएमएफ का लेवल उसकी ताजगी का इंडिकेटर है। प्योर शहद में इसकी मात्रा 15द्वद्द होती है लेकिन इसकी मात्रा 40द्वद्द से ज्यादा होने पर शहद को जहरीला कर सकती है।

अमेरिका की नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इनफॉरमेशन के अनुसार एचएमएफ की मात्रा शहद पुराना होने पर बढ़ जाती है। इसके साथ ही प्रोसेसिंग के दौरान गर्म करना, नमी, शुगर सीरप की मिलावट और स्टोर करने के लिए मेटल कंटेनर का इस्तेमाल शहद में हाईड्रॉक्सी मिथाइल फरफ्यूरल की मात्रा को बढ़ा देता है।

कंपनी के शेयर में 3 प्रतिशत की गिरावट: इस मीडिया रिपोर्ट के बाद गुरुवार को डाबर का शेयर 556 रुपए पर ओपन हुआ और 1.82 प्रतिशत की गिरावट के साथ 555 रुपए पर बंद हुए। हालांकि, कारोबार के बीच कंपनी के शेयर में 3 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट देखी गई। पिछले 8 हफ्तों में कंपनी का यह सबसे निचला स्तर है।

यस बैंक केस ने फाइनेंशियल सिस्टम को हिला दिया, सुको की तीखी टिप्पणी, राणा कपूर की जमानत अर्जी खारिज

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने यस बैंक के फाउंडर राणा कपूर को बड़ा झटका दिया है। कोर्ट ने राणा कपूर के खिलाफ मनी लॉन्ड्रिंग मामले में उनकी जमानत याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया। शीर्ष अदालत ने कहा कि इस मामले ने पूरी वित्तीय प्रणाली को हिलाकर रख दिया।

मुश्किल में राणा कपूर: हाल ही में बाजार नियामक सेबी ने राणा कपूर को बैंक के एटी-1 बॉन्ड की गलत बिक्री करने के मामले में 2.22 करोड़ रुपये का भुगतान करने का नोटिस भेजा है। सेबी के मुताबिक इस राशि का भुगतान नहीं करने पर कपूर की संपत्तियों और बैंक खातों को कुर्क कर लिया जाएगा। यह मामला यस बैंक के अधिकारियों की तरफ से खुदरा निवेशकों को एटी-1 बॉन्ड की गलत बिक्री करने से संबंधित है। आरोप है कि बैंक अधिकारियों ने निवेशकों को इस बॉन्ड से जुड़े जोखिम के बारे में नहीं बताया था। ये बॉन्ड 2016 से लेकर 2019 के दौरान बेचे गए थे।

कहानी अर्श से फर्श पर आने की: बता दें कि यस बैंक की शुरुआत साल 2004 में राणा कपूर ने अपने रिश्तेदार अशोक कपूर के साथ मिलकर की थी। साल 2008 में मुंबई में 26/11 के आतंकी हमले में अशोक कपूर की मौत हो गई। इसके बाद अशोक कपूर की प प्रतिशती मधु कपूर और राणा कपूर के बीच बैंक के मालिकाना हक की लड़ाई हुई लेकिन जीत अदालत में राणा कपूर को जीत मिली। साल 2018 में रिजर्व बैंक ने यस बैंक के बोर्ड को राणा कपूर को एमडी और सीईओ नियुक्त करने की मंजूरी दे दी।

बुरे दौर की शुरुआत: राणा कपूर के दौर में बैंक के बुरे दिन शुरू हो गए। बैंक को लगातार घाटा होने लगा तो एनपीए में भी बढ़ोतरी होती चली गई। आरोप ये भी लगा कि राणा कपूर की वजह से ये आंकड़े सार्वजिनक नहीं हो पाए। वहीं, कई ऐसे लोगों या कंपनियों को कर्ज दिए गए जिनकी फाइनेंशियल स्थिति ठीक नहीं थी। राणा कपूर चुपचाप अपनी हिस्सेदारी कम करते गए, फिर रिजर्व बैंक को दखल देनी पड़ी। रिजर्व बैंक ने कमान अपने हाथ में ली और बोर्ड को भंग कर दिया। इसके साथ ही ग्राहकों के पैसों की निकासी पर भी पाबंदियां लगा दी। इस बीच, तमाम विदेशी फंड हाउस और क्रेडिट एजेंसियों ने यस बैंक का आउटलुक निगेटिव कर दिया। इस दौरान यस बैंक के शेयर भी बुरी तरह क्रैश हुए। यह शेयर अगस्त 2019 में 404 रुपये का था जो अब 17 रुपये के स्तर पर है।

दाल-आटा भी हो गए महंगे

नई दिल्ली, एजेंसी। टमाटर की कीमत को लेकर हर तरफ चर्चा हो रही है। सब्जियों का राजा कहलाने वाला टमाटर 250 रुपये प्रति किलो के पार हो गया है। टमाटर की कीमत पिछले दो महीनों से लगातार बढ़ रही है। दो महीने के भीतर टमाटर की कीमत 15 रुपये से बढ़कर 250 रुपये के ऊपर पहुंच गए है। सिर्फ टमाटर ही नहीं हरी सब्जियों का हाल बेहाल है। सप्लाई सेवा बाधित होने के चलते जहां टमाटर और सब्जियों के दाम बढ़ रहे हैं तो वहीं आपके किचन का मेन कोर्स भी बजट से बाहर होता जा रहा है। दाल-चावल, आटा सब मंहगे हो गए है। टमाटर के दाम पर हर तरफ हल्ला हो रहे है, इसलिए सबको इसके बारे में पता है, लेकिन बाकी फूड आइटम्स की कीमत चुपके से ऐसे बढ़ रहे हैं कि बिना हंगामे के ये सीधे आपकी जेब पर असर डाल रहे हैं। सरकारी डेटा में इस बात का जिक्र किया गया है, जिसके मुताबिक सिर्फ सब्जियों की ही नहीं बल्कि चावल-दाल सबके दाम में तेजी आई है। संसद में उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय की ओर से जानकारी दी गई,जिसके मुताबिक दाल की कीमत में 28 प्रतिशत की तेजी तो चावल के दाम 10.5 प्रतिशत तक महंगे हो गए है। उड़द दाल और आटे की कीमत में 8 प्रतिशत की तेजी आई है। चावल का एवरेज रिटेल प्राइस 41 रुपये रहा, जो एक साल पहले तक 37 रुपये था। घरेलू उत्पादन में आई कमी का असर खाने-पीने की चीजों पर पड़ रहा है। साल 2022-23 में फसलों का उत्पादन 34.3 लाख टन रहा जो कि पिछले साल 42.2 लाख टन था। बेमौसम बारिश, बाढ़ ने फसलों का बर्बाद किया है, जिसके कारण पैदावर पर असर पड़ा है। कम प्रोडक्शन कीमतों में तेजी की बड़ी वजह है।

एसएंडपी का दावा- 2031 तक 6.7 ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी भारतीय अर्थव्यवस्था

नई दिल्ली, एजेंसी। वित्त वर्ष 2030-31 तक भारत की अर्थव्यवस्था करीब दोगुनी, 6.7 ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी जो मौजूदा समय में 3.4 ट्रिलियन डॉलर की है। रेटिंग एजेंसी एस एंड पी ग्लोबल ने भारतीय अर्थव्यवस्था को लेकर जारी किए गए अपनी रिपोर्ट में ये बातें कही हैं। रेटिंग एजेंसी ने कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 से लेकर 2030-31 तक भारत की अर्थव्यवस्था सलाना 6.7 फीसदी के दर आर्थिक विकास करेगी। एस एंड पी ग्लोबल ने कहा कि वित्त वर्ष 2031-32 तक भारत की प्रति व्यक्ति आय 4500 डॉलर हो जाएगी जो मौजूदा समय में 2500 डॉलर के करीब है। रिपोर्ट में कहा गया कि वर्कफोर्स में महिलाओं की भागीदारी भविष्य में ग्रोथ को गति देने के लिए बेहद जरुरी है। वित्त वर्ष 2021-22 में कुल वर्कफोर्स में महिलाओं की भागादारी केवल 24 फीसदी है। रिपोर्ट के

मुताबिक भारत का सर्विसेज एक्सपोर्ट देश के आर्थिक विकास का सबसे बड़ा इंजन साबित होने वाला है। एस एंड पी ग्लोबल ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि फाइनेंशियल सर्विसेज पर किए जाने वाला खर्च मौजूदा समय में 280 बिलियन डॉलर से बढ़कर 670 बिलियन डॉलर हो जाएगा। एस एंड पी ग्लोबल के मुताबिक 2030 तक स्टार्टअप्स में वेंचर कैपिटल फंडिंग दोगुनी हो जाएगी। इलेक्ट्रिकल व्हीकल्स, स्पेस टेक्नोलॉजी, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, ड्रोन्सस रोबोटिक्स और क्लीन टेक्नोलॉजी जैसे नए वर्टिकल्स को आने वाले दिनों में सबसे बड़ा लाभ मिलने वाला है। इन सेक्टर्स में आने वाली पूंजी इस दशक के अंत तक भारत के औसतन 6.7 फीसदी जीडीपी ग्रोथ में 53 फीसदी का योगदान देगी। रिपोर्ट के मुताबिक भारत का कंज्यूमर मार्केट का साइज 2031 तक दोगुना हो जाएगा। 2022 में ये 2.3 ट्रिलिन डॉलर था जो 2031 तक बढ़कर 5.2 ट्रिलियन डॉलर होने का अनुमान है। खाद्य वस्तुओं पर उपभोक्ताओं द्वारा किया जाने वाले 615 बिलियन डॉलर से बढ़कर 1.4 ट्रिलिन डॉलर का हो जाएगा। भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आज ये दूसरी अच्छी खबर है। इससे पहले मॉर्गन स्टेनली ने अपने इमर्जिंग मार्केट की सूची में भारत को अपग्रेड किया है जबकि चीन को उसे डाउनग्रेड कर दिया है।

गोदरेज एग्रोवेट के डबल की नई पैकेजिंग दिल छू गई

चैनल पार्टनर्स एवं किसानों को प्राप्त पैक्स पर सिक्योरिटी फीचर्स

कंपनी का एक महीने में 6,000 डेमॉन्स्ट्रेशंस करने का इरादा है

मुंबई, एजेंसी। गोदरेज एग्रोवेट लिमिटेड (जीएवीएल) के क्रॉप प्रोटेक्शन बिजनेस ने आज बताया कि कंपनी का बायोस्टिमुलेंट, डबल बाजार में जबरदस्त रफ्तार पकड़ रहा है। किसानों को नकली उत्पादों से बचाने के उद्देश्य से हाल ही में शुरू की गई डबल पैकेजिंग को चैनल भागीदारों और किसानों द्वारा शानदार प्रतिक्रिया मिली है।

जीएवीएल ने पिछले महीने डबल के 25 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में नए सेलिब्रेटिव पैक को लॉन्च किया। उपयोगकर्ता के अनुकूल और सुरक्षित पैकेजिंग वाले इस बोतल में नकल से बचने के लिए ऐसा सील और जटिल वॉटरमार्क है जिसके के साथ छेड़छाड़ नहीं की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, इसमें प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए बोतल पर होलोग्राम भी है और दृष्टिबाधितों के लिए इसकी नेक पर खतरे का निशान है जो ब्रेल में अंकित है।

गोदरेज एग्रोवेट के क्रॉप प्रोटेक्शन बिजनेस के

मुख्य कार्यकारी अधिकारी ङ्क राजावेलु एनकेकहते हैं, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश और गुजरात में हमारे चैनल भागीदारों से अद्भुत प्रतिक्रिया मिलना उत्साहजनक है। हमारी नवीन पैकेजिंग की भारी स्वीकृति, बाजार में मिल रहा जबरदस्त प्रतिसाद, हमें काफी आशान्वित करता है, चूंकि हम आगामी प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर (पीजीआर) सीज़न की उत्सुकता से उम्मीद कर रहे हैं।

उत्पाद और नई पैकेजिंग के बारे में अधिक जागरूकता पैदा करने के लिए, कंपनी ने डबल डेमो मंच शुरू किया है। यह मंच इसी वर्ष 15 जुलाई को शुरू हुआ और इस साल 15 अगस्त तक बना रहेगा। कंपनी कपास उत्पादक राज्यों में 6,000 डेमॉन्स्ट्रेशंस करने की योजना बना रही है ताकि सभी चिंताओं को दूर किया जा सके और किसानों को प्रामाणिक उत्पाद का उचित और अनुशंसित मात्रा में उपयोग के लाभों के बारे में जानकारी प्रदान की जा सके। पिछले 25 वर्षों में, डबल ने रूपांतकारी बदलावों को उत्प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और लगभग 3 करोड़ एकड़ कृषि भूमि का उपचार किया है जिससे लगभग 2 करोड़ किसान परिवारों का जीवन काफी बेहतर हुआ है। जीएवीएल किसानों को सशक्त बनाने, टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने और देश के कृषि विकास में योगदान करने के अपने मिशन में दृढ़संकल्पित है।

स्पार्क मिंडा ने अपग्रेडेड फीचर्स और नई पैकेजिंग के साथ अपनी फ़िल्टर रेंज को बढ़ाया

मुंबई, एजेंसी। स्पार्क मिंडा, टू और थ्री व्हीलर कस्टमर्स की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए नई पैकेजिंग में अपग्रेडेड फीचर्स के साथ एयर और ऑयल फिल्टर की अपनी रेंज में विस्तार किया है। फिल्टर की नई रेंज व्हीकल के ओवरऑल परफार्मेंस को बढ़ाने के लिए बेहतर फिल्टरेशन और एडवांस्ड इंजन प्रोटेक्शन प्रदान करती है।

रीडिज़ाइन की गई पैकेजिंग असाधारण यूजर एक्सपीरियंस प्रदान करने के लिए स्पार्क मिंडा के डैडिकेशन को प्रदर्शित करती है। नई पैकेजिंग ट्रांसपोर्टेशन और स्टोरेज के दौरान डैमेज को रोकने के लिए मजबूत

मैटेरियल और प्रोटैक्टिव फीचर का उपयोग करती है। यह सुनिश्चित करता है कि ग्राहकों को ऑप्टीमल कंडीशन में फ़िल्टर प्राप्त हों और फ़िल्टर रिप्लेसमेंट की फ्रीक्वेंसी को कम करते हुए, एक्सटेंडेड लाइफ भी प्रदान करता है। नई पैकेजिंग में यूजर फ्रेंडली डिजाइन एलीमेंट शामिल हैं, जिससे ग्राहकों के लिए स्पार्क मिंडा फ़िल्टर की पहचान करना आसान हो जाता है। हमारे कस्टमर द्वारा ब्लक परचेसिंग के लिए ऑयल फिल्टर अट्रैक्टिव और सस्टेनेबल डफ़ल बैग में भी उपलब्ध हैं। आफ्टरमार्केट डिविजन के सीईओ अरुण नागपाल ने कहा, एयर और ऑयल फिल्टर की स्पार्क मिंडा रेंज इंजन की लंबी उम्र को ऑप्टिमाइज करके और किसी के वाहन को स्वच्छ और फ़िल्टर की गई एयर/ऑयल प्रदान करके राइडिंग एक्सपीरियंस को बेहतर बनाने के लिए तैयार की गई है। नई रेंज इंजन की लाइफ को मैक्सिमम करने, फ्यूल एफीशियंसी को बढ़ाने और ग्रीनर फ्यूचर में कंट्रीब्यूट करने में मदद करेगी। फ़िल्टर को ओईएम स्टैंण्डर्ड के अनुसार नया रूप दिया गया है और हम जल्द ही अपने प्रोडक्ट रेंज में बीएस6 सीरिज के फ़िल्टर पेश करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारी कंपनी बेहतर कस्टमर एक्सपीरियंस सुनिश्चित करने के लिए हाई क्वालिटी ऑटोमोटिव सॉल्यूशन देने के लिए प्रतिबद्ध है। स्पार्क मिंडा की नई पैकेजिंग को धीरे-धीरे सभी प्रोडक्ट लाइनों और डिस्ट्रीब्यूशन चैनलों पर लागू किया जाएगा। कस्टमर आने वाले महीनों में अलमारियों और आफ्टरमार्केट रिटेल आउटलेट्स पर अपडेटेड पैकेजिंग देखने की उम्मीद कर सकते हैं। कंपनी अपने प्रोडक्ट को ड्यूरेबल, रिलाइबल और कस्टमर के लिए एक्सेसबल बनाना चाहती है।

एनर्जी कंपनी को 4 महीने से ताबड़तोड़ मिल रहे ऑर्डर, तूफान बना शेयर, नए रिकॉर्ड की ओर

नई दिल्ली, एजेंसी। सप्ताह के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को शेयर बाजार में एक बार फिर रौनक लौट आई। इस दौरान स्टर्लिंग एंड विल्सन रिन्यूएबल एनर्जी के शेयर में भी तूफानी तेजी रही। यह शेयर ट्रेडिंग के दौरान 4 प्रतिशत चढ़कर 404 रुपये के पार पहुंच गया। यह तेजी कंपनी की ओर से दी गई एक जानकारी के बाद आई है। बता दें कि शेयर ने बीते एक अगस्त को ही 405 रुपये के स्तर को छु लिया था, जो 52 हफ्ते का उच्चतम है।

स्टर्लिंग एंड विल्सन रिन्यूएबल एनर्जी ने बताया है कि वित्त वर्ष 2024 के पहले चार महीनों में लगभग एक गीगावाट (जीडब्ल्यू) की कुल क्षमता के लिए 826 करोड़ रुपये के ऑर्डर जीते हैं। ये परियोजनाएं राजस्थान, उत्तर प्रदेश और गुजरात में हैं। सभी परियोजनाओं के कार्य के दायरे में डिज़ाइन, निर्माण और कमीशनिंग शामिल है।

बाजार में लौटी रौनक: लगातार तीन दिन की बड़ी गिरावट के बाद शुक्रवार को बाजार में रौनक लौट आई। शुरुआती कारोबार के दौरान 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 500 अंक चढ़कर 65,700 अंक के पार पर पहुंच गया।

भारत को वर्ल्ड आर्चरी-चैम्पियनशिप में गोल्ड

92 साल के इतिहास में पहली बार विमेंस कंपाउंड टीम को सफलता

बर्लिन (एजेंसी)। भारत की विमेंस कंपाउंड टीम पहली बार वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप जीत ली है। टूर्नामेंट के 92 साल के इतिहास में पहली बार भारतीय विमेंस कंपाउंड टीम ने यह खिताब अपने नाम किया है। पहली बार वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप 1931 में हुई थी।

जर्मनी की राजधानी बर्लिन में खेले जा रहे वर्ल्ड चैम्पियनशिप में भारतीय विमेंस कंपाउंड आर्चरी टीम ने फाइनल में मैक्सिको को 235-229 से हराया। टीम में आर्चर ज्योति सुरेख, वेन्नम परनीत कौर और अदिति स्वामी शामिल थी।

इंडिविजुअल में पहली बार टॉप 8 में से 3 भारतीय खिलाड़ी

विमेंस कंपाउंड के इंडिविजुअल में पहली बार टॉप-8 तीरंदाजों में 3 भारतीय शामिल हैं। भारतीय टीम की तीनों तीरंदाज ज्योति सुरेख, वेन्नम परनीत कौर और अदिति स्वामी क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने में सफल हुई हैं।92 साल में पहली बार भारतीय टीम को वर्ल्ड चैंम्पियनशिप में गोल्ड मिला।

मेंस टीम बाहर

कंपाउंड मेंस और मिक्स्ड टीम की टूर्नामेंट में कड़ी हार के बाद समाप्त हो गई। मेंस टीम में अभिषेक वर्मा, ओजस देवताले और प्रथमेश जावकर क्वार्टर फाइनल में नीदरलैंड से 230-235 से हार गए। दूसरी ओर मिक्स्ड इवेंट में में, देवतले और ज्योति सुरेखा को क्वार्टरफाइनल में अमेरिका ने 154-153 से हराया।

ओलिंपिक में जाने का मौका गवायां

भारतीय तीरंदाजों में मेंस और विमेंस की रिकर्व टीम क्वार्टरफाइनल में बाहर हो गई। इसके चलते टीमों की डाइरेक्ट ओलिंपिक में जाने का मौका गवां दिया। अब टीम को अगले बड़े टूर्नामेंट का इंतजार करना होगा।

ओलिंपिक्स में जाने का अगला मौका एशियाड में

पेरिस ओलिंपिक्स क्वालिफायर का अगला दौर कॉन्टिनेंटल गेम्स होगा। भारत के लिए यह अक्टूबर में हांग्जो एशियाड होगा जहां मिक्स्ड टीम चैंपियन और मेंस और विमेंस में से एक खिलाड़ी चयनित होंगे। नवंबर में बैंकॉक में एशियाई चैम्पियनशिप और अगले साल जून में अंताल्या वर्ल्ड कप अंतिम दो क्वालिफाइंग टूर्नामेंट हैं।

चार साल में एक बार होती है वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप

वर्ल्ड आर्चरी चैम्पियनशिप चार साल में एक बार होने वाला इवेंट है। इसमें ओलिंपिक क्वालिफिकेशन का भी क्वोटा है। भारतीय विमेंस कंपाउंड टीम ने इस चैम्पियनशिप में 9 बार सिल्वर और 2 बार ब्रॉन्ज मेडल जीत चुकी है।

भारत-वेस्टइंडीज टी-20

'यह ओवर मैच का टर्निंग प्वाइंट था', भारत पर जीत के बाद बोले जेसन होल्डर

तरौबा (एजेंसी)। वेस्टइंडीज ने गुरुवार को पहले टी20 मैच में भारत को चार रनों से हरा दिया। मैच के बाद वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर जेसन होल्डर ने कहा कि 16वां ओवर खेल का निर्णायक मोड़ था। वेस्टइंडीज ने पहले बल्लेबाजी की और 149/6 का लक्ष्य रखा। बल्लेबाजी के खराब प्रदर्शन के कारण भारत लक्ष्य हासिल करने में असफल रहा। भारत 145/9 का स्कोर ही बना सका और वेस्टइंडीज ने चार रन से मैच जीतते हुए पांच मैचों की टी20 सीरीज में 1-0 से बढ़त बनाई।

मैच के बाद कॉन्फ्रेंस में वेस्टइंडीज के ऑलराउंडर जेसन होल्डर ने कहा, यह (16वां ओवर) निर्णायक मोड़ था कि खेल खत्म हो गया था। बहुत करीब आ रहे थे। उनके पास सेट बल्लेबाज थे और हमें खेल में बने रहना था। लोग वास्तव में एक साथ टिके रहे, यह कुल टीम प्रयास था। परिस्थितियां गेंदबाजों के पक्ष में थीं। हमने शुरुआती विकेट हासिल किए जो वास्तव में महत्वपूर्ण है। वनडे से ब्रेक पर होल्डर ने कहा, वनडे से ब्रेक की जरूरत थी। मुझे खुशी है कि मैं अपनी योजनाओं पर कायम रहा। मैं उनसे उनके रनों के लिए कड़ी मेहनत कराना चाहता था, कोई भी मुफ्त रन नहीं देना चाहता था।

मैच की बात करें तो वेस्टइंडीज ने टॉस जीता और बदलाव के लिए पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। मेजबान टीम 149-6 का स्कोर बनाने में सफल रही। भारत को पूरे लक्ष्य का पीछा करने में संघर्ष करना पड़ा क्योंकि नियमित अंतराल पर विकेट गिरते रहे जिससे उनके लिए 150 के लक्ष्य का पीछा करना मुश्किल हो गया। भारत का दूसरा टी20आई में वेस्टइंडीज से मुकाबला रविवार को होगा।

एसीटी में चीन को हराने के बाद बोले हार्दिक सिंह

हमारी ताकत है पेनल्टी कॉर्नर

चेन्नई (एजेंसी)। भारत के उप-कप्तान हार्दिक सिंह ने कहा है कि पेनल्टी कॉर्नर मेजबान टीम की ताकत है और एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी हॉकी में वे इसका पूरा इस्तेमाल करेंगे। भारत ने पहले मैच में चीन को 7.2 से हराया और छह गोल पेनल्टी कॉर्नर के जरिए हुए। हार्दिक ने मैच के बाद कहा, 'पेनल्टी कॉर्नर हमारी ताकत हैं। हम उसका पूरा इस्तेमाल करेंगे। हमें खुशी है कि पेनल्टी पर गोल हो रहे हैं। उन्होंने कहा, 'हमारा लक्ष्य पेनल्टी कॉर्नर की दर बेहतर रखना और कम से कम दो या तीन गोल उसके जरिए करना है। इसके अलावा हर क्वार्टर में मौके बनाने हैं। भारतीय टीम मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम की नयी टर्फ पर पहला टूर्नामेंट खेल रही है और हार्दिक ने इस मैदान के बारे में सकारात्मक राय दी। उन्होंने कहा, 'टर्फ बहुत अच्छी है। तमिलनाडु सरकार बधाई की पात्र है जिसने इतना अच्छा काम किया। पूरी टीम यहां खेलकर खुश है। भारत को अब शुक्रवार को जापान से खेलना है। हार्दिक ने कहा, 'हमारे लिए कोई टीम कमजोर नहीं है। हर टीम समान है और हम उसी रणनीति के साथ उतरेंगे। जापान की मैन टू मैन मार्किंग अच्छी है और हमें उसका जवाब देना होगा।

मुख्य कोच क्रेग फुल्टोन ने कहा, 'हमने इस मैच में रोटेशन का बखूबी इस्तेमाल किया। यह नई पिच है और हमने इस पर अभ्यास किया था। मैच दर मैच यह बेहतर होती जाएगी। मुझे पिच पसंद आई।

पदार्पण के बाद बोले तिलक वर्मा

'बचपन से मेरा सपना भारत के लिए विश्व कप जीतने का रहा है'

तारोबा (एजेंसी)। तिलक वर्मा ने सोचा नहीं था कि भारत के लिये पदार्पण का मौका करियर में इतनी जल्दी मिल जाएगा लेकिन अब यह सपना पूरा होने के बाद उनका लक्ष्य विश्व कप जीतना है। 2020 अंडर 19 विश्व कप टीम का हिस्सा रहे 20 वर्ष के वर्मा ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी20 मैच में 22 गेंद में 39 रन बनाए। वर्मा ने बीसीसीआई द्वारा पोस्ट किए गए वीडियो में कहा, 'हर किसी का सपना देश के लिए खेलने का होता है। मैने कभी सोचा नहीं था कि करियर में इतनी जल्दी भारत के लिए खेलने का मौका मिलेगा। अंडर 19 विश्व कप के बाद कोरोना महामारी आ गई तो मुझे लगा कि जो भी मौका मिले, उसमें खेल लो। मुंबई इंडियंस के लिए 2023 आईपीएल में 343 रन बनाने वाले वर्मा ने कहा, 'बचपन से मेरा सपना भारत के लिए विश्व कप जीतने का रहा है। मैं हमेशा यही सोचता रहता हूं कि विश्व कप कैसे जीता जाए। मैं इसकी कल्पना करता रहता हूं कि मैं बल्लेबाजी के लिए जा रहा हूं और हमने विश्व कप जीत लिया। उन्होंने कहा, 'अब मुझे भारत की जर्सी मिल गई है जो मेरा सपना थी। मुझे लगता है कि विश्व कप जीतने का सपना भी जल्दी ही पूरा होगा। बहुत अच्छा लग रहा है।

आरसीबी ने हेसन और बांगड़ से नाता तोड़ा, जिम्बाब्वे के पूर्व अनुभवी क्रिकेटर को बनाया मुख्य कोच

बेंगलुरू (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर ने शुक्रवार को जिम्बाब्वे के पूर्व अनुभवी क्रिकेटर एंडी फ्लावर को मुख्य कोच बनाया जिससे माइक हेसन और संजय बांगड़ के साथ नाता भी टूट गया। आरसीबी के क्रिकेट परिचालन निदेशक हेसन और मुख्य कोच बांगड़ का अनुबंध सितंबर तक था लेकिन फ्रेंचाइजी ने उसका नवीनीकरण नहीं करने का फैसला किया।

आरसीबी के उपाध्यक्ष और प्रमुख राजेश मेनन ने लंदन में फ्लावर से मुलाकात की जिसके बाद उनके नाम का ऐलान किया गया। पिछले दो सत्र में आईपीएल की लखनऊ सुपर जाइंट्स के कोच रहे फ्लावर ने कहा, 'मुझे आरसीबी से जुड़ने का फख्र है। माइक हेसन और संजय बांगड़ ने काफी मेहनत की है और अब मैं आरसीबी को नयी ऊंचाइयों तक ले जाने की कोशिश करूंगा।

फ्लावर 12 साल तक इंग्लैंड क्रिकेट टीम के साथ भी रहे। वह 2007 में पीटर मूर्स के साथ सहायक कोच बने थे और दो साल बाद मुख्य कोच बने। उनके मुख्य कोच रहते इंग्लैंड की टेस्ट टीम नंबर एक बनी, टी20 विश्व कप 2010 जीता और 2010-11 में ऑस्ट्रेलिया में एशेज श्रृंखला जीती। फ्लावर आईपीएल में लखनऊ से पहले पंजाब किंग्स के साथ भी रह चुके हैं। उन्होंने कहा, 'मैं फाफ डु प्लेसी के साथ फिर काम करके खुश हूं। हम पहले भी साथ काम कर चुके हैं और अब इस साझेदारी को बड़ा बनाएंगे।

आश्चर्य की बात है, चहल को ओवर ना देने पर आकाश चोपड़ा ने उठाए सवाल

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले टी20 मैच के दौरान हार्दिक पांड्या के गेंदबाजी संसाधनों के प्रबंधन पर सवाल उठाए हैं। भारत को मैच में चार रन के मामूली अंतर से हार का सामना करना पड़ा। भारत ने चार गेंदबाज और दो ऑलराउंडर उतारे जिनमें कप्तान पांड्या और अक्षर पटेल शामिल थे। इस श्रृंखला को टी20 विश्व कप की यात्रा की शुरुआत माना जाता है जिसकी मेजबानी 2024 में वेस्टइंडीज और अमरीका द्वारा की जाएगी।

चोपड़ा ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, भारत की शुरुआत गेंद से उतनी अच्छी नहीं रही। इसके बाद युजी चहल आए और उन्होंने एक ओवर में दो विकेट लिए। इसके बाद उन्हें ओवर नहीं मिला दिया गया। मेरी राय में अगर युजी चहल ने कल के मैच में चार ओवर नहीं फेंके, बावजूद इसके अपने पहले ओवर में दो विकेट लेने से आप एक चाल चूक गए।

हैरानी की बात यह है कि पावरप्ले में सलामी बल्लेबाज ब्रैंडन किंग और काइल मेयर्स को आउट करके महत्वपूर्ण सफलता हासिल करने वाले चहल ने 13वें ओवर तक कोई दूसरा ओवर नहीं फेंका। तीन ओवर की गेंदबाजी के बाद चहल का अंतिम आंकड़ा 24 रन देकर 2 विकेट था।

पूर्व क्रिकेटर ने कहा, मैं कुछ हद तक निराश था क्योंकि आपने उसके शेष तीन ओवर रोक दिए थे। वह निकोलस पूरन को आउट कर सकता था, क्योंकि वह बाएं हाथ के बल्लेबाजों के खिलाफ असाधारण रूप से अच्छी गेंदबाजी करता है, लेकिन आपने उसका उपयोग नहीं करने का फैसला किया। बाद में उसे और अधिक ओवर देने का निर्णय थोड़ा गलत था। आश्चर्य की बात है। कुलदीप यादव ने अपने पूरे कोटे के ओवर फेंके जबकि अक्षर पटेल ने केवल दो ओवर फेंके, कभी-कभी बहुत अधिक विकल्प होना अभिशाप और आशीर्वाद दोनों हो सकता है।

पीवी सिंधू ऑस्ट्रेलिया ओपन से बाहर, अमरीका की बेवेन झांग से हारी

सिडनी (एजेंसी)। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पी वी सिंधू आस्ट्रेलिया ओपन महिला एकल क्वार्टर फाइनल में अमरीका की बेवेन झांग से सीधे गेम में हारकर बाहर हो गई। पिछले कई टूर्नामेंटों से शुरूआती दौर में ही बाहर होने के कारण विश्व रैंकिंग में 17वें स्थान पर खिसकी सिंधू को दुनिया की 12वें नंबर की खिलाड़ी झांग ने 39 मिनट में 21.12, 21.17 से हरा दिया।

पिछले 10 मुकाबलों में सिंधू ने झांग को छह बार हराया है लेकिन चीनी मूल की इस अमेरिकी खिलाड़ी से आज पार नहीं पा सकी। सिंधू ने हमवतन अष्मिता चालिहा और आकर्षि कश्यप को पहले दो दौर में हराया था लेकिन झांग से हार निराशाजनक रही। अब वह 21 से 27 अगस्त तक डेनमार्क के कोपेनहेगन में विश्व चैम्पियनशिप खेलेंगी।

विश्व चैम्पियनशिप 2019 विजेता सिंधू चोट से उबरने के बाद से खराब फॉर्म से गुजर रही है। वह इस साल 12 बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर टूर्नामेंटों में से सात में जल्दी बाहर हो गई। साल की शुरूआत में उन्होंने कोरिया के पार्क ताए सांग से नाता तोड़कर कुछ समय साइ की कोच विधि चौधरी के साथ काम किया। अब उनके साथ नये कोच मोहम्मद हफीज हाशिम हैं जो 2003 आल इंग्लैंड चैम्पियन रह चुके हैं।

भारतीयों में एच एस प्रणय का सामना इंडोनेशिया के शीर्ष वरीयता प्राप्त एंथोनी जिंटिंग से होगा जबकि 2021 विश्व चैम्पियनशिप रजत पदक विजेता किदाम्बी श्रीकांत की टक्कर हमवतन प्रियांशु राजावत से होगी।

सिर्फ प्रतिभागी नहीं होंगे, विश्व कप में दावेदार होंगे, भारतीय टेंट पेगिंग टीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। दूसरो के घोड़ों पर निरंतर अभ्यास और हाल में रूस में अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में शीर्ष पर रहने से भारतीय टेंट पेगिंग टीम को दक्षिण अफ्रीका में आगामी विश्व कप में अच्छा प्रदर्शन करने का आत्मविश्वास मिला है।

मोहित कुमार (नौसेना), दिनेश कार्लेकर (असम राइफल्स), हवलदार गौतम अट्टा (एएससी), मोहम्मद अबरार (61वीं कैवेलरी) और डॉ. अमित छेत्री (आईटीबीपी) 23 अगस्त से दक्षिण अफ्रीका के जॉर्जिया में प्रतिस्पर्धा पेश करेंगे। यह टेंट पेगिंग विश्व कप का चौथा सत्र है और भारतीय टीम दो बार विश्व कप में हिस्सा लेते हुए छठे स्थान से बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाई है।

टीम की अगुआई छेत्री कर रहे हैं और कोच की जिम्मेदारी कर्नल एसएस सोलंकी निभा रहे हैं। टीम का मानना है कि वह गैर ओलंपिक घुड़सवारी स्पर्धा के सबसे बड़े टूर्नामेंट में अपने अब तक के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

मोहित ने कहा कि हम अपने घोड़ों के साथ अभ्यास करते थे लेकिन पिछले तीन महीने से हम दूसरों के घोड़ों पर अभ्यास कर रहे हैं जिससे कि हम अनजान घोड़ों के साथ तेजी से सामंजस्य बैठाने का कौशल विकसित कर सकें। हमें नहीं पता कि प्रतियोगिता के दौरान हमें कौन सा घोड़ा मिलेगा। इसका फैसला ड्रॉ से होगा।

उन्होंने कहा कि इसलिए आपको यह सीखना होगा कि जानवर कैसा व्यवहार कर रहा है और उसकी चाल कैसी है। हम अच्छा कर रहे हैं। स्कोरिंग में सुधार हुआ है। पहले यह 65-70 प्रतिशत था लेकिन अब यह 80-85 प्रतिशत हो गया है। साथ ही जिस तरह से हम रूस में विपरीत परिस्थितियों से निपटे, उससे हमें आत्मविश्वास मिला कि हम विश्व कप में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं।

भारतीय टीम जुलाई में मैत्री अंतरराष्ट्रीय मैच के लिए रूस पहुंची थी लेकिन उपकरणों के बिना क्योंकि समय पर मंजूरी नहीं मिली और एयरलाइन ने भाले और तलवार ले जाने से इनकार कर दिया। टीम का एक रिजर्व सदस्य उपकरण लेकर हवाई अड्डे से लौट आया।

कोच सोलंकी ने कहा कि यह हमारे लिए अजीब स्थिति थी। हमें अन्य प्रतिस्पर्धियों से उपकरण उधार लेने पड़े। यह एक चुनौती थी क्योंकि लगातार उपयोग के साथ आप उपकरणों के आदी होते हैं और अचानक पूरी तरह से अलग-अलग भाले और तलवार होने से निश्चित रूप से आपके प्रदर्शन पर असर पड़ सकता है।

उन्होंने कहा कि इसके अलावा जिन घोड़ों का इस्तेमाल किया जा रहा था, वे उचित टेंट पेगिंग घोड़े नहीं थे, वे जिम्नास्टिक के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले घोड़े थे। घोड़े पेग (जमीन पर पड़ा सामान) से दूर जा रहे थे। अनुकूलन चुनौतीपूर्ण था। कोच को पता था कि यह एक कठिन चुनौती है लेकिन वह अपने खिलाड़ियों को प्रेरित रखना चाहते थे। मोहित ने कहा कि कोच ने कहा कि आप हथियारों से नहीं हौसले से जीतते हो।

इस साल देश भर में 1,000 खेलो इंडिया केंद्र खोले जाएंगे : केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास के प्रति सरकार के गंभीर होने का दावा करते हुए केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने बृहस्पतिवार को राज्यसभा में कहा कि इस साल देश भर में 1,000 खेलो इंडिया केंद्र खोले जाएंगे जिनमें से 227 ऐसे केंद्र पूर्वोत्तर राज्यों में होंगे। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्री ठाकुर ने उच्च सदन में प्रश्नकाल के दौरान पूरक सवालों का जवाब देते हुए कहा कि सरकार का प्रयास देश के हर जिले में एक खेलो इंडिया केंद्र खोलने का है लेकिन पूर्वोत्तर राज्यों में हर जिले में दो केंद्र खोलने पर जोर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर के खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन किया और सरकार उस क्षेत्र में खेल संबंधी बुनियादी ढांचे के विकास के लिए गंभीर है। उन्होंने कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में खेल बुनियादी ढांचा के विकास के लिए करीब 75 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है जिनमें करीब 520.60 करोड़ रूपये का खर्च आएगा। ठाकुर ने कहा कि पूर्वोत्तर राज्य देश में खेल महाशक्ति के केंद्र हैं और इन्होंने अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कई खिलाड़ी देश को दिए हैं। उन्होंने कहा कि खेल के राज्य का विषय होने के कारण खेल अवसंरचना के विकास सहित खेलों के विकास की जिम्मेदारी मुख्य रूप से राज्य सरकारों की है और केंद्र कमियों को दूर करके उनके प्रयासों में मदद करता है। ठाकुर ने कहा कि सरकार ने अब तक का पहला राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय मणिपुर में स्थापित किया है।

पहली बार हुआ ऐसा, बीसीसीआई ने टीवी की तुलना में डिजिटल अधिकारों के लिए बेस प्राइज रखा अधिक

नईदिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने टीवी की तुलना में डिजिटल अधिकारों के लिए उच्च आधार मूल्य निर्धारित किया है। आगामी मीडिया अधिकार चक्र के लिए कुल आधार मूल्य को घटाकर 45 करोड़ रुपए प्रति मैच कर दिया है जबकि डिज्नी+ हॉटस्टार ने हाल ही में समाप्त हुए चक्र में प्रति मैच 61 करोड़ रुपए का भुगतान किया गया है।

क्रिकेट में डिजिटल अधिकारों का आधार मूल्य अतीत में कभी भी टीवी अधिकारों से अधिक नहीं रहा है। बुधवार को बीसीसीआई द्वारा जारी टेंडर के अनुसार बोर्ड ने पैकेज ए के लिए प्रति मैच 20 करोड़ रुपए का आधार मूल्य निर्धारित किया है, जिसमें भारतीय उपमहाद्वीप के टीवी अधिकार शामिल हैं। पैकेज बी में वैश्विक डिजिटल अधिकार और शेष विश्व टीवी अधिकार शामिल हैं, जिसका आधार मूल्य 25 करोड़ रुपए प्रति मैच है।

भारत के लिए इंडियन प्रीमियर लीग टीवी और डिजिटल अधिकारों का आधार मूल्य क्रमशः 49 करोड़ रुपए और 33 करोड़ रुपये प्रति मैच था। चुनिंदा आईपीएल मैचों वाले विशेष डिजिटल अधिकार पैकेज में प्रति मैच 16 करोड़ रुपए का आधार मूल्य रखा गया था। उद्योग विशेषज्ञों ने कहा कि कुछ मीडिया कंपनियों के सामने आने वाली चुनौतियों को देखते हुए, बाजार में सभी प्रमुख खिलाड़ियों की अधिकतम भागीदारी की अनुमति देने के लिए आधार मूल्य कम कर दिया गया है।

ई-नीलामी 31 अगस्त को शुरू होगी जिसमें डिजनी+ हॉटस्टार, वायाकॉम 18 और सोनी पिक्चर्स नेटवर्क्स इंडिया के बीच टीवी और डिजिटल दोनों अधिकारों के लिए प्रतिस्पर्धा होने की उम्मीद है। मीडिया अधिकार निविदा पांच साल (2023-28) के लिए जारी की गई है जिसमें 88 मैच शामिल हैं। प्रति मैच 45 करोड़ रुपए के हिसाब से कुल बेस प्राइस 3,960 करोड़ रुपए बैठता है।

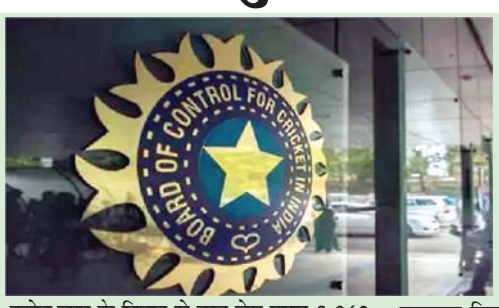

आधार मूल्य कम करते हुए बीसीसीआई ने प्रति मैच 60 करोड़ रुपए या 88 मैचों के लिए 5,280 करोड़ रुपए की सीमा तय की है। यदि बोलियां प्रति मैच 60 करोड़ रुपए से कम होती हैं, तो बीसीसीआई बोली प्रक्रिया को रद्द करने का अधिकार सुरक्षित रखता है। डिजनी ने 2018-23 मीडिया अधिकार चक्र के लिए 6,138 करोड़ रुपए का भुगतान किया था। मीडिया अधिकारों की नीलामी ऐसे समय में हो रही है जब सोनी और जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज अपने व्यवसायों का विलय करने की प्रक्रिया में हैं और वॉल्ट डिजनी अपने भारतीय व्यवसाय, डिजनी स्टार की बिक्री पर विचार कर रहा है।

विशेषज्ञों का मानना है कि भारतीय क्रिकेट के लिए डिजिटल अधिकारों का मूल्य टीवी अधिकारों से काफी बड़े अंतर से आगे निकल जाएगा, आईपीएल के विपरीत जहां अंतर मामूली है। मीडिया पार्टनर्स एशिया के उपाध्यक्ष मिहिर शाह ने कहा, पिछले साल आईपीएल के लिए डिजिटल अधिकार टेलीविजन से थोड़ा अधिक महंगे बिके थे। तब से डिजिटल प्रतिस्पर्धा तेज हो गई है, जबकि टेलीविजन में और अधिक मजबूती आई है। बदलते दौर को देखते हुए आगामी बीसीसीआई नीलामी में डिजिटल मूल्य व्यापक अंतर के साथ टेलीविजन से आगे निकल सकता है।

डिज़्नी स्टार और वायाकॉम18 ने 2027 तक आईपीएल के टीवी और डिजिटल अधिकार क्रमशः 23,575 करोड़ रुपए और 23,758 करोड़ रुपए में खरीदे। उनकी बोलियों के बीच का अंतर केवल 183 करोड़ रुपए है। एक मीडिया कंपनी के शीर्ष अधिकारी ने कहा कि आधार मूल्य में कमी का मतलब यह नहीं है कि कुल मूल्य में गिरावट आएगी। अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर एक मीडिया हाउस से कहा, च्बीसीसीआई द्वारा निर्धारित प्रति मैच 60 करोड़ रुपए की सीमा आसानी से प्राप्त की जा सकती है। बीसीसीआई के मीडिया अधिकारों का मूल्य आसानी से 9,000 करोड़ रुपए से 10,000 करोड़ रुपए तक पहुंच सकता है, जो प्रति मैच 100 करोड़ रुपए से अधिक है।

एक अन्य मीडिया कंपनी के खेल प्रसारण प्रमुख ने कहा कि प्रति मैच 45 करोड़ रुपए से अधिक कुछ भी अव्यवहारिक है। कार्यकारी ने कहा, आदर्श रूप से मीडिया अधिकारों के लिए संयुक्त बोली आधार मूल्य से अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि द्विपक्षीय मैच उच्च कीमत पर व्यवहार्य नहीं हैं। अधिकारी ने यह भी कहा कि मीडिया कंपनियां टीवी अधिकारों के लिए तभी बोली लगाएंगी जब वे डिजिटल अधिकार प्राप्त करने के बारे में भी आश्वस्त हों। उन्होंने कहा, च्आईपीएल के दौरान जो कुछ हुआ, उसकी पुनरावृत्ति कोई नहीं चाहता, जब अधिकारों में बंटवारे के कारण मोनिटाइजेशन प्रभावित हुआ।

संक्षिप्त समाचार

रोमांस के लिए गर्लफ्रेंड को ओयो रूम ले गया था प्रेमी, फिर उठाया खौफनाक कदम

नोएडा, एजेंसी। नोएडा के सेक्टर-27 स्थित ओयो होटल में 29 वर्षीय युवक ने कथित तौर पर पंखे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। वह होटल में अपनी गर्लफ्रेंड के साथ ठहरा था, यहां उसका गर्लफ्रेंड से किसी बात को लेकर विवाद हो था। इसके बाद उसने यह कदम उठाया। घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची सेक्टर-20 थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है। एसीपी रजनीश वर्मा ने बताया कि छलेरा गांव के गली नंबर-3 के रहने वाला 29 वर्षीय विक्रांत सिंह चौहान बुधवार को सेक्टर-27 स्थित ओयो होटल में अपनी गर्लफ्रेंड के साथ रुका था। इस दौरान उसका अपनी गर्लफ्रेंड से किसी बात पर विवाद हो गया। इसके चलते उन्होंने होटल के कमरे में पंखे से फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना के समय उसकी गर्लफ्रेंड होटल से बाहर थी। जब वह वापस लौटी तो उसने विक्रांत को फंदे से लटका देखा। इसके बाद इसकी सूचना होटल स्टाफ और पुलिस को दी। पुलिस की टीम ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। एसीपी ने बताया कि पुलिस विक्रांत की महिला गर्लफ्रेंड से पूछताछ कर रही है। दोनों के बीच काफी दिनों से दोस्ती थी। होटल में लगे कैमरे की भी जांच की जा रही है।

हमीरपुर में गहरी खाई में गिरा टिप्पर, ड्राइवर की मौत; 2 अन्य घायल

हमीरपुर , एजेंसी। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिले में निर्माण सामग्री ढोहने वाला भारी वाहन टिप्पर खाई में गिर गया। हादसे के वक्त गाड़ी में 3 लोग सवार थे। जिसमें से चालक की मौत हो गई और दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। बजरी लदा वाहन बुधवार को घुमारवीं जा रहा था, इसी दौरान अचानक वह अनियंत्रित होकर खाई में गिर गया। वाहन के नीचे दबने से चालक अरुण कुमार (35) की मौत हो गई, जबकि उसके दो साथी गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को घुमारवीं अस्पताल में भर्ती कराया गया है। शव पोस्टमार्टम के बाद परिवार को सौंप दिया गया है, पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। गाड़ी को खाई से निकला जा रहा है। बताया जा रहा है कि ढ़लान पर लोड ज्यादा लेकर चलने से गाड़ी अनियंत्रित हो गई।

अजित पवार ने नितिन देसाई आत्महत्या जांच में राजनीतिक हस्तक्षेप के खिलाफ चेताया

मुंबई, एजेंसी। मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री अजीत पवार, मंत्री एम.पी. लोढ़ा, भाजपा मुंबई अध्यक्ष आशीष शेलार, अन्य राजनीतिक नेताओं और फिल्मी हस्तियों ने शुक्रवार को नितिन चंद्रकांत देसाई को श्रद्धांजलि दी। गणमान्य व्यक्ति सर जे.जे. अस्पताल गए जहां बुधवार देर रात पोस्टमॉर्टम के बाद देसाई का शव रखा गया था। गौरतलब है कि देसाई दो अगस्त की सुबह खालापुर, रायगढ़ में एनडी आर्ट वर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के एक सेट पर फंदे पर लटके पाए गए थे। मीडियाकर्मियों से बात करते हुए, पवार ने कहा कि गुरुवार को विधानसभा में डिप्टी सीएम और गृह मंत्री देवेंद्र फड़नवीस के आश्वासन के अनुसार, देसाई की आत्महत्या के मामले की जांच की जाएगी। पवार ने चेतावनी देते हुए कहा कि मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि निष्पक्ष जांच होगी, इसमें सभी पहलुओं को शामिल किया जाएगा। किसी भी राजनीतिक हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इसमें एडलवाइस समूह की कंपनियों के शीर्ष अधिकारी शामिल होंगे, जिनके खिलाफ देसाई ने कथित तौर पर अपनी आत्महत्या से पहले अपने स्टूडियो में छोड़ी गई ऑडियो-रिकॉर्डिंग में नाम लिया है। 2016-2018 के बीच, देसाई ने 181 करोड़ रुपये का ऋण लिया था, जो 2022 तक बढ़कर 252 करोड़ रुपये हो गया और मुंबई एनसीएलटी ने जुलाई के अंत में दिवालियापन समाधान कार्यवाही शुरू की थी। श्रद्धांजलि के तुरंत बाद, देसाई के पार्थिव शरीर को एम्बुलेंस में खालापुर स्टूडियो ले जाया गया, जहां इसे दोपहर 12-2 बजे तक सार्वजनिक दर्शन के लिए रखा जाएगा, फिर 3 बजे अंतिम संस्कार की प्रक्रिया शुरू होगी।

विनिर्माण में वृद्धि दिख रही, खाद्य मुद्रास्फीति से निपटने के लिए सतर्क रुख अपनाने की जरूरत

नई दिल्ली, एजेंसी। गुरुवार को जारी वित्त मंत्रालय के एक दस्तावेज में कहा गया है कि जून तिमाही में घरेलू विनिर्माण उत्पादन में सुधार को इनपुट कीमतों में गिरावट और मजबूत आंतरिक मांग से मदद मिली। मंत्रालय ने आगाह किया कि खाद्य मुद्रास्फीति में हालिया वृद्धि से संकेत मिलता है कि सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को सतर्क रुख अपनाना चाहिए। वित्त मंत्रालय की गुरुवार को जारी मासिक आर्थिक समीक्षा में कहा गया है, मौसम संबंधी व्यवधानों के कारण फलों, सब्जियों और दालों और उत्पादों की कीमतों में वृद्धि से सीपीआई-खाद्य मुद्रास्फीति मई में 3 प्रतिशत से बढ़कर जून में 4.5 प्रतिशत हो गई, जो आरबीआई और सरकार द्वारा सतर्क दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करती है।सकारात्मक पक्ष पर दस्तावेज़ में कहा गया है कि विकास के मामले में, देश की घरेलू बुनियाद मजबूत बनी हुई है।

नूंह हिंसा - एक समुदाय के 400 से अधिक प्रवासी परिवार मूल स्थानों के लिए रवाना

गुरुग्राम, एजेंसी। हरियाणा के नूंह में सांप्रदायिक हिंसा के बाद 400 से अधिक घबराए हुए प्रवासी परिवार अपने मूल स्थानों के लिए रवाना हो गए हैं, जो अब गुरुग्राम तक फैल गया है और वे सदमे में और डरे हुए हैं। जहां 20 परिवार पालदा गांव से भाग गए हैं, वहीं लगभग 400 परिवार सेक्टर 70 में झुग्गियां छोड़ने के लिए मजबूर हो गए हैं। उनमें से ज्यादातर पश्चिम बंगाल, बिहार और झारखंड के प्रवासी श्रमिक हैं। दावा किया गया कि कुछ लोगों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी और चेतावनी दी कि अगर वे नहीं हटे तो उनकी झुग्गियों में आग लगा दी जाएगी।हिंसा के बाद गुरुग्राम में नाई की दुकानें, कबाड़ी की दुकानें और होटल (मुस्लिम समुदाय के लोगों द्वारा संचालित) पर ताला लगा दिया गया।गुरुग्राम में मानेसर और आसपास के इलाकों में बड़ी संख्या में प्रवासी परिवार रहते थे।अल्पसंख्यक समुदाय से संबंधित एक व्यक्ति ने कहा, लोगों का एक समूह मोटरसाइकिलों पर आया और हमें धमकी दी कि अगर हम वहां से नहीं हटेंगे।

जदयू ने शुरू की भाईचारा यात्रा, मुसलमानों पर फोकस

नईदिल्ली, एजेंसी। बिहार की सत्तारूढ़ जद (यू) ने 2024 के लोकसभा चुनावों से पहले मतदाताओं, विशेषकर अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों तक पहुंचने के लिए सामाजिक एकता और सांप्रदायिक सद्भाव के लिए पूरे बिहार में एक यात्रा शुरू की है। नीतीश कुमार की पार्टी की इस यात्रा को भाईचारा यात्रा कहा जा रहा है। इसका नारा है- अपनी तारीख को बचाएं, नीतीश के साथ आएं, इंडिया को मजबूत बनाएं। जदयू की इस यात्रा को कारवां-ए-इत्तेहाद भी कहा जा रहा है।

यह 1 अगस्त को पश्चिम चंपारण के नरकटियागंज से शुरू हुई। लगभग एक महीने तक चलने वाली यह यात्रा बिहार के 38 जिलों में से 27 जिलों को कवर करेगी, जहां बड़ी संख्या में मुस्लिम आबादी है। यात्रा को जद (यू) एमएलसी खालिद अनवर के नेतृत्व में शुरू किया गया है। इसमें समय-समय पर बिहार के कुछ प्रमुख मंत्री भी शामिल होंगे, जिनमें बिहार के अल्पसंख्यक कल्याण मंत्री जमा खान भी शामिल होंगे। हालांकि, बिहार के

सीएम और जेडीयू सुप्रीमो नीतीश कुमार यात्रा का हिस्सा नहीं होंगे। जद (यू) के सूत्रों ने कहा कि पार्टी द्वारा इस यात्रा को करने के कई कारण है। इनमें बिहार शरीफ और सासाराम में हाल की सांप्रदायिक हिंसा के साथ-साथ चुनाव से पहले राज्य में सांप्रदायिक कलह की आशंकाएं शामिल हैं। भाजपा की प्रमुख सहयोगी रही जद (यू) पिछले साल अगस्त में एनडीए से बाहर हो गई थी, जिसके बाद नीतीश ने अपनी सरकार बनाने के लिए राजद और अन्य महागठबंधन सहयोगियों से हाथ मिलाया। यात्रा पश्चिम चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर, सीतामढी और सीवान समेत उत्तर बिहार के कई जिलों से गुजरेगी। यह सेमांचल के किशनगंज, कटिहार, अररिया और पूर्णिया जिलों से गुजरते हुए दरभंगा और मधुबनी के मिथिलांचल बेल्ट को भी पार करेगी, जहां 40 प्रतिशत से अधिक मुस्लिम आबादी रहती है। 2024 के चुनावों के लिए नीतीश को राष्ट्रीय स्तर पर संभावित प्रधानमंत्री पद के चेहरे के रूप में स्थापित करना भी प्रतीत होता है। नरकटियागंज में यात्रा की शुरुआत करते हुए खालिद अनवर ने एक सभा में कहा, हम मुसलमान एक कठिन समय में जी रहे हैं। हम क्या पहनते हैं, क्या पकाते और खाते हैं, ये सब अब सवालों के घेरे में है। यह पूरी तरह से उस गंगा-जमुनी तहजीब के खिलाफ है जिसकी हम अक्सर बात करते हैं। इसलिए हमें जागने की जरूरत है, अपने विवेक का इस्तेमाल करें और उकसावे में न आएं। उन्होंने कहा, हमने स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी और कभी दूसरों के नाम और उपनाम की परवाह नहीं की। अनवर ने पिछले 18 वर्षों में सीएम रहने के दौरान नीतीश कुमार द्वारा किए गए सामाजिक एकजुटता और राज्य भर में कब्रिस्तानों की बाड़ लगाने जैसी पहल करके मुस्लिम समुदाय के विकास पर भी बात की। अनवर ने यह भी कहा, हालांकि हमें यात्रा में हिंदुओं और मुसलमानों की समान भागीदारी पसंद है, लेकिन हम मुसलमानों की अधिक भागीदारी देखते हैं। मुस्लिम धार्मिक संगठनों के प्रमुख और समुदाय के मौलवी महत्व दिए जाने और विश्वास में लिए जाने से खुश हैं। हम सभा को कुछ बुनियादी बातें बताएंगे जैसे कि हिंदुओं तक पहुंचना और उनके सामाजिक कार्यों में भाग लेना और हमारे राजनीतिक विरोधियों की बातों में न आना। संविधान और शरीयत के बीच संभावित टकराव पर, जद (यू) एमएलसी ने कहा कि यात्रा संविधान की वकालत करेगी क्योंकि यह सभी धार्मिक कानूनों की रक्षा करता है और हमारी प्रगति के लिए आवश्यक है। अनवर ने द इंडियन एक्सप्रेस को बताया, हमारा उद्देश्य उन क्षेत्रों के प्रत्येक गांव के प्रभावशाली समुदाय के लोगों और मौलवियों से जुड़ना है।

धामी कैबिनेट में कई प्रस्तावों पर लगी मुहर, सभी धर्मों के लिए विवाह का रजिस्ट्रेशन अनिवार्य

देहरादून, एजेंसी।
मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की अध्यक्षता ने आज उत्तराखंड बिनेट की महत्वपूर्ण बैठक हुई। इस बैठक में इन मुख्य बिंदुओं पर कैबिनेट की सहमति बनी। ऊर्जा विभाग में 2008 में केंद्र सरकार के द्वारा जल विद्युत नीति लायी गयी थी। उसे आज तक लागू नहीं किया गया था, जिसे आज कैबिनेट बैठक में लागू किया गया। 12 प्रतिशत बिजली की बजाय अब 13 प्रतिशत बिजली जल विधुत परियोजनाओं से 1प्रतिशत जो अतरिक्त बिजली सरकार को मिलेगी उस पैसे से जल विद्युत परियोजना से प्रभावित लोगो को दिया जाएगा। वित्त विभाग में कई अधिकारियों के अधिकार को बढ़ाया गया है।

मसूरी क्षेत्र को पूरा एक तहसील बनाये जाने की मंजूरी। पीडब्ल्यूडी विभाग के तहत नई नियमावली को दी गई मंजूरी। नई शिक्षा नीति के तहत पहली कक्षा में एडमिशन के लिए 1 अप्रैल को 6 वर्ष होने पर मुहर। लघु सिंचाई विभाग की सेवा नियमावली में बदलाव 75 की जगह 85 फ़ीसदी पद सीधी भर्ती से भरे जाने को मंजूरी। पुलिस दूरसंचार विभाग के ढांचे के पुनर्गठन को मंजूरी, 2 पद हुए स्वीकृत, 8700 ग्रेड पे के दो 2 पद

हुए स्वीकृत। 13 पीपीएस पदों को कैबिनेट ने मंजूरी दी। पशुपालन विभाग के तहत वेटरनरी कर्मियों को पहाड़ में सेवा देने के लिए कृत्रिम गर्भाधान के लिए बढ़ाई गई प्रति कृत्रिम गर्भाधान पर राशि। उत्तराखंड में होने वाली राष्ट्रीय खेलों के लिए हाई पावर कमेटी का गठन किया। एमएसएमई विभाग की नई पॉलिसी में बदलाव किया गया। पर्वतीय क्षेत्रों में बढ़ाई गई सब्सिडी। मैदानी क्षेत्रों की तुलना में पहाड़ में ज्यादा रखी गई है सब्सिडी। कौशल विकास के तहत टाटा कम्पनी भी देगी आईटीआई संस्थानों में ट्रेनिंग। मॉडल आईटीआई के रूप में विकसित होंगे आईटीआई संस्थान। सरकार के साथ मिलकर टाटा ग्रुप चलाएगा। आईटीआई संस्थान चौरासी कुटिया स्वर्गाश्रम को फॉरेस्ट विभाग के साथ एचसीपी कंपनी विकास करेगी। हरिद्वार और ऋषिकेश शहरों में मास्टर प्लान के तहत विकसित किया जाएगा। 6 महीने में डीपीआर बन जाएगी।

उम्र के फॉर्मूले ने अशोक गहलोत के मंत्रियों की उड़ाई नींद, टिकट पक्का नहीं; 9 मंत्रियों के टिकट पर खतरा

जयपुर , एजेंसी।
राजस्थान विधानसभा चुनाव कांग्रेस के उम्रदराज मंत्रियों और विधायकों के टिकट कट सकते हैं। पार्टी सूत्रों के अनुसार कांग्रेस आलाकमान ने दो टूक कह दिया है कि कोई भी अपना टिकट पक्का न समझें। उम्रदराज मंत्रियों को को रिटायरमेंट के लिए तैयार हो जाना चाहिए।टिकट कटने की वजह 50 फीसदी टिकट युवाओं को दिए जाने की बात कही जा रही है। पार्टी सूत्रों के अनुसार विधानसभा चुनाव में उदयपुर घोषणा पत्र के नियम को सख्ती से लागू किया जाएगा। दूसरी वजह यह बताई जा रही है कि सचिन पायलट युवाओं को ज्यादा टिकट देने की मांग करते रहे हैं। कांग्रेस आलाकमान ने पायलट की यह बात मान ली है। सियासी जानकारों का कहना है कि यदि 50 फीसदी टिकट युवाओं को दिए जाते हैं तो गहलोत के 70 पार करीब 9 मंत्रियों के टिकट कट सकते हैं। कांग्रेस विधायकों के टिकट पर भी खतरे में पड़ सकते हैं। हालांकि, राजस्थान में अगले विधानसभा चुनाव को लेकर टिकट वितरण का काम अभी बहुत दूर है लेकिन इसे लेकर पार्टियां एक्टिव मोड पर है। दूसरी तरफ विधानसभा चुनावों को लेकर उम्मीदवारों की पहली सूची सितंबर में आ सकती है। उम्मीदवारों का चयन जल्द से जल्द किया जाएगा।

प्रदेश प्रभारी रंधावा ने दिए थे संकेत

कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा ने कई महीने पहले कहा था कि बड़ी उम्र वाले लोगों को अपने आप ही कुर्सी का मोह त्याग देना चाहिए। इसमें कहने की जरूरत नहीं होती है। राजनीति में कटऑफ एज नहीं हो सकती। कांग्रेस ऐसी पार्टी है,

जो युवाओं को मौका देती है। कांग्रेस बुजुर्ग और अनुभवी नेताओं को साथ लेकर चलती है। युवाओं को आगे बढ़ाते रहते हैं। पार्टी में उम्रदराज नेताओं के टिकट कटते हैं तो सियासी तौर पर सीएम अशोक गहलोत के लिए झटका होगा। क्योंकि अधिकांश उम्रदाराज मंत्री और विधायक सीएम गहलोत से समर्थक माने जाते हैं। सियासी जानकारों का कहना है कि सचिन पायलट .युवाओं की बात करते हैं, इसके पीछे यह भी वजह हो सकती है।

गहलोत के नौ मंत्री 70 पार: राजस्थान कांग्रेस में 75 विधायकों की उम्र 50 वर्ष से ज्यादा हैं। 50 से कम उम्र वालों में सिर्फ अशोक चांदना, भंवर सिंह भाटी, टीकाराम जूली और सालेह मोहम्मद हैं। कांग्रेस में 70 साल या उससे ज्यादा उम्र के 9 मंत्री हैं। इनमें मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी, शांति धारीवाल, परसादीलाल मीणा, हेमाराम चौधरी, बीडी कल्ला, सुखराम विश्नोई, बृजेंद्र ओला, उदयलाल आंजना शामिल हैं। इसी तरह 80 साल या उससे ज्यादा उम्र के 4 विधायक हैं। इनमें बाड़मेर के शिव से विधायक अमीन खान, रामनारायण मीणा, जौहरीलाल मीणा, दीपेंद्र खैरिया शामिल हैं।

मंत्रियों ने निकाला नया फॉर्मूला= सीएम अशोक गहलोत के करीबी एंव सरकार में नंबर 2 की हैसियत रखने वाले यूडीएच मंत्री शांति धारीवाल का टिकट भी इस बार कट सकता है। माना जा रहा है कि शांति धारीवाल इस बार चुनाव नहीं लड़ेंगे। वह अपनी जगह अपने बेटे को टिकट दिलाना चाहते है। इसी प्रकार स्वास्थ्य मंत्री परसादी लाल मीना अपने विधानसभा क्षेत्र लालसोट से अपने पुत्र को चुनाव लड़वाना चाहते हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि टिकट खतरे में पड़ता देख मंत्रियों ने नया फॉर्मूला निकाला है। खुद की जगह अपने परिजनों को टिकट दिलवाना चाहते हैं। शायद यही वजह है कि पार्टी प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा को कहना पड़ा कि नेता पुत्रों के टिकट नहीं दिया जाएगा। जमीन पर काम करने वाले कार्यकर्ता को टिकट दिया जाएगा।

प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ का ऐलान, 9 अगस्त को भंग होगी पाकिस्तान की नेशनल असेंबली

इस्लामाबाद, एजेंसी।
पाकिस्तान के प्रधान मंत्री शाहबाज शरीफ ने गुरुवार को 9 अगस्त को नेशनल असेंबली को भंग करने की घोषणा की। यह निर्णय संसद के सदस्यों के सम्मान में रात्रिभोज में संसदीय नेताओं से मुलाकात के बाद आया, जहां देश की राजनीतिक स्थिति पर गहन चर्चा की गई, द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की सूचना दी। बैठक के दौरान, प्रधान मंत्री शहबाज़ ने उनसे इनपुट मांगा और कार्यवाहक प्रधान मंत्री और कार्यवाहक सेटअप की व्यवस्था पर चर्चा की। 9 अगस्त को प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ नेशनल असेंबली को भंग करने के लिए राष्ट्रपति को औपचारिक सलाह भेजेंगे. संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार, विघटन को प्रभावी बनाने के लिए राष्ट्रपति को 48 घंटों के भीतर सलाह पर हस्ताक्षर करना होगा। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार, यदि किसी भी कारण से राष्ट्रपति सलाह पर हस्ताक्षर नहीं करते हैं, तो विधानसभा स्वचालित रूप से भंग हो जाएगी। इसके अलावा, प्रधान मंत्री शहबाज़ ने आश्वासन दिया कि विपक्ष के साथ तीन दिनों के परामर्श के बाद, वह कार्यवाहक प्रधान मंत्री का नाम राष्ट्रपति को सौंपेंगे। द एक्सप्रेस ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार, हालांकि, अगर कोई समझौता नहीं होता है, तो पाकिस्तान चुनाव आयोग हस्तक्षेप करेगा और प्रस्तावित नामों में से कार्यवाहक प्रधान

मंत्री पद के लिए एक उम्मीदवार को नामित करेगा। विशेष रूप से, उन्होंने देश की प्रगति के लिए आर्थिक स्थिरता के महत्व को रेखांकित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के साथ सफल वार्ता पर प्रकाश डाला। डॉन की रिपोर्ट के मुताबिक, इस हफ्ते की शुरुआत में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा था कि पाकिस्तान में आगामी चुनाव 2023 की डिजिटल जनगणना के आधार पर होंगे। डॉन ने शरीफ के हवाले से कहा कि प्रधानमंत्री, जिनकी सरकार द्वारा इस अगस्त में देश की बागडोर एक कार्यवाहक को सौंपने की उम्मीद है, ने आज न्यूज शो फैसला आप का पर एक रिकॉर्डेड साक्षात्कार के दौरान यह बात साझा की, जो मंगलवार को प्रसारित हुआ था। हमें नई जनगणना के आधार पर चुनाव कराने होंगे... जब जनगणना की जाती है, तो [चुनाव] उसके आधार पर होने चाहिए, जब तक कि कोई ऐसी बाधा न हो जिसे दूर नहीं किया जा सके। लेकिन मुझे [ऐसी कोई बाधा] नहीं दिखती। शरीफ ने आगे कहा कि जनगणना के नतीजे फाइनल होते ही सीसीआई को भेज दिए जाएंगे। डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, विशेष रूप से, पीएम शरीफ का बयान उनके मंत्रियों के पिछले दावों से विचलन है, जिन्होंने कहा था कि आगामी चुनाव 2017 की जनगणना के आधार पर होगा। जब उनसे चुनाव में किसी देरी की संभावना के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं होना चाहिए, हालांकि, उन्होंने कहा कि गेंद चुनाव आयोग के पाले में होगी। हालांकि, इस फैसले पर मुत्ताहिदा कौमी मूवमेंट-पाकिस्तान ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की, जो पाकिस्तान में गठबंधन सरकार में सत्तारूढ़ सहयोगियों में से एक है, जिसका कहना है कि कराची की आबादी को नई जनगणना में कम गिना गया है। डॉन की रिपोर्ट के अनुसार, पिछले हफ्ते, पीएम शरीफ ने पार्टी को खुश करने के लिए स्पष्ट रूप से कराची में अपने नेताओं के साथ एक बैठक की, जहां उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि इस मामले पर कोई भी निर्णय सभी गठबंधन सहयोगियों के साथ परामर्श के बाद किया जाएगा।

इंडिया बाज़ार उत्सव में टोरंटो के मेयर ने किया भांगड़ा

टोरंटो, एजेंसी।
टोरंटो की मेयर ओलिविया चाउ ने यहां जेरार्ड इंडिया बाजार में उत्तरी अमेरिका के सबसे बड़े भारतीय उत्सव में शामिल होकर भांगड़ा किया और बॉलीवुड धुनों पर नृत्य किया। उत्तरी अमेरिका के सबसे पुराने और सबसे बड़े जेरार्ड इंडिया भारतीय बाज़ार के 21वें वार्षिक उत्सव में तीन लाख से अधिक लोग एकत्रित हुए।

टोरंटो के मेयर ने उत्सव की शुरुआत की। भोजन, बॉलीवुड संगीत, नृत्य और मौज-मस्ती के दो दिवसीय कार्यक्रम में कनाडा में रहने वाले भारतीयों, पाकिस्तानियों, गोरों, अश्वेतों और अन्य जातीय समूहों को आकर्षित किया। जेरार्ड स्ट्रीट पर सात ब्लॉकों में फैला बाजार खचाखच भरा रहा। लाउडस्पीकरों से बजते बॉलीवुड संगीत के बीच मौज-मस्ती के शौकीन, भोजन, संगीत प्रेमी और खरीदार दुकानों, खाद्य स्टालों और मंचों पर उमड़ पड़े। आयोजकों ने कनाडाई लोगों को भारत के सबसे पसंदीदा खेल से परिचित कराने के लिए इस साल क्रिकेट गली भी पेश की।

इस वर्ष उत्सव में 40 प्रतिशत से अधिक गैर-भारतीय समेत तीन लाख से अधिक लोग शामिल हुए। जेरार्ड इंडिया बाज़ार के अध्यक्ष चांद कपूर ने कहा, यह हमारी संस्कृति, भोजन और खेल को हमारी अगली पीढ़ियों के साथ-साथ मुख्यधारा से परिचित कराने का एक बेहतरीन मंच बन गया है। दो दिवसीय उत्सव के दौरान विभिन्न जातीय पृष्ठभूमि के 300 से अधिक कलाकारों ने प्रदर्शन किया।

जेरार्ड इंडिया बाज़ार के कार्यकारी निदेशक तसनीम बंदूकवाला ने कहा, हमने कलाकारों की इतनी विविधता कभी नहीं देखी है। ऐसा लगता है कि हर कोई बॉलीवुड की ओर आकर्षित है। उन्होंने कहा कि बाजार में फैले सैकड़ों व्यवसायों ने जोरदार कारोबार किया। टोरंटो के अधिकारियों ने दो दिवसीय मौज-मस्ती के लिए रास्ता बनाने के लिए सड़क पर कारों का चलना बंद कर दिया।

भारतीय मूल की जज के सामने पेश हुए डोनाल्ड ट्रंप, कहा- मैं दोषी नहीं हूं चुनाव नतीजों को पलटने की कोशिश से जुड़े आरोप किए खारिज

वाशिंगटन, एजेंसी।
पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने नवंबर 2020 का चुनाव हारने के बावजूद सत्ता में बने रहने के लिए आपराधिक साजिश रचने के आरोप में एक भारतीय-अमेरिकी न्यायाधीश के समक्ष खुद को निर्दोष बताया। 4 महीने में यह ट्रम्प की तीसरी अदालत में उपस्थिति थी।

ट्रम्प, जो रिपब्लिकन पार्टी से 2024 का राष्ट्रपति चुनाव लड़ना चाह रहे हैं,उन्होंने मजिस्ट्रेट न्यायाधीश मोक्सिला ए उपाध्याय के समक्ष दोषी न होने की याचिका दायर की, जब वह कैपिटल से कुछ ही दूरी पर स्थित अदालत में उपस्थित हुए, तो इस दौरान उनके नाराज समर्थकों ने अमेरिका पर हमला किया था।

गहरे नीले रंग का सूट और लाल टाई पहने 77 वर्षीय ट्रम्प, न्यू जर्सी के बेडमिंस्टर से उड़ान भरने के बाद एक मोटरसाइकिल में कोर्टहाउस पहुंचे। पूर्व राष्ट्रपति को विशेष वकील जैक स्मिथ के अभियोग में उल्लिखित चार गुंडागर्दी के मामलों में गिरफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया- संयुक्त राज्य अमेरिका को धोखा देने की साजिश, आधिकारिक कार्यवाही में बाधा डालने की साजिश, आधिकारिक कार्यवाही में बाधा डालने का प्रयास, और अधिकारों के खिलाफ साजिश का आरोप है। स्मिथ द्वारा इस सप्ताह की शुरुआत में वाशिंगटन, डीसी में 45

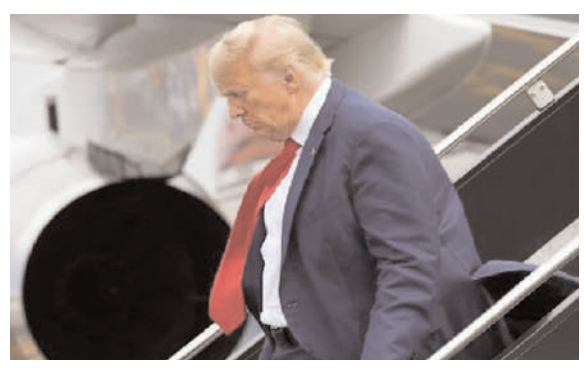

पेज का अभियोग दायर किया गया था, जिन्होंने अमेरिकी न्याय विभाग की ओर से पूर्व राष्ट्रपति की जांच का नेतृत्व किया था। जहां तक 1 से 4 तक गिनती का सवाल है, श्रीमान ट्रम्प कैसे निवेदन करते हैं जज उपाध्याय ने कोर्ट रूम में पूर्व राष्ट्रपति से पूछा- अपने वकीलों के साथ मौजूद ट्रंप ने कहा, मैं दोषी नहीं हूं। पूर्व राष्ट्रपति ने सुनवाई के दौरान बहुत कम बात की, अपने नाम और उम्र के बारे में सवालों के जवाब दिए। जब उनसे पूछा गया कि क्या वह समझते हैं कि उनके शब्दों का इस्तेमाल उनके खिलाफ किया जा सकता है, तो उन्होंने सकारात्मक जवाब दिया। जज ने ट्रंप से कहा कि उन्हें रिहा कर दिया जाएगा लेकिन कुछ शर्तें हैं जिनका उन्हें पालन करना होगा और जरूरत पड़ने पर अदालत में पेश होना होगा। ट्रम्प की अगली निर्धारित उपस्थिति 28 अगस्त को अमेरिकी जिला न्यायाधीश तान्या चुटकन के समक्ष है। लेकिन उनके पास व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं होने का विकल्प है.अभियोग में लिखा है कि हारने के बावजूद, प्रतिवादी सत्ता में बने रहने के लिए दृढ़ था। इसलिए 3 नवंबर, 2020 को चुनाव के दिन के बाद दो महीने से अधिक समय तक, प्रतिवादी ने झूठ फैलाया कि चुनाव में परिणाम-निर्धारक धोखाधड़ी हुई थी और वह वास्तव में जीत गया था ये दावे झूठे थे, और प्रतिवादी जानता था कि वे झूठे थे। यह अभियोग कोलंबिया जिले में नागरिकों की एक ग्रैंड जूरी द्वारा जारी किया गया था और इसमें लगाए गए अपराधों के बारे में विस्तार से बताया गया है। इसमें यूएस कैपिटल में 6 जनवरी, 2021 को हुए दंगे के आसपास की घटनाओं की जांच शामिल है।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129